भरदुतिया

कथा संग्रह



नन्द विलास राय

भरदुतिया

नन्द विलास राय

पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

ISBN : 978-93-88421-83-6

दाम : ₹250/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल) पिन : 847452
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल)

BHARDUTIYA
Collection of Short Stories by Sh. Nand Vilas Roy.

परम पूज्य पिता स्व. बच्चा राय एवम् पूज्यनीया माता
स्व. दुर्गा देवीक स्मृतिमे

अग्रज श्री नन्द कुमार राय
भातीज द्वय- वीरेन्द्र, धीरेन्द्र
पुत्री द्वय- किरण आ वन्दनाकेँ
ससिनेह

संगे
समस्त मैथिलीभाषीकेँ
सादर समर्पित

दू शब्द

एकैसम शताब्दी आरम्भ होइते मैथिली साहित्य जगतमे बहुत रास रचनाकार सभ सोझाँ आबए लगला। नव-नव मशीनकेँ अगुएने जहिना नव-नव काज सभ लोकक सोझमे देख पड़ल, काजक प्रति आकर्षण बढ़ल तहिना नव-नव रचनाकार सभ सेहो मिथिलाक विषय-वस्तुपर अपन-अपन नव दृष्टि लऽ रचनारत् भेला। अनेको रचनाकार सभ सोझाँ आबए लगला, मिडिया अगुऐने बहुत रास असहज सहज भेल। गाममे रहैबला रचनाकार सभ सेहो आमने-सामने हुअ लगला।

एक सुच्चा ग्रामीण साहित्यकार, गाममे रहि कऽ गामक बात रचनिहार, गामक जिनगीकेँ लगसँ देख-भोगि कऽ कथारूपमे अपन खुलेआम विचार प्रस्तुत केनिहार कथाकार श्री नन्द विलास रायजी सेहो मैथिली साहित्याकाशमे अपन उपस्थिति अपना बले दर्ज करौलैन। हिनक उपस्थितिक खुशी सभसँ पहिने 'विदेह' ई पत्रिकाक सम्पादक मण्डलकेँ भेल जे हिनक रचना (कथा, कविता, एकांकी, निवन्ध, रिपोटार्ज इत्यादि) सभकेँ प्रकाशित करए लगला।

'अनवरत लिखब' कोनो लेखक लेल विचारणीय विषय होइत अछि। तहूमे समसामयिक विषयक लेखन, माने आजुक खगता-बेगरता, नीक-बेजाए, रहन-सहन आ दोहनकेँ जँ आजुक परिपेक्ष्यमे कियो रचनाकार साहित्यक गद्य विधामे लिपिवद्ध करैथ, ओ तँ आरो विषद विचारणीय होइते अछि। जे, कोनो भाषा-साहित्य लेल अगुआएल डेगक महत्वपूर्ण पहिचान होइत अछि। अगुआएल मैथिली साहित्यकारक बीच

श्री नन्द विलास रायजीक नाओं श्रद्धासँ लेल जाइत अछि।

'भरदुतिया' कथा संग्रहमे 09 टा कथा आएल अछि। संग्रहक सभ कथा 'सगर राति दीप जरय'क मंचपर कथाकार स्वयं पाठ केने छैथ। हिनकर सभ कथा चर्चित-प्रशंसित भेल अछि।

नन्द विलास रायजीक जहिना आकर्षक लेखन छैन तहिना कथाक वाचन सेहो। एकर कारण अछि जे जैठामक चीजकेँ रायजी जइ तरहेँ लिखै छैथ तहीठाम रहिकऽ तहिना जीवनो-यापन करैत आबि रहला हेन। कोनो रचनाकारक लेल ई सभसँ पैघ गुण होइते अछि। तँए श्री नन्द विलास रायजी धन्यवादक पात्र छैथ, विचारणीय कथाकार छैथ तथा मंसा-वाचा-कर्मणाक अधारपर गिनल-चुनल साहित्यकारक बीचक साहित्यकार छैथ।

उमेश मण्डल

निर्मली

19 नवम्बर 2018

कथाक सत्तैर-

पोथीक मादे

मिथिलांचलमे भाँति-भाँतिक पाबैन-तिहार मनौल जाइत अछि। जेना आर्द्रा, राखी, चौरचन, जितिया, कोजगरा, दसमी, दियावती, सुकराती, भरदुतिया, छठि, सामा-चकेबा इत्यादि इत्यादि। सभ पाबैनक अपन अलग-अलग महत् अछि। किछु पाबैनमे देवी-देवताक पूजा-अर्चना-अराधना कएल जाइत अछि तँ किछु पाबैन सिनेहक पाबैन छी। जेना- राखी, भरदुतिया आ सामा-चकेबा। राखी पाबैन मिथिलांचलक अलावे आनो-आनठाम मनौल जाइत अछि जेतए कि हिन्दु संस्कृति अछि। राखी पाबैनमे बहिन भाइक घर जा भाइक कलाइपर राखी बान्हैत अछि। भाइक माथमे सेनूरक टिक्का सेहो लगबैत अछि। बहिन अपन भाइक लेल दीर्घ जीवनक कामना करैत अछि जखन कि भाय बहिनकेँ जीवन भरिक रक्षाक वचन दैत अछि। जेतए अपन भाइक ओइठाम बहिन नै पहुँच पबैए तँ कोनो माध्यमसँ बहिन अपन भाए लेल राखी पठा दइए।

सामा-चकेबा आ भरदुतिया भाए-बहिनक सिनेहक लोक पाबैन छी। सामा-चकेबा पाबैनमे बहिन गीत गाबि कऽ भाइक भावी जीवनक कामना करैत अछि।

भरदुतिया पाबैन कातिक मासक इजोरिया परवक दुतिया दिन मनौल जाइत अछि। बहिन सुति उठि कऽ भोरे गोबरसँ आँगन नीपैए। फेर पीठार पीसि ओइ पीठारसँ अँगनामे अरिपन बनबैत अछि। पान,

मखान, सुपारी आ कुमहरक फूल ओरिया कऽ रखैत अछि। सभ भाय अपन-अपन बहिनक ऐठाम भरदुतियाक नौत पूरए जाइत अछि। बहिन भायकेँ नौत लऽ नीक-नीक खेनाइ खुआबैत अछि। बहिनक ओइठाम भाय सनेस लऽ गेनाइ नै बिसरैए। जिनका जे सकरता रहल तइ मुताबिक सनेस लऽ कऽ बहिन ओतए जाइत अछि।

हमर ई चारिम पोथी छी। ऐसँ पहिने 'सखारी-पेटारी, 'मरजादक भोज' कथा संग्रह आ 'छठिक डाला'- काव्य संग्रह, मिथिलाक संस्कृतिक नाओंपर प्रकाशित अछि। प्रस्तुत कथा संग्रहक नाओं सेहो मिथिलाक संस्कृति- लोक पाबैन- भरदुतियाक नाओंपर रखलौं हेन।

पोथी लिखलाक पछाति प्रकाशन हेतु आर्थिक संकट ठाढ़ भेल। हम अपन अप्पन बातमे कहने छी जे अपने हम एकटा साधारण किसान छी। मिथिलांचलक किसानक आइ की दशा अछि ई किनकोसँ छिपल नहि अछि। तइमे हम एकटा अदना किसान छी। कहुना कऽ अपन गुजर कऽ लइ छी हमरा लेल यएह पैघ बात भेल। तखन पोथी प्रकाशन केना हएत। मुदा हम अभारी छिऐन डॉ. सुरेन्द्र कुमार सिंहजीक जे एस.एन.एस. ग्लोवल सेमीनरी विद्यालय- निर्मली (सुपौल)क निदेशक छैथ। सुरेन्द्र बाबू साहित्य प्रेमी लोक छथिए। हिनके द्वारा 'कौशकी सम्मान' मैथिली साहित्यमे देब शुरू भेल अछि। हमर ऐ पोथीक (एक साए प्रति) प्रकाशनक सम्पूर्ण आर्थिक खर्च लेल डॉ. सुरेन्द्र कुमार सिंहजी उदार दिलसँ तैयार भेला आ पोथी प्रकाशित भेल। हम हुनका कोन शब्दसँ धन्यवाद दिऐन से शब्द हमरा शब्दकोषमे सहजे नहि भेट रहल अछि। संगे, पल्लवी प्रकाशनक सहयोगकेँ सेहो चर्च करब आवश्यक बुझि रहल छी। पोथी छपैसँ पूर्वक सभ कार्य- टंकन, शब्द संजोजन, आवरण इत्यादि सदैव दिलसँ करैत आबि रहल अछि। तँए हेतु पल्लवी प्रकाशनक सभ कार्यकर्त्ताकेँ धन्यवाद।

तैसंग हमर किछु एहेन शुभचिन्तक सभ छैथ जिनका मोन पाड़ब

सेहो आवश्यक अछि। जेना- श्री नारायण यादव, श्री वैजनाथ राय (फौजी), श्री विजय कुमार राय- (वहुरानी जेनरल स्टोर्स बहेड़ी), श्री उमेश पासवान तथा निर्मली महाविद्यालयक पूर्व प्राचार्य डॉ. प्रो. विमल कुमार रायजी हमरा मनोबलकेँ सदैत बढ़बैत रहला हेन, हिनका सबहक प्रति सेहो हृदयसँ आभार..।

अप्पन बात

मिथिलांचलक मधुबनी जिलामे भपटियाही गामक एकटा किसान परिवारमे हमर जनम भेल। पिताजी स्व. बच्चा राय मेहनती आ स्वाभिमानी छला। तीन भाँइक भैयारीमे हम सभसँ छोट छी। माए-बाबू बेसी पढ़ल तँ नै रहैथ मुदा नाम-गाम लिखब-पढ़ब अबैत रहैन। हमरा पढ़बैमे माए-बाबूक संग भैयारी सबहक सेहो सहयोग रहल।

नरहिया हाई स्कूलसँ मैट्रिक केला पछाइत निर्मली कौलेज निर्मलीमे नाओं लिखेलौं। किछु दिन निर्मली बजारमे एकटा भाड़ाक कोठरीमे रहलौं पछाइत श्री रामजी प्रसाद मण्डलक घरमे रहए लगलौं। अपनो पढ़ी आ हुनको बालक सभकेँ पढ़ाबी। रामजी प्रसाद मण्डलजी निर्मली कौलेजमे पुस्तकालयाध्यक्ष पदपर नौकरी करै छला। जइसँ रंग-बिरंगक पोथीसँ लगलगाउ रहल। जइसँ छोट-क्षीण कविता हिन्दी भाषामे लिखए लागलौं। निर्मली कौलेजसँ बी.एस-सी केला पछाइत घोघरडीहा आइ.टी.आइ.सँ टर्नर ट्रेडमे प्रशिक्षण सेहो प्राप्त केलौं।

जखन इण्टरमे पढ़ैत रही तहिए बिआह भऽ गेल। दू बरख पछाइत दुरागमन भेल। पत्नी तरही (नेपाल)सँ आबि भपटियाहीमे रहए लगली। बी.एस-सी आ आइ.टी.आइ. केला पछाइत सरकारी नौकरी लेल प्रयास करए लगलौं। वयस्क एवं अनौपचारिक शिक्षा परियोजना लौकहीमे अंशकालिन पर्यवेक्षक पदपर चयन भेल। मात्र तीन साए टाका मानदेय भेटै छल। तीन सत्र ओ काज केलौं। आशा रहए जे सरकार हमरा सभकेँ नियमित कऽ देत अथवा दोसर कोनो विभागमे देत। मुदा से

किछु ने भेल।

पर्यवेक्षक पदसँ हटला पछाइत संस्कृत उच्च विद्यालय धमौरामे विज्ञान शिक्षक पदपर काजरत् भेलौं। पाँच बरख धरि ओतए रहलौं। काज केलौं। विद्यालयकेँ प्रस्वीकृतिओ भेटल मुदा शिक्षक आ कर्मचारीकेँ वेतनक भुगतान नै भेल। थाकि-हारि हम सभ वर्ग संचालन बन्न कऽ देलौं। भुखे भजन न होइ गोपाला। आखिर केतेक दिन पेटमे जुन्ना बान्हि काज करितौं।

हमर ससुर महराज नेपालक सांसद भेला। हम हुनका लग नेपाल गेलौं। सोचने रही ओतै कोनो व्यवसाय-वेपार करब। कऽ तँ सकैत रही गामोमे मुदा पूजी नै रहने नेपाल गेलौं। ससुरपर आश समीचिन बुझाइत रहए। तीन बरख धरि नेपालमे रहलौं। सासुरमे बेसी दिन रहैबलाकेँ कोन-कोन अपमान सहए पड़ै छै से हमरो सहए पड़ल। मुदा रही लोभमे फँसल तँए नै गुदानिऐ। भेटल तँ किछु नै मुदा तीन बर्खक समय बेरबाद भऽ गेल। जेतेक दिन नेपालमे रहलौं ओतेक दिन हमरा जीवनक कारी अध्यायक रूपमे अखनो बुझना जाइत अछि।

नेपालसँ गाम एला पछाइत, गामे धेलौं। माए-बाबूजी वृद्ध सेहो भऽ जाइ गेल छला। हिनका सभकेँ छोड़ि दिल्लीओ-पंजाव गेनाइ उचित नै बुझि पबी। तीन बरख पछाइत माए-बाबू एक्के सालक अन्तरालपर स्वर्गवास भऽ गेला। स्थिति आरो बिगड़ि गेल। कोनो अवलम्ब नै देख आने-आन जकाँ दिल्ली विदा भेलौं। दिल्लीओमे रहल नै पार लगल। किएक तँ जाइते बोखार पकैड़ लेलक। डेंगूक हवा बहि गेल रहै। डरे महिने दिन पछाइत गाम चलि एलौं। पत्नीक जेबरसँ आ किछु हथपैंच लऽ नरहिया बजारमे खादक दोकान खोललौं। हलाँकि ओहो नै चलल कारण कम पूजीक चलैत जे समस्या अबै छै तही सभमे लटपटाइत बन्न भऽ गेल।

खेतीवारी सँ थोड़-थाड़ लाट गाममे रहने भऽ गेल रहए जहीपर

धियान दऽ ओकरे पकैड़ अखनो चलि रहल छी।

छात्रे जीवनसँ राजनीतिसँ लगाउ रहल अछि। जय प्रकाश बाबूक आन्दोलनमे सेहो भाग नेने छी। जखन २००१ई.मे बिहारमे पंचायत चुनाव भेल तँ हमहूँ अपना पंचायत छजनासँ पंचायत समितिक सदस्य लेल ठाढ़ भेलौं। जीतलौं। पंचायत विकास कार्यमे पाँच बरख धरि अपसियाँत रहलौं।

पहिनहियेँ कहल अछि जे विद्यार्थीए जीवनसँ किछु-किछु लिखै-पढ़ैक रूचि रहए। से मुदा हिन्दीमे लिखैत रही आ लिखि-लिखि रखैत रही। कहियो प्रकाशन लेल प्रयास नै केलौं। फुलपरास उच्च विद्यालयक स्थापनाक स्वर्ण जयन्ती समारोहमे कवि सम्मेलनक आयोजन भेल रहए। पहिल कविताक पाठ ओतइ केलौं।

१४ अप्रिल २००८ई.कैं रानीगढ़ी मेला, मझौरामे डॉक्टर अम्बेदकर जयन्तीक अवसरपर श्री जय प्रकाश मण्डल विचार गोष्ठीक आयोजन केने छला। ओही आयोजनमे उमेश मण्डलजी सँ परिचय भेल। विदेह ई पत्रिकाक सम्बन्धमे जनतब भेल। मैथिली रचना प्रकाशनक बाट देखते जेना जोश आबि गेल। तहिएसँ मैथिलीमे छी।

उमेश मण्डलजीक खबैरपर कबिलपुरक 'सगर राति दीप जरय' कथा गोष्ठीमे गेलौं। ओतए बहुतो कथाकारक अलाबे श्री गजेन्द्र ठाकुरसँ सेहो मिलन भेल। गप-सप्प भेल। प्रभावित तँ रहबे करी जे आरो प्रभावित भेलौं। वास्तवमे, आधुनिक मनुखक माने सभ्य मनुखक जे चालि-बेवहार हेबाक चाही से हुनकामे देखलौं। पहिल कथा गोष्ठी छल। पैघ-पैघ साहित्यकार सभ रहैथ। जहिना चन्द्रमाक सामने भगजोगनी रहैत तनाहियेँ हम हुनका सबहक सोझहामे छेलौं। भोरहरबामे कथा पाठक समय भेटल। कथाक शीर्षक रहए- 'जे विद्वान से बेइमान।' समीक्षक लोकैन कथापर टिप्पणी नै कऽ शीर्षकपर अड़ि गेला। ओना किछु गोरे शिल्पक तँ किछु गोरे बनाबटि तँ किछु गोरे अकारपर सेहो

किछु शब्द रखलखिन मुदा विषय-वस्तुपर सेहो नहि। बड़बढ़ियाँ, कथाक पाठक अवसरसँ जोश बढ़ल। आरो-आरो गोष्ठीमे जाए-आबए लगलौं।

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी पोथी कबिलपुरमे लोकापर्ण भेल। एक प्रति हमरो भेटल। चौथा-पचमामे पढ़ै छेलौं तँ गणीतक कुंजी देख-देख हिसाब बनाबी। तेनाहियेँ आइ कथा लिखैमे गामक जिनगी बुझाइए। एकटा गुरुक काज दऽ रहल अछि।

आइ जेतए हम ठाढ़ होबए लेल परियास कए रहलौं हेन तइमे सभसँ अहम भूमिका श्री उमेश मण्डलजीक अछि। हम 'ए-प्लस बी होल-स्क्वाइर बराबर ए-स्क्वाइर प्लस-टू-ए-बी प्लस बी-स्क्वाइर' बला लोक रही। यानी हम विज्ञानक छात्र रहलौं। साहित्यसँ हमरा दूर-दूर धरि सम्बन्ध नइ रहल अछि। मुदा उमेश मण्डलजीक संसर्गमे एलासँ आइ हम छोट-क्षीण आलेख, कथा आ कविता लिख रहल छी। प्रस्तुत पोथीक प्रकाशनमे ओ मात्र आर्थिके सहयोग नहि, अपितु मानसिक आ शारीरिक रूपसँ सेहो सहयोग केलैन। हुनका कोन शब्दसँ धैनवाद दिऐन ओ शब्द हमरा शब्द कोषमे नहि अछि।

श्री दुर्गानन्द मण्डल आ श्री राम विलास साहुजीकेँ सेहो धैनवाद दइ छिऐन किएक तँ ई दुनू बेकती पोथी पढ़ि शाब्दिक अशुद्धिकेँ दूर केलैन। तैसंग निर्मली महाविद्यालयक हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. शिव कुमार प्रसाद आ सी.एम.बी. महाविद्यालय डेबढ़, घोघरडीहाक हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. धीरेन्द्र कुमार राय सेहो हमर मनोबलकेँ बढ़बैत रहला, दुनू विद्वतजनकेँ बहुत-बहुत साधुवाद।

जहियेसँ मैथिली लिखनाइ शुरू केलौं श्री गजेन्द्र ठाकुरजी मोबाइलपर मार्गदर्शन करैत रहला अछि। हमरा सभ लेल जहिना आशाक किरण छैथ तहिना आगूओ रहता से विश्वास हृदयमे जमि गेल अछि। श्री गजेन्द्रजीकेँ कोटि-कोटि साधुवाद।

साहित्य सम्राट श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, हिनक आर्शीवादसँ आइ हमरा एकटा छोट-क्षीण कथाकार आ कविक रूपमे पहचान भेटल, हुनका शत्-शत् नमन।

पल्लवी प्रकाशनक श्रीमती पुनम मण्डलकेँ हार्दिक धैनवादक संग उज्जवल भविष्यक कामना अछि। बरमहल प्रोत्साहित करएबला साहित्यकार श्री ओम प्रकाश झा एवम् शुभेक्षु श्री रामजी प्रसाद मण्डलजीक सेहो आभारी छी। हुनका लोकैनकेँ साधुवाद।

श्रीमती आशा देवी उर्फ बेबी, प्रो. उपेन्द्र नारायण राय- व्याख्याता गणित विभाग, महिला कॉलेज बेगूसराय, डॉ. योगानन्द झा- समालोचक, श्री शम्भुनाथ मिश्र, अध्यक्ष कोसी विकास समिति, हटनी, श्री राजनन्दन लाल दास, सम्पादक कर्णामृत, श्री चन्द्र मोहन कर्ण सम्पादक देसिल वयना, श्री राजदेव मण्डल साहित्यकार, समाजसेवी श्री बिनोद कुमार साह, आपका दवाखाना- निर्मली, हिनका सबहक सिनेहकेँ सेहो नहि बिसरल जा सकैत अछि। आशा अछि जे हिनका लोकनिक सिनेह सदैत बनल रहत। अत: हिनका सभकेँ बहुत-बहुत धैनवाद।

श्रुति प्रकाशनक श्रीमती नीतू कुमारी आ श्री नागेन्द्र कुमार झाजीक सभसँ बेसी आभारी छी जे हमर पहिल पोथी- 'सखारी-पेटारी' केर प्रकाशन केलैन। हिनक उपकार हम नहि बिसरब किएक तँ ओइ पोथीक प्रकाशनक पछाइत जे हमर मनोबल बढ़ल ओ केना बिसैर सकै छी। ऐ लेल दुनू बेकतीकेँ बहुत-बहुत साधुवाद।

-नन्द विलास राय

गाम-पोस्ट- भपटियाही,

भाया- नरहिया,

जिला- मधुबनी।

मोबाइल नम्बर- 9931909671

सियानक मारि दही-चूरा

हमरा गामसँ दू-अढ़ाइ किलोमीटर दूरीपर एकटा गाम अछि मझौरा। हमरा सबहक डीलरक घर मझौरा गाममे छैन। हँ, हँ वएह डीलर जेतए मोटिया तेल आ चाउर-गहुम भेटैत अछि। डीलरेक घरक बगलमे एकटा शिक्षक छथिन त्रिलोक वर्मा। भगवानक कृपासँ पत्नियो शिक्षिका छथिन। घरोक सुखी सम्पन्न लोक छैथ। त्रिलोकजी आ हम निर्मली कौलेजमे इन्टरमे संगे पढ़ैत रही। मुदा त्रिलोकजी सतर्की ई केलैथ जे इन्टरक पढ़ाइ बिच्चेमे छोड़ि राँची जा ओतएसँ टीचर्स ट्रेनिंग कऽ लेला। बादमे बी.ए. धरि सेहो पढ़ला। तँए ओ शिक्षक छैथ। हम ट्रेनिंग नै केलौं तँए पढ़ि-लिखि कऽ बकरी चरबै छी। अखनो त्रिलोकजी जेतए-केतौ भेटै छैथ तँ कुशल-क्षेम हेबै करैए।

मार्च मासक गप छी। हम आ हमर दियादीक एकटा भैयारी-मदनजी राशन आनए डीलर ओतए गेल रही। मदन भाइ सेहो शिक्षक छैथ आ जइ विद्यालयमे त्रिलोकजीक पत्नी शिक्षिका छथिन ओही विद्यालयमे मदनो भाय छैथ। हम आ मदन भाय डीलर ओइठाम ब्रेंचपर बैसल रही, डीलर रजिष्टरमे आ कार्डमे राशनक खानापूरी कऽ रहल छला। तखने त्रिलोकजीक बेटा मदन भायकेँ बजा कऽ लऽ गेलैन। हमरा नै बजेलैथ तँए हम डीलरे ओतए बैसल रहलौं। जखन राशन लेल भऽ गेल तँ त्रिलोकजी दरबज्जा दिस देखए गेलौं जे मदन भाय की करै छैथ। हम सड़केपर सँ कहलिऐ- "मदन भाय, गामपर नै जाएब?"

मदन भाय कहलैथ-

“आउ-आउ चलै छी।”

त्रिलोकजी सेहो दरबज्जेपर बैसल रहैथ। ओ कहला-

“पाँचे मिनट आओर रूकियौ मदनजी चाह पीने अबै छैथ।”

तखने देखलिऐ जे त्रिलोकजीक बेटा दू कप चाह नेने आएल। एक कप चाह त्रिलोकजीक हाथमे देलकैन आ दोसर कप मदन भायकेँ। मुदा त्रिलोकजी हमरा चाह पीबैले आग्रह नै केलैन। हम चोट्टे डीलरक दरबज्जापर आबि ब्रेंचपर बैस गेलौं।

हम सोचए लगलौं, मदन भाय शिक्षक छैथ तँए हुनका बजा कऽ त्रिलोकजी चाह पियौलकैन आ हम साधारण किसान छी तँए हमरा बैसबाको लेल आग्रह नै केलैन। जखन कि त्रिलोकजी हमर संगीए छैथ...!

हमरा त्रिलोकजीक बेवहारक बड़ दुख भेल। हम सोचए लगलौं- एकर बदला त्रिलोकजीसँ केना लेल जाए। हम बहुत सोच-विचार केलौं।

पनरहे दिनक बाद त्रिलोकजी मदन भायकेँ खोजए हुनका दरबज्जापर गेलाह मुदा मदन भाय दुनू परानी नेपाल गेल छला। त्रिलोकजी जखन आपस भेला आ हमरापर नजैर पड़लैन तँ मोटर साइकिल रोकि कऽ मदन भाइक सम्बन्धमे पुछए लगला। हम सोचलौं आइ गर अछि, किए ने ओइ दिनक बदला सधा ली। हम बड़ आदरसँ त्रिलोकजीकेँ अपना दलानपर लऽ जा कऽ बैसौलयैन आ कहलयैन-

“मास्टर साहैब, कनेक रूकू आँगनसँ भेल अबै छी।”

आँगन जा पत्नीकेँ कहलयैन-

“कनी दू कप नीक चाह बनाऊ। बुच्ची केतए अछि?”

पत्नी इशारासँ पुबरिया घर देखा कहलैन बैस कऽ पढ़ैए। बेटी

मैट्रिकक विद्यार्थी छी। ताबए ओ लगमे आबि कहलक-

“की बाबूजी?”

एकटा पचसटकही दैत एकटा बिकाजी भुजियाक पैकेट आ एकटा नमकीन बिस्कुटक डिब्बा आनए कहलिऐ। पुन: पत्नीकेँ कहलयैन-

“जखन बुच्ची दोकानसँ भुजिया आ बिस्कुट आनि कऽ देत तँ दूटा प्लेटमे भुजिया आ बिस्कुट दऽ दरबज्जापर पठाएब।”

हम दरबज्जापर चलि गेलौं। एतए त्रिलोकजीसँ दुनियादारीक गप-सप्प करए लगलौं। कनिक्केकालक बाद हमर बेटी दूटा प्लेटमे भुजिया आ नमकीन बिस्कुट दऽ गेल। हम अपना बेटीसँ कहलिऐ-

“बुच्ची चाचाकेँ प्रणाम करहुन।”

हमर बेटी त्रिलोकजीकेँ प्रणाम कऽ आँगन चल गेल। आँगनसँ एक जग पानि आ दूटा ग्लास आनि टेबुलपर रखि गेल। हम त्रिलोकजीकेँ एकटा प्लेट बढ़बैत कहलयैन-

“लिअ मास्टर साहैब, कनेक पानि पीब लिअ। पछाइत चाह पीब।”

तैपर त्रिलोकजी बजला-

“चाह तँ गामेपर सँ पीब कऽ आएल रही।”

हम कहलयैन-

“चाहो कोनो पेटभरा चीज छी। जे एकबेर भरिपेट पी लेलौं तँ फेर ओ समयेपर पीअब।”

त्रिलोकजी किछु लजाइत प्लेट हाथमे लेलैथ आ खाए लगला।

जाबे हम दुनू गोरे भुजिया-बिस्कुट खा पानि पीलौं तैबीच बेटी एकटा ट्रेमे दू कप चाह दऽ गेल। हम ट्रेमे सँ एकटा कप चाह उठबैत त्रिलोकजी दिस बढ़बैत बजलौं-

“लिअ मास्टर साहैब, चाह पीबू।”

ओ फेर लजाइते चाह लेला। चाहक बाद हमर बेटी पान दऽ गेल। दुनू गोरे पान खेलौं। हम त्रिलोकजीसँ कहलयैन-

“मास्टर साहैब हम तँ कहब जे जलखै खा कऽ जइतौं तँ नीक होइतए।”

तैपर त्रिलोकजी बजला-

“जलखै, चाह, पान सभ भऽ गेल आब कोन जलखै हएत।”

ई कहैत ओ फटफटिया स्टार्ट कऽ चलि गेला।

तीन दिनक बाद जखन मदन भाय त्रिलोकजीकेँ भेटलखिन तँ त्रिलोकजी मदन भायकेँ सभ बात बतौलखिन आ कहलखिन-

“हम नन्दजी लग बड़ लज्जित छी। ओइ दिन अहाँकेँ डीलर ओइठामसँ बजा कऽ चाह पियेलौं मुदा नन्दजीकेँ बैसबाको लेल आग्रह नै केलिऐन। तेकरे बदला नन्दजी हमरा जलखै आ चाह-पान करा कऽ लेलैन। एकरे कहै छै ‘सियानक मारि दही-चूरा।”

❑

शब्द संख्या : 696

दहेज पाप छी

भोरका उखराहा। समय नअ बजैत। लालबाबूक दलान बेस साफ-सुथड़ा भेल रहए। चौकीपर नवका जाजीम बिछौल रहए आ नबका खोल लागल सिरमा सेहो लगौल रहए। दलानक निच्चाँमे स्नानी चौकीपर एक बाल्टीन जल आ एकटा लोटा सेहो राखल रहइ। दलानक ओसारापर पाँचटा कुर्सी सेहो राखल रहै आ दलानक भीतरमे एकटा बड़का टेबुल आ टेबुलक दुनू भाग दू-दूटा कुर्सी लागल रहइ।

लालबाबूक नजैर बेर-बेर देबालमे टाँगल घड़ीपर चलि जाइत रहैन। ओ सोचै छला- आठे बजेक नाओं चुनचुन बाबू कहने छला आ अखन नअ बजि रहल अछि। अखैन तक ओ सभ नै एला हेन, पता नहि की भऽ गेलइ। कियो दोसर लड़कीबला नै तँ उपरौंझ कऽ देलक...।

लालबाबू ई सभ सोचिते छला कि एकटा अपाची मोटर साइकिल आबि दलानक आगाँमे रूकल। ओइ मोटर साइकिलसँ चुनचुन बाबू आ एक गोरे आरो उतरला।

लालबाबू बजला-

“आएल जाऊ, आएल जाऊ, हमरा तँ चिन्ता भऽ गेल रहए जे एतेक देरी किएक भऽ गेलैन।”

तैपर चुनचुन बाबू हाथ जोड़ैत बजला-

“नमस्कार..!

लालबाबू, नमस्कारक जबाब दैत बजला-

"नमस्कार!"

चुनचुन बाबू अपन संगबे दिस इशारा करैत कहलखिन-

"ई हमर मित्र छैथ, गोपी बाबू। उ. वि. बाबूबरहीसँ सेवा निवृत प्रधानाध्यापक, हिनको घर मौआहीए छैन।"

लालबाबू गोपी बाबूकेँ हाथ जोड़ैत बजला-

"अहो भाग्य! नमस्कार-नमस्कार..!"

गोपी बाबू बजला-

"नमस्कार।"

लालबाबू बजला-

"होउ, पएर-हाथ धोइ जाइ जाऊ।"

दुनू गोरे हाथ-पएर धो कऽ कुर्सीपर बैसला। चुनचुन बाबू बजला-

"किए देरी भऽ गेल से नै बुझलिऐ।"

तैपर लालबाबू बजला-

"कहब तखन ने बुझब। हमरा तँ होइत रहए जे गाड़ी नै तँ रस्तामे खराप भऽ गेलैन।"

चुनचुन बाबू बजला-

"की पुछै छी। तंग भऽ गेलौं हेन। एकटा ने एकटा बरतुहार दरबज्जापर अबिते रहै छैथ। आजुके गप लिअ, ठीक साढ़े सात बजे विदा होइले गाड़ी निकाललौं कि नेहराबला एकटा बुलेट मोटर साइकिलसँ आबि गेला। कुटमैती केनाइ तँ बादक बात भेल मुदा जँ दरबज्जापर कियो जाति-कुटुम आबि जेता तँ हुनकर स्वागत-बात नै करबैन सेहो केहेन हएत। तहूमे अपना सभ मिथिलावासी छी। तँए देरी भऽ गेल।"

ई गप-सप्प होइते रहए तखने लालबाबूक भातीज रोहित दूटा प्लेटमे भुजलाहा काजू, किसमिस, मनक्का आ नुनगर बिस्कुट अभ्यागत-ले लऽ कऽ आएल। लालबाबू आग्रहपर तीनू गोरे दलानक भीतर जा कऽ बैसला। रोहित दुनू प्लेट दऽ पानि आनए अँगना चल गेल। लालबाबू टेबुलपर सँ प्लेट उठा चुनचुन बाबू आ गोपी बाबूक हाथमे दैत बजला-

"लेल जाए, कनेक पानि पीब लेल जाए।"

रोहित दूटा गिलास आ एक जग पानि टेबुलपर रखि गेल। जाबे दुनू गोरे यानि चुनचुन बाबू आ गोपी बाबू काजू-किसमिस खेलैथ ताबेमे रोहित तीन कप कॉफी लऽ कऽ आबि गेल। कॉफी पीलाक दसे-पनरह मिनटक पछाइत फलक प्लेट आएल जइमे सेब, समतोला, अनारक दाना, अंगूर आ पँच-पँच छीमी मालभोग केरा रहए। फलहारक बाद मिठाइ आ नमकीनक प्लेट नेने रोहित पहुँचल। प्लेट देख चुनचुन बाबू बजला-

"फलेसँ तँ पेट भरि गेल आब मिठाइ कोन पेटमे खाएब।"

तैपर लालबाबू बजला-

"अहूँ हद करै छी, फलोसँ केतौ पेट भरलै हें। लाबह हौ रोहित, मिठाइ आ नमकीनबला प्लेट दहुन सबहक हाथमे।"

रोहित लालबाबू आ गोपी बाबूकेँ आगाँ मिठाइ आ नमकीनबला प्लेट रखि देलक। मिठाइमे अमूलक रसभरी, काजूक वर्फी, शुद्ध खोआक पेरा, नारियलक लड्डू आ नमकीनमे विकानेरी भुजिया छल। नाश्ताक बाद छाल्ही देल चाह तीनू गोरे पीलैन। चाह पीला पछाइत चुनचुन बाबू बजला-

"आब कन्याकेँ बजौल जाए। किएक तँ हमरा लोकैनकेँ आपस गामो जेबाक अछि।"

तैपर लालबाबू बजला-

"किएक, ऐठाम घर नै छै की जे एतेक औगुताइ छी।"

चुनचुन बाबू बजला-

"से तँ छैहे। जँ कुटमैती भऽ जाएत तँ केतेको दिन रहब।"

लालबाबू बजला-

"जँ कुटमैती करऽ चाहब तँ किएक ने हएत।"

चुनचुन बाबू-

"दस कोससँ जे एतेक हरान भऽ कऽ एलौं हेन से तँ कुटमैतीए करए लेल ने, आकि अहाँक गाम देखए।"

ई गप होइते रहए कि वीणा एकटा तश्तरीमे पान, सुपारी, इलायची, जर्दा आ तुलसी पत्ती लऽ एली। ओ तश्तरी टेबुलपर रखि सभकेँ पएर छुबि गोड़ लगली। गोड़ लगलाक बाद सबहक आगाँ पानक तश्तरी बढ़ौली। सभ गोरे पान-सुपारी इलायची खाइ गेला। वीणाकेँ एकटा कुर्सीपर बैसौल गेल। चुनचुन बाबू अपन मित्र गोपी बाबू दिस तकला। गोपी बाबू चुनचुन बाबूक इशारा समैझ गेला।

गोपी बाबू वीणासँ पुछलखिन-

"बुच्ची अहाँक की संज्ञा छी?"

वीणा बजली-

"वीणा।"

गोपीबाबू-

"बाबूजीक नाओं?"

वीणा-

"श्री लालबाबू राय।"

गोपी बाबू-

"कोन क्लासमे पढ़ै छी?"

वीणा-

"बी.ए. फाइनलमे।"

गोपी बाबू-

"कोन विषयसँ आनर्स कऽ रहल छी?"

वीणा-

"गृह विज्ञान विषयसँ।"

गोपी बाबू, चुनचुन बाबू दिस ताकए लगला। चुनचुन बाबू वीणासँ कहलखिन-

"जाऊ बुच्ची। अहाँ आँगन जाऊ।"

वीणा उठि कऽ आँगन चल गेली। तैबीच चुनचुन बाबू बजला-

"लड़की हमरा पसन्द अछि। लड़की देखबा, सुनबामे सुन्नैर आ सुशील अछि।"

तैपर गोपी बाबू बजला-

"एकरा के काटत।"

लालबाबू पुछलखिन-

"तखन आगाँ?"

गोपी बाबू बजला-

"देखियौ मंगरौनीबला बीस टका लाख नगद, एकटा बुलेट मोटर साइकिल आ पाँच भरि सोन दइले तैयार छला। मुदा लड़कीक आँखि कुइर छेलै तँए कुटमैती नै भेलइ।"

चुनचुन बाबू बजला-

"यौ, विवेककेँ इंजीनियर बनेबामे हमर बारह लाख टका खर्च भेल

अछि। अखन ओ रेलबेमे इंजीनियर अछि आ आइ.ए.एस.क तैयारी सेहो कऽ रहल अछि। पिलखबाड़बला पच्चीस लाख टाका नगद, एकटा अपाची गाड़ी आ सात भरि सोनाक अलाबे फ्रिज, कूलर, गोदरेज, वासिंग मशीन, टी.भी. सभ दइ लेल तैयार छला मुदा लड़कीक कद छोट छेलइ। तँए हमरा लड़की पसिन नै भेल।”

गोपी बाबू आ चुनचुन बाबूक बात सुनि लालबाबू सोचमे पड़ि गेला। ओ सोचए लगला जे ई सभ कहै छथिन तइ हिसाबे तँ कमतीमे तीस लाख टकासँ ऊपरे खर्च हएत, मुदा अपना तँ दसो लाखक सकरता नइ अछि।

लालबाबूकेँ चुप देख गोपी बाबू बजला-

“आब अहूँ तँ किछ बजियौ। एना चुप रहलासँ काज चलत?”

तैपर लालबाबू बजला-

“यौ मास्टर साहेब, चुनचुन बाबूकेँ बुझले छैन जे हम साधारण किसान छी। चटिया सभकेँ टीशन सेहो पढ़बैत छी। बेटा हमर एकटा छोट-क्षीण दवाइ देकान चलबैत अछि। हमरा तँ दसो लाखक सकरता नै अछि तँए चुप छी।”

चुनचुन बाबू बजला-

“तखन कुटमैती केना हएत। जँ इंजीनियर लड़कासँ बेटीक बिआह करबै तहूमे सरकारी जॉवबला, तँ तीस लाखसँ ऊपरे खर्च करए पड़त।”

लालबाबू बजला-

“यौ सरकार, हम दस लाखसँ बेसी खर्च करबामे अक्षम छी। अपने लोकैन जे हमरा दरबज्जापर एलौं तइले अपने लोकैनकेँ धैनवाद।”

चुनचुन बाबू बजला-

“हम तीन दिनक समय दइ छी, फोन नम्बर लऽ लिअ। अपन सभ

परिवार विचारि लेब। जँ विचार भऽ जाएत तखन हमरा फोन कऽ देब। अहाँक कन्या सुन्नैर आ सुशील अछि तँए तीन दिन समय दऽ रहल छी, नहि तँ हमरा बेटापर बरतुहारक लाइन लागल अछि।"

ई कहि ओ फोन नम्बर लिखबए लगलखिन मुदा लालबाबू अनमनस्क भावसँ फोन नम्बर लिखि लेला।

वरतुहार सभ गेला। लालबाबू उदास भऽ गेला। ओ खेनाइयो ने खेलैन। ऐगला दिन भोरमे लालबाबूक बेटाक संगी विनय आएल। विनय निर्मली बजारमे मोबाइल रिपेयरिंगक दोकान खोलने अछि।

लालबाबूक मुँहक उदासी देख विनय पुछलकैन-

"काका, मोन बड़ खसल देखै छी। की बात छिऐ। काल्हि जे वीणा बहिनकेँ देखए बरतुहार सभ आएल छला से की भेल।"

लालबाबू सभ बात जे पैछला दिन चुनचुन बाबूक संगे भेल रहैन, विनयकेँ कहलखिन।

तैपर विनय बाजल-

"अँइ यौ काका, ओइ बरतुहार सभकेँ ई नै बुझल छैन जे दहेज लेब-देब कानूनी अपराध छी। अखुनका जे नीतीशजीक सरकार अछि ओ तँ ऐ कानूनकेँ कड़ाइसँ पालन करबा रहल अछि। देखलिऐ नहि जे बाल-विवाह आ दहेजप्रथाक उन्मूलन हेतु 21 जनवरीकेँ केहेन मानव श्रृंखला बनल छेलइ।"

लालबाबू बजला-

"हौ बाउ, ई सभ देखाबटी बात छी। एकटा बात कहह ई जे 21 जनवरीकेँ मानव श्रृंखला बनल तइसँ की दहेज लेनाइ-देनाइ रूकि गेल आकि रूकि जाएत। देखने छेलहक किने जे पैछला साल दारू बन्दीपर केहेन मानव श्रृंखला बनल रहइ, तँए की दारू बन्न भऽ गेल? सरकार दारू बेचनाइ आ पीनाइपर प्रतिबन्ध लगौलक मुदा बनबैबला बनैबते अछि,

बेचैबला बेचते अछि आ पीबैबला पीबते अछि। हँ, आब ने खुल्लम-खुल्ला बिक्रीए होइए आ ने लोक खुल्लम-खुल्ला पीबे करैए। चोरा-नुका कऽ बिक्री होइए आ चोरा-नुका कऽ लोक पीबैए।"

विनय बाजल-

"पेपरमे नै देखै छिऐ केतेक पीनिहार आ बेचनिहार जेल जाइत अछि। तेनाहिये दहेजो लेनिहार आ देनिहार जेल जाएत।"

लालबाबू बजला-

"हौ कहाँ कोनो दहेज लेबए-बला जेल गेल हेन। टुनटुन बाबूक बेटाक बिआहमे एकटा स्कार्पिओ गाड़ी, दस लाख टका नगद, फ्रिज, गोदरेजक अलाबे कनियाँक सभ जेबर लड़कियेबला देलकैन, कहाँ किछु भेलइ।"

विनय बाजल-

"यौ काका, जखन कियो प्रशासन ओतए शिकायत करत तखन ने कोनो कार्रवाई हएत, नहि तँ की हएत?"

लालबाबू बजला-

"प्रशासन ओतए जे लोक शिकायत करत तइले पुख्ता सबूतक जरूरत हेतै, तइमे शिकायत केनिहारकेँ बेसी फिरीशानी छइ। लोक बेटीक बिआह करत आकि केश-फौदारी लड़त। केहेन भ्रष्ट शासन बेवस्था अछि से नहि देखै छहक। एकटा गप आओर कहै छिअ। हमरा मामा गाममे एकटा पंचायत सेवक अपना बेटीक बिआह केने रहए, तेहेन भव्य पण्डाल लगौने रहए जे आन-आन गामक लोक पण्डाल देख आएल छेलइ। बी.डी.ओ, सी.ओ., एम.ओ., दरोगा आओर केतेक ने केतेक हाकिम सभ सेहो बिआहमे आएल रहैथ। खूब दारू आ मूर्गाक मासु चलल। सुनै छिऐ ओ ग्राम सेवक चारिटा पंचायतक पंचायत-सचिवक प्रभारमे अछि।"

विनय बाजल-

“से तँ ठीके कहै छिऐ काका। मुदा बेटियोबलाकेँ तँ किछ फिरीशानी उठबए पड़तै तखने ने कोनो रस्ता निकलतै। अच्छा ई कहू, मौआहीसँ जे बरतुहार आएल छला, हुनका सभकेँ लड़की पसिन भऽ गेल छेलैन मुदा दहेजक चलते कुटमैती नै भऽ रहल अछि। सएह ने?”

लालबाबू बजला-

“हँ, सएह बात अछि।”

विनय पुछलकैन-

“अच्छा ई कहू जे अहाँ मौआही वीणा बहिनक बिआह करए चाहै छी?”

लालबाबू बजला-

“के एहेन अभागल हएत जे रेलबेमे नौकरी करए बला लड़कासँ बेटीक बिआह नै करत, तहूमे इंजीनियर लड़काक बाप डिग्री कौलेजक प्रोफेसर।”

तैपर विनय बाजल-

“काका अहाँ चिन्ता जुनि करू। वीणा बहिनक बिआह ओही लड़कासँ हेतइ। हम जेना कहै छी तेना करू।”

ई कहि विनय लालबाबूकेँ किछ समझाबए लगलैन मुदा बड़ कम जोरसँ जइसँ तेसर कियो नै सुनए।

लालबाबू मौआहीबला चुनचुन बाबूकेँ फोन पर कहलखिन-

“काल्हि प्रात: आठ बजे हम आ एक गोरे आर बिआहक गप-सप्प करए मौआही आबि रहल छी।”

चुनचुन बाबू बजला-

“स्वागत अछि, आऊ। मुदा बेवस्था तीस लाखसँ ऊपरेक राखब।”

लालबाबू बजला-

“अच्छा-अच्छा ठीक छइ।”

दोसर दिन लालबाबू आ विनय मोटर साइकिलसँ ठीक सबा आठ बजे चुनचुन बाबूक दरबज्जापर पहुँच गेला। पहुँचते देरी चाह-नास्तासँ स्वागत भेलैन। गोपी बाबू सेहो रहैथ। लालबाबू विनयक परिचय करबैत कहलखिन-

“ई हमरा बेटाक संगी छैथ। यएह कहला जे लड़का योग्य आ इंप्लायड छैथ, तँए किछु बेसियो खर्च करए पड़ए तैयो कुटमैती कऽ लिअ।”

तैपर गोपीबाबू बजला-

“ठीके ने कहलैन। यौ सरकारी जॉवबला लड़का भेटब बड़ मोश्किल छइ। तहूमे रेलबेमे इंजीनियर।”

विनय चुनचुन बाबू आ गोपीबाबूकेँ हाथ जोड़ि कऽ प्रणाम केलकैन आ कहलकैन-

“दहेजपर खुलेआम बात केनाइ नीक नहि, कानून बड़ खराप छइ। तँए दलानक भीतरमे चारिये गोरेमे गप हेबा चाही।”

चुनचुन बाबू बजला-

“ठीक छइ। चलू दलानक भीतरे। भीतरेमे चारिये गोरेमे गप करब।”

विनय बाजल-

“हम कनेक लघुशंका केने अबै छी ताबेत अपने सभ दलानक भीतर बैस कऽ गप-सप्प करू।”

चुनचुन बाबू दलानक पाछाँ शौचालय देखबैत कहलखिन-

“ओही लेटरीनमे चल जाउ।”

विनय शौचालयमे जा मोबाइलमे टेपरेकर्ड ऑन कऽ सर्टक उपरका जेबीमे रखि लेलक आ पेशाब कऽ दलानक भीतर आबि गेल। विनयकेँ अबिते लालबाबू बजला-

"आबह, तोहरे दुआरे गप-सप्प बन्न छल।"

विनय कुर्सीपर बैसैत चुनचुन बाबूकेँ पुछलकैन-

"अपनेकेँ लड़की पसीन अछि किने?"

तैपर चुनचुन बाबू बजला-

"हमरा सोलहअनासँ बत्तीसअना लड़की पसिन अछि।"

गोपीबाबू बजला-

"एहेन सुन्नैर आ सुशील कन्या पसिन नै हेतैन तँ केहेन पसिन हेतैन।"

विनय पुछलकैन-

"जखन लड़की पसिन अछि तखन आगाँक बेवस्था बात की हेतइ?"

चुनचुन बाबू बजला-

"हम तँ फोनपर काल्हिए लालबाबूकेँ कहि देने रहिऐन जे कमतीमे तीस लाखसँ ऊपरे खर्च हएत।"

विनय पुछलकैन-

"तीस लाखमे केना की, से कनी फरिछा लिअ।"

चुनचुन बाबू-

"देखू, हमर बेटा रेलबेमे इंजीनियर अछि। सरकार तरफसँ ओकरा चारि चक्का गाड़ी भेटल छइ। तँए बीस लाख टका नगद, कनियाँक सभ जेबर, कमतीमे एगारह भरि सोन, एकटा अपाची मोटर साइकिल, फर्नीचर, सोफा, गोदरेजक आलमीरा, वासिंग मशीन, फ्रिज आ टी.भी.

दियौ आ बरियाती जतबेक कहबै तेतबेक आएब।"

लालबाबू बजला-

"अपनेक सभ मांग हमरा मंजूर अछि, मुदा नगदीमे पाँच लाख कम कऽ दियौ।"

चुनचुन बाबू बजला-

"पाँच लाख कि पाँच टका कम नै हएत। यौ ठाढ़ीबला पच्चीस लाख नगद आ एगारह भरि सोनाक अलाबे सभ समान दइक प्रस्ताव लऽ कऽ काल्हि आएल रहैथ, लड़कियो ए-वन छै, मुदा हम अपनेकेँ कहि देने रही तँए ठाढ़ीबलासँ गप्पो ने केलौं।"

विनय कहलकैन-

"ठीक छै, अपने लड़काकेँ बजा लियौन, औझका आठम् दिन हम सभ लड़काकेँ फलदान करब।"

गोपीबाबू पुछलकैन-

"आठम दिन कोन दिन पड़ै छइ।"

चुनचुन बाबू बजला-

"आठम दिन नअ तारीख आ सोम दिन पड़ै छइ। ठीक छै, हम रबिये दिन लड़काकेँ मंगा लेब। अहाँ सोमकेँ फलदान कऽ लेब। फलदानमे आएब केतेक गोरे?"

तैपर लालबाबू बजला-

"यौ कुटुम नारायण, हम चेल्हबासँ खैर लुटाएब नीक नै बुझै छी। तँए पाँचे गोरे आएब। अहूँ बेसी लाम-काफमे नै जाएब। हम सभ सबेरे नअ बजे तक आएब आ पाँच बजे बेरमे चल जाएब।"

गोपीबाबू बजला-

"एकदम उत्तम बात कहलिऐ।"

तैपर लालबाबू बजला-

“जखन सभ बात भइये गेल तखन हमरा सभकेँ विदा करू। बहुत इन्तजाम-बात करए पड़त।”

गोपीबाबू कहलखिन-

“से तँ ठीक्के। बेटीबलाकेँ बड़ इंतजाम करए पड़िते छइ। चलू कुटमैती नीक भेल। बेटी रानी बनि कऽ रहत।”

चुनचुन बाबू बजला-

“अच्छा खाना खा कऽ चारि बजे चल जाएब।”

तैपर विनय कहलकैन-

“नहि, हमरा सभकेँ किछ जलखै करा दिअ, हम सभ चलि जाएब।”

सएह भेल। जलखै खा दुनू गोरे यानी विनय आ लालबाबू विदा भऽ गेला।

आइ नअ मार्च छी। चुनचुन बाबूक दरबज्जापर डी.जे. बाजा मधुर स्वरमे बजि रहल अछि। दरबज्जापर चुनचुन बाबू, गोपीबाबू आ चारि-पाँच गोरे आर छथिन। कुटुम सभकेँ खाइ वास्ते दस किलो रहु माछक बेवस्थाक अलावे सुधा दूधक रसगुल्लाक ओरियान सेहो कएल गेल अछि। आँगनमे गीतहारि सभ एकाएकी पहुँच रहली हेन।

समय नअसँ साढ़े नअ बजल। घड़ी दिस ताकि चुनचुन बाबू बजला-

“नअए बजेक समय लालबाबू देने रहैथ, साढ़े नअ बजि रहल अछि मुदा कोनो पता नहि छैन। अखन धरि तँ हुनका सभकेँ पहुँच जेबाक चाहिऐन..!”

तैपर गोपी बाबू बजला-

“एक-आध घन्टाक कोनो बात नहि, सभ कियो अबिते हेता।”

गप-सप्प चलिते छल कि बाबूबरही थानाक बोलेरो गाड़ी आबि कऽ चुनचुन बाबूक दरबज्जापर रूकल। गाड़ीसँ थाना प्रभारी आ पुलिस सभ उतरिते छला कि एकटा स्कार्पिओ गाड़ी आबि कऽ सेहो ठाढ़ भेल। ओइ गाड़ीमे लिखल रहए डी.एस.पी- मधुबनी। गाड़ीसँ डी.एस.पी. साहैब उतरला, हुनका पाछाँ चारि-पाँचटा चितकबरा ड्रेस पहिरने सशस्त्र पुलिस सेहो उतरला।

चुनचुन बाबू आ गोपी बाबूकेँ किछु समझमे नहि एलैन। डी.एस.पी. साहैब दलानमे आबि कऽ पुछलखिन-

“चुनचुनजी कौन है?”

चुनचुन बाबू हाथ जोड़ैत बजला-

“सर, हमहीं छी चुनचुन राय। की सेवा कएल जाए?”

डी.एस.पी. साहैब कहलखिन-

“आपको दहेज मांगने के अपराध में गिरफ्तार किया जाता है।”

आब तँ चुनचुन बाबूकेँ काटू तँ खून नहि। गोपी बाबू भागैले रस्ता खोजए लगला। डी.एस.पी. साहैब पुछलखिन-

“गोपीजी कौन है?”

गोपी बाबू हाथ जोड़ैत कहलखिन-

“सर, हम छी गोपी।”

डी.एस.पी. साहैब कहलखिन-

“आपको भी गिरफ्तार किया जाता है।”

डी.एस.पी. साहैब थाना प्रभारीकेँ कहलखिन-

“बड़ाबाबू, इन दोनो आदमी को गिरफ्तार कर गाड़ी में बैठाइये।”

थाना प्रभारी पुलिसकेँ आदेश देलखिन-

“इन दोनो आदमी को हथकड़ी पहनाकर गाड़ी में बैठाओ।”

पुलिसक गाड़ी देख अँगनामे लाबा-फरही हुअ लगल। विवेको अँगनासँ निकैल दरबज्जापर पहुँच गेल छल। थाना प्रभारी बाबूबरहीक बात सुनि विवेक बजला-

“सर, हमर नाओं विवेक छी। हम चुनचुन बाबूक बेटा छी। गोपी बाबू हमरा पिताजीक मित्र छथिन। सर, कोन अपराधमे हमरा पिताजी आ गोपीबाबूकेँ एरेस्ट केलिऐन हेन?”

तैपर डी.एस.पी. साहैब बजला-

“आपका पिताजी आपकी शादी के लिए लड़कीबला से बीस लाख रूपैआ नगद और दस लाख का सोना तथा अन्य समान दहेज में मांगे है। लड़कीबला मुख्यमंत्री के यहाँ आवेदन दिए हैं। मुख्यमंत्री कार्यालय से एस.पी. मधुबनी को एफ.आइ.आर. दर्ज कर कठोरत्तम कार्रवाई करने के लिए वाइरलेस से आदेश दिया गया है।”

तैपर चुनचुन बाबू बजला-

“नै सर, हम दहेज नै मांगलयैन हेन। लड़कीबला झूठ-फूसक इलजाम हमरापर लगौलक हेन।”

डी.एस.पी. साहैब बैगसँ एकटा टेपरेकर्ड निकालि चालू केलखिन। चुनचुन बाबू, गोपी बाबू, लालबाबू आ विनयक बीच जे गप-सप्प भेल रहए सभ सुनाए लगल। जखन सभ बात सुनाएल भऽ गेल तखन डी.एस.पी. साहैब बजला-

“कहिये चुनचुनजी, अब क्या कहते हैं! झूठ क्यों बोल रहे थे?”

चुनचुन बाबूक बोलती बन्न भऽ गेलैन, गोपीबाबूक चेहरा दिस देखैत चुनचुन बाबूक समुच्चा देह घामसँ नहा रहल छेलैन। गोपीबाबूक मनमे बेर-बेर उठैत रहैन- केकर खेती केकर गाए, कोन पापी रोमए जाए। नाहँकमे फँसि गेलौं। आब जेल गेने बिना कोनो उपाय नै अछि। विवेक

सोचए जँ पिताजी जेल चलि जेता तँ सभ प्रतिष्ठा माटिमे मिलि जाएत। जखने लोक सभ बुझत कि कुटिचौल शुरू करत। रेलवेमे नौकरी करै छी। के कहलक नौकरियोपर ने पड़ि जाए। बिआहो करैमे दिक्कते हएत।

अँगनामे विवेकक माए जखन बुझलैन तँ ओ कानए लगली। विवेककेँ किछु फुरेबे ने करइ। आँगनमे माइक कानब सुनलक तँ आँगन गेल। माएकेँ समझौलक। माएसँ कहलक तों जुनि कान। हम डी.एस.पी साहैबसँ निहोरा करए जाइ छिऐन। तूँ असथिरसँ बैस।

विवेक दरबज्जापर आएल तँ देखलक चुनचुन बाबू आ गोपीबाबूकेँ गाड़ीमे बैसल छला। डी.एस.पी. साहैब दरोगासँ कहैत रहथिन-

“बड़ाबाबू, चलिये थानापर चलिए।”

विवेक डी.एस.पी.क आगाँ हाथ जोड़ि ठाढ़ भऽ गेल आ बाजल-

“सर, हमरा बाबूजी आ गोपीबाबूकेँ छोड़ि देल जाए। हम बिना दहेजक बिआह करैले तैयार छी।”

विवेकक विनम्रतापूर्वक निवेदन सुनि डी.एस.पी. साहैब बजला-

“ठीक है। आप अपने पिताजीकेँ साथ गाड़ी में बैठकर मधुबनी कोर्ट चलिये। मैं लड़कीबला को भी लड़की लेकर मधुबनी कोर्ट आने के लिए कहता हूँ। वहाँ आप की शादी कोर्ट में लालबाबू राय की बेटी से होगी। शादी के बाद इनलोगों के विषय में सोचा जाएगा।”

एक घन्टाक बाद लालबाबू, लालबाबूक पत्नी, विनय आ लालबाबूक बेटी वीणा एकटा बोलेरो गाड़ीमे बैस कऽ मधुबनी कोर्ट पहुँचला। कोर्टमे वीणा आ विवेकक बिआह भेल। बिआहक बाद वीणा डी.एस.पी. साहैबसँ कहलकैन-

“सर, हिनका दुनू गोरेकेँ माफ कऽ दियौन।”

लालबाबू सेहो कहलखिन-

“हँ सर, चुनचुन बाबू आ गोपी बाबूकेँ माफ कऽ दियौन। हमरा बेटीक बिआह बिना दहेजक भऽ गेल।”

तैपर डी.एस.पी. साहैब बजला-

“ठीक है, पहले आप जो कानूनी कार्रवाइ करने का आवेदन दिये हैं उसके सम्बन्ध में एक आवेदन मामला आपस लेने का दीजिये, फिर इन दोनों व्यक्तियों के विषय में सोचा जाएगा।”

सएह भेल। माने लालबाबू मामला आपस लऽ लेला। डी.एस.पी. साहैब चुनचुन बाबू आ गोपी बाबूसँ एकटा सपथ पत्र लेलखिन जइमे भविसमे फेर एहेन गलती नै करब तइ बातक जिक्र रहए। डी.एस.पी. साहैब चुनचुन बाबू आ गोपी बाबूसँ कहलखिन-

“आप लोग कान पकड़कर पाँच बार बोलिये- दहेज पाप है।”

चुनचुन बाबू आ गोपी बाबू दुनू गोरे अपन-अपन कान पकैड़ बाजए लगला-

“दहेज पाप छी। दहेज पाप छी... ।”

❑

शब्द संख्या : 2922

उपकारक उपकार

जीतन भैया बड़ मिलनसार बेकती छैथ। दोसरक उपकार-ले हरदम बेहाल रहै छैथ। किनको बेटीक बिआह रहए चाहे किनको माए-बापक श्राद्धकर्म, जीतन भैया बिनु बजौलो जा कऽ हालचाल पुछि लइ छथिन। जँ पाइ-कौरीक खगता रहल तँ ओ मदैतो करै छथिन। कियो बेराम पड़ि गेल हेन आ इलाज वास्ते लहेरियासराय डॉक्टर ओतए जाए पड़तैन तँ संगे के जेथिन तँ जीतन भैया। एतबे नहि, पाँचमासँ लऽ कऽ दसमा धरिक चटिया सभकेँ बिना एक्को टका नेने गणितक हिसाब सेहो बता दइ छथिन। बतेबो केना ने करथिन। ओ जमानाक ग्रेजुएट छैथ, तहुमे गणितसँ ऑनर्स। ओइ जमानाकेँ जइ जमानामे नागमणिक खूब चर्च रहैन। नागमणि बिहार विश्वविद्यालयक उपकुलपति बनि कऽ आएल रहैथ। अबिते परीक्षा सभमे चोरि बन्द केलैथ। केतेको विद्यार्थी बिच्चेमे परीक्षा छोड़ि देने रहैथ।

हँ, तँ गप करैत रही जीतन भैयाक। ओ पूरा समाजिक बेकती छैथ। अपन परिवारिक काजसँ बेसी समाजिक काजकेँ महत् दइ छथिन। सन्तानक नाओंपर एक्केटा बेटी छैन जे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्लीमे मैथिली विषयक विभागाध्यक्ष छथिन। गाममे अपने जीतन भैया आ सुलोचना भौजी रहै छैथ। खेत-पथार जे छैन सभ मनकूतपर लगौने छथिन। हँ दूध वास्ते एकटा देशी गाए जरूर पोसने छैथ।

एक मास पहिनुका गप छी। जीतन भैया दीनाभायकेँ लऽ इलाज करबए लहेरियासराय गेल रहैथ। कर्पूरी चौकसँ पहिने एकटा मोटर साइकिलबला जीतन भैयाकेँ धक्का मारि देलकैन जइसँ ओ गिर पड़ला। माथ फाटि गेलैन। माथसँ शोणितक टघार चलए लगलैन। ई तँ रक्ष रहल जे पुलिसक गाड़ी कर्पूरीए चौकपर लागल छेलए। एक गोरे पुलिसकेँ कहलकै जे एक आदमीकेँ मोटर साइकिलबला धक्का मारि देलकै हेन ओ आदमी सड़कपर गिर बेहोश पड़ल अछि। पुलिस आएल आ जीतन भैयाकेँ गाड़ीमे लऽ कऽ अस्पतालक आकस्मिक विभागमे लऽ जा भर्ती कऽ देलकैन। अस्पताल जाइत-जाइतमे जीतन भैयाकेँ काफी खून बहि गेलैन।

डॉ. परवीन ड्यूटीपर छला। ओ जीतन भैयाकेँ जाँच-पड़ताल करए लगलखिन। हुनका जीतन भैयाक चेहरा किछु जानल-पहचानल लगलैन। डॉ. परवीनकेँ भेलैन जे हिनका हम केतौ देखने छी, मुदा केतए से मोने ने पड़ैन। एम्हर जीतन भैयाकेँ हालत खराब भऽ गेलैन। हुनका खूनक कमी भऽ गेलैन। डॉ. परवीन जीतन भैयाक खूनक ग्रूप जँचबौलखिन तँ ए-पॉजिटिव ग्रूपक खून निकलल। ई खून अस्पतालमे उपलब्ध नै छेलइ। डॉ. परवीन जीतन भैयाक संगबे दीनाभायकेँ कहलखिन-

“हिनका खून चढ़बए पड़तैन। जल्दीसँ ए-पॉजिटिव ग्रूपक खूनक प्रवन्ध करू नहि तँ पेसेन्टक हालत बहुत खराब भऽ जाएत। अस्पतालमे ऐ ग्रूपक खून उपलब्ध नै अछि।”

दीनाभायकेँ लहेरियासरायक कोनो अनुभव नहि। ओ डॉक्टर परवीनक मुँह दिस बकर-बकर ताकए लगला। डॉ. परवीन फेर बजला-

“हमर मुँह दिस की तकै छी। जे कहलौं से जल्दी करू। नहि तँ पेसेन्टक जान बाँचब मुश्किल भऽ जाएत।”

मुदा दीनाभाय की कऽ सकितए। ओ बाजल-

“डाक्टर साहैब, हमरा किछ नै बुझल अछि। कतए खून भेटै छै, हम सेहो ने बुझै छिऐ। गोड़ लगै छी अपनेइये कोनो जोगार कऽ दियौ।”

डॉ. परवीन फेर जीतन भैयाक ब्लडप्रेसर जाँचए गेला तँ हुनका फेर भेलैन जे हिनका जरूर हम देखने छी। डॉक्टर साहैब अपना दिमागपर जोर देलखिन तँ हुनका सात-आठ बर्ख पहिलुका ट्रेनक घटना मोन पड़ि गेलैन। डॉक्टर परवीन सोचए लगला- धनि ई महामानव जे आइ हम डॉक्टर छी। नहि तँ केतए रहितौं केतए ने..। आगाँ सोचलैथ जे हमरो खूनक ग्रूप तँ ए.पॉजिटिवे छी। किए ने अपने शरीरसँ खून दऽ कऽ हिनकर जान बँचा दिऐन। हमरापर जे ऐ महामानवक एतेक पैघ उपकार छैन तेकरो बदला सधि जाएत।

डॉ. परवीन अपन सहायक डॉ. अनीलकेँ कहलखिन- ऐ दुर्घटनाबला पेसेन्टकेँ हम अपना शरीरसँ खून देब। चलू अहाँ हमरा शरीरसँ खून निकलबा कऽ ऐ पेसेन्टक शरीरमे चढ़ा दियौ।

दुनू गोरे यानी डॉ परवीन आ डॉ अनील जेतए शरीरसँ खून निकालल जाइत अछि ओतए गेला। डॉ. परवीन अपना शरीरसँ खून निकलबेलैथ। खून निकाललाक बाद डॉ. परवीनकेँ कमजोरी महसूस होमए लगलैन। तँए ओ आराम करए लगला आ डॉ. अनील खून लऽ कऽ जीतन भैयाक शरीरमे चढ़ा देलकैन। आधा घन्टाक बाद डॉ. परवीन एला। हुनका ई देख कऽ संतोख भेलैन जे आब रोगी खतरासँ बाहर अछि। हुनका भेलैन जे हमरा खूनक सदुपयोग भेल आ एक आदमीक जान बँचि गेलैन। दोसर ई जे हमरापर जे ऐ महामानवक उपकारक रूपमे एकटा पैघ कर्जा छल सेहो किछु हद तक सधि गेल।

डॉ. परवीन दिनमे तीन बेर-चारिबेर जीतन भैयाक हाल-चाल पुछए आ दबाइ-विर्रो बतबए वार्डमे अबैत रहथिन। जीतन भैयाक

इलाजमे जेतेक दबाइ लगल सभ डॉ. परवीने आनि-आनि देलखिन। जखन-जखन डॉ. परवीन जीतन भैयाकेँ देखए आबथिन, जीतन भैयाकेँ होनि जे डॉक्टर साहैबकेँ केतौ देखने छिऐन। मुदा केतए से मोने ने पड़ैन।

जइ दिन जीतन भैयाकेँ अस्पतालसँ डिसचार्य कऽ देलकैन तही दिनक गप छी। डॉ. परवीन जीतन भैयाक हाल-चाल पुछए आएल रहथिन। ओ जीतन भैयाक बेडपर बैस गेला आ जीतन भैयासँ पुछलखिन-

"सर, अपने हमरा चिन्हलिऐ?"

तैपर जीतन भैया बजला-

"डॉ. साहैब, हमरा होइए जे अपनेकेँ केतौ देखने छी। मुदा केतए से मोने ने पड़ैए।"

डॉ. परवीन बजला-

"आइसँ आठ बर्ख पहिनुका बात छी। मोन पाड़ियौ। हम तँ अहाँकेँ देखते चिन्हि गेलौं।"

जीतन भैया बजला-

"अहाँ अखन जबान-जहान छी। स्मृति शक्ति बँचल अछि। हम आब बूढ़ भेलौं साठि-एकसैठ बर्ख उमेर भऽ गेल हेन तँए स्मृति शक्ति कमजोर भऽ गेल हेन।"

डॉ. परवीन बजला-

"आइसँ आठ बर्ख पहिनुका घटना छी। मोन पाड़ियौ मनीगाछीसँ ट्रेन खुजि गेल रहए। हम दौड़ कऽ चलैत ट्रेनमे चढ़ल रही। हमरा एतक समय नै भेटल रहए जे ट्रेनक टिकट लइतौं। तँए बिनु टिकटे ट्रेनमे चढ़ि गेल रही।"

जीतन भैया बजला-

“हँ, डॉक्टर साहैब, आब हमरा सभ गप मोन पड़ि गेल।”

एकाएक सिनेमाक रिल जकाँ सभ दृश्य हुनका आँखिक आगू आबए लगलैन। हम दरभंगा जाइत रही। हम निर्मलीए-मे ट्रेनमे चढ़ल छेलौं। हमरा दरभंगा तकक टिकट छल। ट्रेन मनीगाछीसँ खुजि गेल रहए कि एकटा उन्नैस-बीस बर्खक लड़का दौड़ैत आबि कऽ कहुना चलैत ट्रेनमे चढ़ल। ओ हमरे बौगीमे आएल। घामे-पसीने नहाएल रहए। ओ हमरा सीट लग आबि कऽ खड़ा भऽ गेल। ओकर हालत देख हम कनेक खिसैक गेलौं आ ओकरा बैसा लेलिऐ। ट्रेन मनीगाछीसँ लगधक अढ़ाइ-तीन किलोमीटर आगाँ बढ़ल कि सीटी मारलक आ ट्रेनक रफ्तार कम हुअ लगल। मजिस्ट्रेट चेकिंगक हल्ला भेल। ओ लड़का कानए लगल। हम कहलिऐ की बात छैक बौआ, किएक कनै छह?

तँ ओ कहलक- काका, हमरा टिकट लेल नै भेल। गामेपर देरी भऽ गेल। तँए दौड़ कऽ आबि कहुना कऽ ट्रेनमे चढ़लौं। काल्हि पटनामे मेडिकलक प्रतियोगिता परीक्षा छी। जँ ई ट्रेन छुटि जइतए तँ परीक्षा छुटि जाइत। आब हमरा टिकट नै अछि तँ मजिस्ट्रेट पकैड़ कऽ लऽ जाएत आ जेलमे ढुकाऔत। हमर जीवन बर्वाद भऽ जाएत। हम बड़ गरीब परिवारसँ छी।

हमरा ओकरापर दया लागि गेल। अपन बात मोन पड़ल रहए। जे ट्रेन छुटि गेलाक कारण ग्रामसेवक बला इन्टरभ्यू छुटि गेल रहए तँए नौकरी नै भेल। हम कहलिऐ-

“बौआ नै कानू। हम अपन टिकट अहाँकेँ दऽ दइ छी।”

ई कहैत हम अपना जेबीसँ टिकट निकालि ओकरा दऽ देलिऐ। तखने ट्रेन रूकल आ धम-धम कऽ टी.टी. सभ बौगीमे चढ़ल आ टिकट चेक करए लगल। हम अपन टिकट ओइ लड़काकेँ दऽ देने रही तँए धरा

गेलौं। टी.टी. हमरा पकैड़ कऽ ट्रेनसँ निच्चाँ उतारि लेलक। एतबो समय नै भेटल जे ओइ लड़कासँ नाम-ठेकान पुछितिऐ वा अपने नाम-ठेकान ओकरा कहितिऐ।

डॉ. परवीन पुछलकैन-

"सर, आब सभ घटना मोन पड़ि गेल किने।"

जीतन भैया कहलखिन-

"हँ, सभ बात मोन पड़ि गेल। अहाँ कहू अहाँ वएह लड़का छी जेकरा हम अपन टिकट देने रहिऐ?"

तैपर डॉ. परवीन बजला-

"हँ सर, हम वएह लड़का छी।"

ई कहैत ओ जीतन भैयाक दुनू पएर छुबि प्रणाम केलकैन। आ बजला-

"ई कहू सर, टी.टी. जे अहाँकेँ ट्रेनसँ निच्चाँ उतारलक से केतए लऽ गेल?"

जीतन भैया बजला-

"टी.टी. सभ बिनु टिकटबलाकेँ उतारि बसलग लऽ गेल। सभकेँ बसमे चढ़ा दरभंगा अनलक। सभकेँ मजिस्ट्रेटक आगाँ पेश केलक। सभसँ पहिने हमरे मजिस्ट्रेटक आगाँ लऽ गेल। हमर कपड़ा-लत्ता देख कऽ मजिस्ट्रेट बाजल- कपड़ा-लत्ता से तो पढ़ा-लिखा मालूम पड़ता है और बिना टिकट ट्रेनमे सफर करता है। हम की बजितौं चुप्पे रहलौं। मजिस्ट्रेट आगाँ बाजल- एक हजार रूपैआ फाइन किया जाता है।"

तैपर हम कहलिऐ-

"सर, किछु कम करि दियौ। हमरा लग पाँचे साए टका अछि।"

मजिस्ट्रेट बाजल- "दो हजार रूपैआ फाइन किया जाता है।"

हमरा लग दू हजार टका नहि रहए तँए जेल जाए पड़ल। जेलसँ गामपर चिट्ठी लिखलौं तखन जा कऽ हमर पितिऔत भाय फाइन बला रूपैआ दऽ कऽ हमरा जेलसँ निकाललक।"

डॉ. परवीन बजला- "सर अहाँकेँ हमरा खातिर जेल जाए पड़ल। अपने आदमी नहि, फरिश्ता छी!"

ई कहैत डॉ. परवीन एकबेर फेर जीतन भैयाक पैरपर झूकि गेला आ प्रणाम केलकैन।

जीतन भैया पुछलकैन- "अच्छा, ई कहू डाक्टर साहैब अहाँ जे ओइ दिन पटना मेडिकलक प्रतियोगिता परीक्षा दइले जाइत रही से परीक्षा दऽ सकलौं की नहि?"

डॉ. परवीन बजला-

"हँ सर, ओहि परीक्षामे हमरा सफलता भेटल आ आइ अहाँक कृपासँ हम डॉक्टर छी। अपनेकेँ हमरापर बड़का उपकार अछि। हमरा लायक कोनो सेवा हुअए तँ निधोक कहू।"

जीतन भैया बजला- "अहाँ जे अपना शरीरसँ हमरा खून दऽ हमर जान बँचेलौं सभ उपकारक बदला चुकाए देलौं। हम अहाँसँ एतबे आग्रह करब जे सेवाक भावनासँ डॉक्टरी करू। गरीब-गुरबाक मदैत करैत रहियौ।"

डॉ. परवीन कहलखिन- "सर, हम अपनेक भावनाकेँ आदर करै छी आ वादा करै छी जे सेवाक भावनासँ डॉक्टरी करब।"

❑

शब्द संख्या : 1401

भार

रामनगर गाम। भोरुका समय। सात बजैत। लालबाबू आओर हुनकर बहनोइ नूनूबाबू दुनू गोरे दतमैन कुर्रा-आचमन कऽ दलानपर बैसबे केला कि लालबाबूक पुतोहु अंजली दू गिलास पानि आ दू कप चाह एकटा ट्रेमे नेने पहुँचली। जखने लालबाबूक नजैर अंजलीपर गेलैन कि ओ झमान भऽ कऽ खसला। हुनक मुँहक चुहचुही जेना बिलाए गेलइ। ओ उदास भऽ गेला। अंजली सफेद वस्त्र पहिरने, ने हाथमे चूरी आ ने गरदैनमे मंगलसूत्र आ ने मांगमे सेनूर। चेहरापर उदासी। उमेर लगधक 22-23 बर्ख।

लालबाबू अंजलीसँ पुछलखिन-

“सासु-माँ, आँगनमे नै छेली?”

तैपर अंजली बड़ असथिरसँ बजली-

“माँ नहा रहली हेन।”

लालबाबू बजला-

“ठीक छै ट्रे टेबुलपर रखि दहक आ जा दूटा पान लगौने आबह।”

दुनू सार-बहनोइ पानि पीब चाह पीबए लगला। कनेक कालक बाद अंजली एकटा तश्तरीमे दू खिल्ली पान, सुपारी, जर्दा आ पत्ती दऽ गेली।

अंजलीकेँ गेला बाद नूनूबाबू बजला-

“भगवानो बड़ बेइमान छथिन। कनियाँक संग बड़ अन्याय केलखिन..!”

तैपर लालबाबू बजला-

“हमरे संगे भगवान कोन न्याय केने छैथ। एकेटा बेटा छेलए ओकरो दुनियासँ उठा लेलैन। आइ जँ एकटा बेटियो रहैत तँ संतोख करितौं। चिन्ता तँ ऐ बातक अछि जे हमरा दुनू परानीकेँ दुनियासँ गेला बाद ऐ अबलाकेँ की हेतइ..!”

बजैत-बजैत लालबाबूकेँ बुकौर लगि गेलैन आ आँखिसँ दहो-बहो नोर जाए लगलैन।

नूनूबाबू लालबाबूकेँ तोष दैत कहलखिन-

“की करबै भैया होनीकेँ के टारि सकैत अछि। रहलै बात कनियाँक तँ ऐ विषयपर गम्भीरतासँ विचार करए पड़त। अहाँ कानू जुनि। ऐ विषयपर विचार करू जे की केलासँ कनियाँक जिनगी खुशीसँ कटतइ। अखन हम जाइ छी, परसू रबि छी। परसू आबि कऽ ऐ समस्यापर दुनू गोरे विचारब।”

लालबाबू बजला-

“जलखै खा लिअ तखन जाएब।”

तैपर नूनूबाबू कहलखिन-

“नै भैया अखन जलखै नै करब। गामपर जाएब स्नान करब आ खेनाइ खा दोकानपर जाएब। दस बजे तक दोकान खोलि देब।”

ई कहैत ओ साइकिल लऽ विदा भऽ गेलाह।

नूनूबाबूकेँ गेलाक बाद लालबाबू सोचमे डुमि गेला। हुनका दू बर्ख पहिनुका सभ बात मोन पड़ि गेलैन।

केतेक धुमधामसँ विवेकक बिआहक बरियाती साजने रही। पनरहटा चारिचक्का गाड़ी आ मयूर नाचक संग बैंड बाजा रहए। बरियातीमे सामिल युवक सभ बैंड बाजापर खूब नाचल रहए।

लड़कियोबला जान उपैछ कऽ खर्च केने रहैथ। केहेन भव्य पण्डाल लगौने रहए तइमे रोशनीक केतेक नीक बेवस्था रहइ। खानो-पान की कोनो आजी-गुजी रहए। दरभंगासँ कारीगर मंगा कऽ खेनाइ बनबौने रहैथ। वैष्णवक लेल अलग बेवस्था आ साँकट सभ लेल भीन बेवस्था। बरियाती सबहक भव्य स्वागत भेल रहैन। हमहूँ की कोनो एकटा छेदामो दहेज नेने रहिऐ जे नीक बेवस्था नै करैत। हमरा तँ मोनो रहए जे कम-सँ-कम दुल्हिनक सभ गहना बेटीबला दौउ। मुदा हमर बेटा विवेक मना कऽ देलक। ओ बाजल जे बाबूजी हम अपने आर्मीमे नौकरी करै छी। कहुना खा-पीब कऽ पचास हजार टका भऽ जाइए। दस-बारह बीगहा जमीनो अछिए। तखन दहेज लऽ कऽ की करब। बिना दहेजक बिआह करि मैथिल समाजमे एकटा नजीर पेश करब। बेटाक विचारपर हमरा गर्व भेल। आ हम बिना एक्को पाइ नेने बिआह करए लेल तैयार भऽ गेलौं।

बड़ बढ़ियाँ जकाँ बिआह सम्पन्न भेल। दोसर दिन कनियाँक विदागरी करा गाम एलौं। फर्नीचरसँ लऽ कऽ सखारी-पेटारी टूटा पीकप गाड़ीमे आएल। कनियाँक रूप-रंग देख विवेकक माए केतेक खुश भेल छेली। सभ मेहमान खेनाइ खा नेने रहैथ। हम आ विवेक खेनाइयो खाइत रही आ टी.भी.मे समाचारो देखैत रही। तखने टी.भी.मे समाचार आएल-

“कारगिलमे पाकिस्तानी फौज भारतीय भू-भागपर कब्जा कर लिया है। इसलिए सभ सैनिकों की छुट्टी रद्द करते हुए तुरन्त कामपर आपस लौटने का आदेश दिया गया है।”

समाचार देख कऽ विवेक खेनाइपर सँ उठि गेल आ देवालमे टाँगल घड़ी दिस तकलक। हम पुछलिऐ-

“मर्र! की भऽ गेलह जे खेनाइपर सँ उठि गेलह।”

विवेक बाजल-

"बाबूजी समाचार तँ अहूँ देखबो आ सुनबो केलिऐ। हमरा आब एक पल भी रूकनाइ उचित नहि हएत। नअ बजैत अछि। साढ़े नअ बजे झंझारपुरमे ट्रेन अछि। वएह ट्रेन पकैड़ निकैल जाएब। जेतेक जल्दी भऽ सकत वोर्डरपर पहुँचबाक कोशीष करब।"

हम आ ओकर माइक अलाबे बिआहमे जेतेक सर-कुटुम आ घी-स्वासीन आएल रहैथ सभ विवेककेँ समझौलक जे कम-सँ-कम आइ राति रूकि जा, भोरे अपना ड्यूटीपर चलि जहिहह। मुदा विवेक एकेटा बात बाजल-

"भारत माताक अस्मिताक सबाल अछि। तँए अपने लोकैनक बात नै मानि रहल छी। ऐ लेल क्षमाप्रार्थी छी।"

ई कहैत ओ हमरा सभकेँ गोड़ लागि विदा भऽ गेल। विवेकक ममियौत भाय ओकरा फटफटियासँ झंझारपुर टीशन पहुँचा आएल।

विवेककेँ गेलाक एक सप्ताह बाद झंझारपुरसँ आबि कऽ दलानपर बैसले रही तखने चारि-पाँचटा चरिचक्का गाड़ी आबि दलानक आगाँ सड़कपर रूकल। एकटा गाड़ी झंझारपुर थानाक सेहो रहइ। ओइ गाड़ीसँ झंझारपुर थानाक थाना प्रभारी उतरला आ बजला-

"लालबाबू ठाकुर आप है?"

हम कहलिऐ-

"जी सर, हमहीं छी लालबाबू ठाकुर। की बात?"

थाना प्रभारी बजला-

"आपका बेटा फौजमे नौकरी करता था।"

हम कहलिऐ-

"जी सर। साते-आठ दिन तँ ओकरा गेना भेल हेन।"

थाना प्रभारी बजला-

"आपका बेटा कारगिलमे शहीद हो गया है।"

ताबेतमे एकटा पीकप गाड़ीपर सँ किछ पुलिस एकटा मंजूषा उतारि कऽ खोललक। ओइमे तिरंगा झंडामे लटपटाएल विवेकक लाश रहए। जंगलक आगि जकाँ ई समाचार पूरा गाममे फैल गेल। मरद, जनिजातिक संग धिया-पुताक करमान लागि गेल। हम किंकर्त्तव्यविमूढ़ भऽ गेलौं। ई समाचार जखन अँगना पहुँचल तँ विवेकक माए पछाड़ खा गिर गेली। हुनका दाँती लागि गेलैन। गामक जनिजाति सभ हुनकर दाँती छोड़ेलकैन। विवेकक कनियाँ अंजली भरि पाँज सासुकेँ पँजिया चिचियाए लगली। किछ जनिजाति सभ कनियाँकेँ बोल-भरोस दिअ लगली।

मधुबनी जिलाक पुलिस अधीक्षक हमरा कहलैन-

"अंकल आपको गर्व होना चाहिए। क्योंकि आपका लाल मातृभूमि के रक्षा के लिए शहीद हुआ है।"

हम कनियाँ आ अपन पत्नीक हालत देख कऽ अपनाकेँ सम्हारलौं। हम एस.पी. साहैबकेँ कहलयैन-

"हजूर दुख एकेटा बातक अछि जे हमरा दोसर बेटा नै अछि। जँ दोसर बेटा रहितए तँ देशक रक्षा खातिर ओकरो फौजमे भर्ती कराबितौं।"

हमर बात सुनि एस.पी. साहैब हमरा सैल्यूट मारने रहैथ आ बाजल रहैथ-

"सर, मैं आपके जज्वाको हजार बार नमन करता हूँ। हुनके सबहक उपस्थितिमे विवेकक दाह-संस्कार सम्पन्न भेल।"

अंजलीक नैहरसँ ओकर पिताजी आ बड़ भाय आएल आ अंजलीकेँ नैहरा लऽ जेबाक लेल हमरासँ आग्रह केलैथ। हम कहलयैन-

"जँ अंजली नैहरा जाएत तँ लऽ जाइयौन। हमरा तरफसँ कोनो किन्तु-परन्तु नै अछि।"

मुदा अंजली नै गेली। हम आ हमर पत्नी केतबो समझौलियै जे जा, किछु दिन नैहरामे रहि आबह। जखने मोन हेतह चलि अबिहह। मुदा अंजली नैहरा नै गेली।

“यै जलखै नेने आबी?” –लालबाबूक पत्नी- चन्द्रकला दलानक निच्चाँसँ बजली।

तखन लालबाबू अतीतसँ निकैल वर्तमानमे एलाह। पत्नी पुछलकैन-

“की सोचैत रहिऐ। तीन-चारि बेर हाक देलौं तखन जा कऽ अहाँक भक् खुजल।”

लालबाबू बजला-

“दू बर्ख पहिलुका बात मोन पड़ि गेल रहए।”

तैपर चन्द्रकला बजली-

“आब पिछलका बात सोचि कऽ की हएत। सोचबाक अछि तँ कनियाँक बारेमे सोचियौ। ओकर पहाड़ सन जिनगी केना कटतइ।”

लालबाबू बजला-

“कनियाँकेँ देखै छी तँ बड़ पीड़ा होइत अछि। अखने नूनूबाबू पाहुन गेला हेन। ओहो यएह बात कहै छला। कहलैथ जे रबि दिन अबै छी तँ ऐ बातपर विचार करब। कनेक लगमे आऊ एकटा विचार पुछऽ चाहै छी।”

चन्द्रकला लग आबि पुछलखिन-

“कहू की पुछए चाहै छी।”

लालबाबू बजला-

“हम सोचै छी जे कनियाँकेँ दोसर बिआह कऽ दिऐ।”

चन्द्रकला बजली-

“हमहूँ तँ यएह सोचै छी। मुदा जाति-समाज मानत। बड़का बखेड़ा ठाढ़ कऽ देत। दोसर, कनियाँ सेहो मानत कि नहि।”

लालबाबू बजला-

“हमरा जाति-समाजक कोनो डर नै अछि। जे हेतै से देख लेब। अहाँ कनियाँकेँ समझाबियौ। जँ ओ बात मानि जाएत तँ जेतेक खर्च करए पड़ए, एकटा योग्य लड़का खोजि कऽ बिआह कऽ देब।”

चन्द्रकला बजली-

“लड़का तँ सोझहेमे अछि। परसु आएलो रहए।”

लालबाबू बजला-

“के छी ओ लड़का। कनी फरिछा कऽ कहू ने।”

चन्द्रकला बजली-

“अहींक भागिन आलोक। परसू आएल रहए। कहैत रहए जे अही सप्ताहमे बहालीक चिट्ठी निकलत।”

लालबाबू बजला-

“आलोक बिआह करए लेल राजी हएत तखने ने।”

चन्द्रकला-

“अहाँक बात ओ मानि जाएत। किएक तँ मैट्रिक धरि ओ अपने ऐठाम रहि कऽ पढ़लक हेन। हमरा बिसवास अछि, ओ अहाँक बात नै काटत।”

लालबाबू बजला-

“से तँ बी.एड. करैले सेहो पच्चास हजार टका देने रहिऐ। आलोक कहने रहए कमाए लगब तँ दोबर लगा कऽ पैसा आपस कऽ देब।”

ई गप-सप्प होइते रहए तखने साइकिलसँ आलोक आएल आ लालबाबू आ चन्द्रकलाकेँ गोड़ लगलक।

लालबाबू बजला-

"आबह! आबह! बहुत दिन जीबह। अखने तोरे चर्च करैत रहिहह। कहऽ बहालीबला चिट्ठी भेटलह।"

आलोक बाजल-

"हँ मामाजी। आइये भोरमे डाकपिउन चिट्ठी दऽ गेल हेन। अहीं गामक हाइ स्कूलमे बहाली भेल हेन। आइ नीक दिन छी तँए आइये योगदान करब। सोचलौं जे मामा-मामी हमरा लेल एतेक केलैन पहिने हुनका सबहक आशीर्वाद लेब तखन ज्वाइन करब।"

चन्द्रकला बजली-

"भगवान नीक करथुन।"

आलोक बाजल-

"मामा जाबे कोनो दोसर बेवस्था नै भऽ जाएत ताबे अहीठाम रहि कऽ स्कूल करब।"

लालबाबू बजला-

"ऐमे दोसर बेवस्थाक कोन खगता छै, जाबे धरि रामनगर हाइस्कूलमे रहबह, अहीठाम रहि कऽ स्कूल करहीअ। हमरा की कोनो बेटा-बेटी अछि। एकटा पुतोहु अछि। सोचै छी ओकरो कोनो रस्ता लगा दिऐ। तोरे बेटा बुझबह। जेहने बेटा तेहने भागिन।"

आलोक बाजल-

"मामा हमहूँ बेटा बनि कऽ अपने सबहक सेवा करब।"

लालबाबू बजला-

"अच्छा पहिने जलखै कऽ लएह आ स्कूल जा कऽ योगदान दऽ आबह।"

आलोक बाजल-

“मामा हम स्नान-जलखै कऽ नेने छी। हँ, टिफिनमे आबि कऽ खेनाइ खा जाएब। चारि बजे आपस गाम चलि जाएब। काल्हि दस बजेमे बोरिया-बिस्तर लऽ कऽ आएब।”

लालबाबू आ चन्द्रकला एक्के बेर बजली-

“बड़ बढ़ियाँ।”

आलोक चल गेला।

लालबाबू बजला-

“अहाँ रातिमे कनियाँकेँ समझाबियौ, जँ ओ मानि जेती तँ हम आलोकसँ बात करब। हमरा पूरा विश्वास अछि आलोक हमर बात नै टारत।”

चन्द्रकला बजली-

“ठीक छै। हम कनियाँसँ बात करबै।”

रातिमे जखन दुनू सासु-पुतोहु खेनाइ खा निचेन भेली तँ चन्द्रकला अंजलीसँ कहलखिन-

“बेटी हम अहाँसँ किछ कहऽ चाहै छी। जँ मनमे दुख नै हुअए तँ कही।”

तैपर अंजली बजली-

“माँ एहेन कोन बात छै जे अहाँ कहब तँ हमरा मनमे दुख हएत। ऐ दुनियाँमे अहाँ सभकेँ छोड़ि हमरा के अछि। हमर माइयो-बाप दुनियाँसँ चलिये गेला।” ई कहि अंजली कानए लगली।

चन्द्रकला बजली-

“बेटी कानू जुनि। हमर बात धियानसँ सुनू। बाबूजी कहै छला जे कनियाँ एहेन पहाड़सन जिनगी केना काटती।”

अंजली बजली-

"माँजी, हमरा भाग्यमे जे लिखल छल से भेल। दोसर उपाइये की अछि।"

चन्द्रकला बजली-

"बेटी उपाय तँ छै, मुदा अहाँ मानी तब... ।"

अंजली बजली-

"की उपाय छै माँ, कनी फरिछा कऽ कहु ने।"

चन्द्रकला अंजलीक माथपर हाथ फेरैत बजली-

"बेटी, हम आ अहाँक बाबूजी चाहै छी जे कोनो योग्य लड़कासँ अहाँक बिआह कऽ दी।"

तैपर अंजली कनैत बजली-

"माँजी, हमरासँ कोन एहेन गलती भऽ गेलैन जे अहाँ सभ हमरा ऐ घरसँ भगबए चाहै छी। नहि माँजी नहि, हमरा अहाँ सभ अपने चरणमे जगह देने रहू।"

ई कहैत अंजली आओर कानए लगली।

चन्द्रकला समझाबैत बजली-

"नै बेटी अहाँसँ कोनो गलती नै भेल हेन। आ ने ऐ घरसँ हम सभ अहाँकेँ भगबए चाहै छी। अहाँकेँ हम सभ पुतोहु नै बुझि अपन बेटी बुझै छी। कहू बेटीक दुख कोनो भी माए-बाप देख सकैत अछि?"

अंजली बजली-

"माँ, हमरा भाग्यमे पतिक सुख लिखल रहैत तँ हमर पति हमरे लग ने रहितए। ओ किएक भगवानक घर चल गेला।"

चन्द्रकला बजली-

"देखू बेटी, जे भऽ गेलै तेकरा बिसैर जाऊ आ जे कहै छी तैपर विचार करू। हम सभ अहीं वास्ते ने कहै छी। कहू हमरा दुनू परानीक

बाद अहाँकेँ देखएबला के रहत। हम सभ पाकल आम भेलौं। कखन डारिसँ खसि कऽ धरतीपर अबि जाएब तेकर कोन ठेकान।"

अंजली-

"नहि माँजी, अहाँ सभकेँ होइत अछि जे अंजलीसँ कोनो उन्नैस-बीस ने भऽ जाए। तँए अहाँ सभ हमरा अपनासँ अलग करए चाहै छी।"

चन्द्रकला-

"नै बेटी से बात नहि अछि। अच्छा आब सुति रहू, बड़ राति भऽ गेल। काल्हि भोरमे बात करब।"

दोसर दिन भोरमे लालबाबू चाह पीबए अँगने एला। ओना, आन दिन ओ दलानेपर चाह पीबै छला। मुदा आइ अंजलीसँ किछु गप करए चाहै छला। जखन लालबाबू आँगन एला तँ पत्नी चन्द्रकला एक गिलास पानि आनि कऽ देलकैन आ पुतोहुसँ कहलखिन-

"बेटी, बाबूजीले चाह नेने अबियौन।"

अंजली चाहक गिलास नेने एली आ लालबाबूक हाथमे चाहक गिलास दैत बजली-

"बाबूजी, हमरासँ कोन अपराध भऽ गेलैन जे अपने सभ हमरा अलग करए चाहै छैथ।"

अंजली कानए लगली।

लालबाबू बजला-

"नै बेटी, अहाँसँ कोनो अपराध नै भेल हेन।"

अंजली-

"तखन माँ किएक हमरा पाछाँ हाथ धोइ कऽ पड़ल छथिन?"

लालबाबू बजला-

"एकटा बात कहू तँ बेटी, हम सभ अहाँकेँ बेटी बुझै छी कि

पुतोहु?”

अंजली बजली-

“से तँ अपने सभ हमरा बेटी बुझै छी। आ बेटीए जकाँ बेवहारो करै छी।”

लालबाबू बजला-

“तखन अहीं कहू जे कियो माए-बाप अपना बेटीक दुख देख सकत? देखू बेटी, अहाँ अपना खुशी खातिर नै तँ हमरे दुनू गोरेक खुशी खातिर हमरा सबहक बात मानि लिअ। हमरा सबहक माथसँ भार उताइर दिअ।”

बजैत-बजैत लालबाबू कानए लगला। हुनका आँखिसँ दहो-बहो नोर जाए लगलैन।

लालबाबूकेँ कनैत देख अंजली सेहो कानए लगली। ओ कनैत बजली-

“बाबूजी, हमरा सोचैले किछु समय दिअ।”

तैपर लालबाबू बजला-

“बेटी, नीक जकाँ सोचि लअ। हम सभ कोनो बेजए बात नै कहै छी।”

अंजली रातिमे जखन सुतए गेली तँ हुनका निन्ने ने होइन। ओ सोचए लगली। अखन बीसे-बाइस बर्ख उमेर भेल हेन। एटेटा पहाड़ सनक जिनगी केना बिताएब। सासु-ससुरक मरलाक बाद हमरा के देखभाल करत। अपन माए-बाप बेटियेक सोगे सोगा कऽ दुनियाँसँ चल गेला। भाय-भौजाइ केकर दुनियाँमे भेलैए जे हमर हएत। अखन नब-धब छी तँए लोक किछ नै बजैत अछि। काल्हि रंग-रंगक अबलट्ट लगाएत। जीअब हराम कऽ देत। मोन पड़लैन नैहराक बात। खुटौनावालीक पति दिल्लियेमे सड़क दुर्घटनामे मरि गेलइ। ओकरा दूटा बालो-बच्चा छइ।

तीस-बत्तीस बर्ख उमेरो हेतइ। ओ सासुरेमे रहि गेल। किछु दिनक बाद गाममे हवा उड़लै जे खुटौनावाली दीअर संगे फँसल अछि। एकबेर ओकरा पेटमे दरद उखरलै। गाम-घरक डॉक्टरसँ देखौलक मुदा ठीक नै भेलइ। लोक सभ कहलकै जे सभसँ नीक दरभंगे चलि जाए। ओतए अल्ट्रासाउन्ड करा लिहह सभ पता चलि जेतह। ओ दीअरकेँ संग कऽ इलाज कराबऽ दरभंगा गेल। एमहर गाममे हवा उड़लै जे खुटौनावाली बच्चा गिरबैले दरभंगा गेल हेन। अंजली आगाँ सोचलक जे घटना खुटौनावाली साथे भऽ रहल छै काल्हि हमरो साथे भऽ सकैए। दोसर बात ई सोचलक जे के कहलक काल्हि हमरासँ कोनो उन्नैस-बीस घटना भऽ जाए तँ दुनू कुलक नाक कटि जाएत...।

अंजलीक एक मन कहै जे सासु-ससुरकक बात मानि ली। दोसर मन कहै सासु-ससुरक बात मानि जे दोसर बिआह करब तँ जाति-बेरादरी बड़का बखेड़ा ठाढ़ करत। फेर मन कहै जे नैहरक लोक कहत जे छौरीकेँ जवानी बरदास नै भेलै तँए दोसर बिआह कऽ लेलक। सएह बात सासुरोक लोक कहत। की करी की नहि। फेर मनमे होइ जे सभसँ नीक जे माहूर खा कऽ मरि जाइ। फेर सोचए जे मरियो जाएब तँ लोक किछ-ने-किछु अबलट्ट लगाइये देत..!

यएह सभ सोचैत-सोचैत अंजली नीन्न पड़ि गेल।

सपनामे देखलक जे पति विवेक एला हेन। ओ तिरंगा झंडा हाथमे नेने छैथ। अंजली हुनका गोड़ लगलकैन। तैपर विवेक आर्शीवाद दैत कहलखिन- खुश रहू। अंजली विवेकसँ कहलखिन- हम खुश केना रहब। अहाँ तँ हमरा लगसँ भगवानक घर चल गेलौं। हम तँ विधवा भऽ गेलौं। कहू तँ विधवो केतौ खुश रहल हेन। तैपर विवेक बाजल- देखू अंजली, अहाँ हमरा माए-बाबूक बात मानि लिअ। माए-बाबू अहाँक हालत देख बड़ दुखी छैथ। दोसर बात अखन अहाँक पहाड़सन जिनगी काटैक अछि। बादमे लोक रंग-रंगक अबलट्ट लगाएत। तेसर बात जाधैर अहाँ

दोसर बिआह नै कऽ लेब हमरा आत्माकेँ शान्ति नै भेटत। हमर आत्मा भटकैत रहत। कहू अंजली अहाँ हमरा आत्माकेँ शान्ति चाहै छी कि नहि।

तैपर अंजली कनैत बजली- हँ चाहै छी।

विवेक बाजल- तखन माए-बाबूक बात मानबै ने?

अंजली कनैत बजली- हँ मानब।

अच्छा हम जाइ छी। अहाँ अपना बातपर कायम रहब।

विवेक चलि गेला।

"कनियाँ! कनियाँ!! की भेल किए कनै छी।" –चन्द्रकला अंजलीकेँ देह पकैड़ डोलबैत पुछलखिन।

अंजलीक नीन टुटि गेल।

"नहि माँ कहाँ कनै छी। एकटा सपना देखै छेलिऐ।" -अंजली बजली।

चन्द्रकला-

"एह, अहाँ तँ खूब कानै छेलिऐ। अच्छा कहू सपनामे की देखलिऐ जे एना कनै छेलौं।"

अंजली सपनाक सभ बात सासुकेँ बता देलकैन।

भोरमे चन्द्रकला रौतुका सभ घटना लालबाबूकेँ बता देलखिन। तैपर लालबाबू पुछलकैन-

"कनियासँ पुछलयैन नै जे आब की करती। अपना सबहक बात मानती कि नहि?"

चन्द्रकला बजली-

"हम तँ नै पुछलयैन हेन, मुदा हमरा बिसवास अछि जे रौतुका सपनासँ ओ अपन सबहक बात मानि जेती। चलू अँगनेमे चाहो पियब

आ पुछियौ लेबइ।"

लालबाबू बजला-

"अहाँ चलू हम दतमैन केने अबै छी।"

दतमैन-कुल्ला-आचमन कऽ लालबाबू अँगना एला। चन्द्रकला अंजलीसँ कहलखिन-

"बेटी बाबूजी-ले चाह बना दियौन।"

अंजली चाह बना कऽ लालबाबूकेँ देमए एलखिन तँ लालबाबू चाहक कप पकड़ैत पुछलखिन-

"बेटी, हमरा गपपर अहाँ की सोचलिऐ?"

अंजली बजली-

"बाबूजी, अपने सबहक जे आदेश हेतै, पालन करब मुदा हमरो एगो शर्त्त अछि।"

लालबाबू बजला-

"बाजू, अहाँक कोन शर्त्त अछि।"

अंजली बजली-

"अपने हमरा जइ लड़कासँ बिआह करब हुनका अहाँक बेटा बनि कऽ अहाँ सबहक सेवा करए पड़तैन।"

लालबाबू कहलखिन-

"हमरा अहाँक शर्त्त मंजूर अछि। एकटा बात कहू जे आलोक-दे अहाँक की विचार अछि?"

तैपर अंजली बजली-

"बाबूजी, हमर कोनो विचार नहि। अपनेक आदेशक पालन करब।"

ऐगला दिन दस बजे दिनमे आलोक अपन बोरिया-विस्तर लऽ कऽ रामनगर मामा ऐठाम पहुँचला। सभ समान रखि ओ स्कूल चल गेलाह।

आलोक प्रगतिशील विचारक युवक। ओ विवेकसँ छह मासक छोट। देखबा-सुनबामे बड़ नीक। रातिमे जखन दुनू मामा-भागिन खेनाइ खा कऽ दरबज्जापर सुतैले एला तँ आलोक बजला-

"मामा जँ बिगड़ी नहि, तँ एक बात कही।"

तैपर लालबाबू कहलखिन-

"ऐमे बिगड़बाक कोन बात छइ। जे कहबाक छह निधोक कहह।"

आलोक बाजल-

"मामा, अंजली भाभीकेँ बिआह करि दियौ।"

लालबाबू बजला-

"के करत ओकरासँ बिआह। तोरा नजैरमे कोनो योग्य लड़का हुअ तँ कहह।"

आलोक बाजल-

"लड़का तँ एक-पर-एक भेटत मुदा अंजली भाभी तैयार हेती तखन ने।"

लालबाबू बजला-

"ई हमरापर छोड़ि दहक। अच्छा ई कहह जे तोहर की विचार छह अंजलीक प्रति?"

आलोक अकचकाइत बाजल-

"मामा, अहाँक बात नै बुझि सकलौं, कनी फरिछा कऽ कहू।"

लालबाबू बजला-

"तों अंजलीसँ बिआह कऽ सकै छह?"

आलोक बाजल-

“मामा, हमरा सोचबाक समय दिअ। मुदा हमरा सोचलासँ की हएत। अपने हमरा बाबूजीसँ पुछि लियौन। हुनकर केहेन विचार छैन।”

लालबाबू-

“ठीक छै, हम पाहुनसँ बात करबैन।”

रबि दिन प्रात: आठ बजे नूनूबाबू रामनगर एला। आलोक शनियेँ दिन चारि बजे गाम चलि गेल छला। चाह पीला पछाइत गप्प शुरू केलैन।

नूनूबाबू बजला-

“ओइ दिन कहने रही जे कनियाँक पहाड़सन जिनगी केना कटतइ, ऐ बातपर विचार करू।”

लालबाबू-

“अपनेक की विचार अछि?”

नूनूबाबू-

“कनियाँक दोसर बिआह करि दियौ।”

लालबाबू-

“एक तँ जाति-बेरादरी ऐ प्रसंगपर बड़का बखेड़ा खड़ा करि देत। किएक तँ अपना सबहक जातिमे विधबा बिआहक चलैन नै छइ। मुदा तेकर हमरा चिन्ता नै अछि। मुदा कोनो योग्य लड़का अंजलीसँ बिआह करत?”

नूनूबाबू-

“किएक नै करत। ओकरामे की कमी छइ। पढ़ल-लिखल अछि। देखबा-सुनबामे सुन्नैर आ सुशील सेहो अछिए।”

लालबाबू-

“कमी तँ ठीके नै छइ। तब एकटा बात छै...।”

नूनूबाबू-

“कोन एकटा बात?”

लालबाबू-

“सभकेँ अपन-अपन सोच अछि। सबहक अपन-अपन विचार अछि। तखन एक बात...।”

नूनूबाबू बिच्चेमे बजला-

“कोन बात?”

लालबाबू-

“अहाँ अपना आलोकक बिआह अंजलीसँ करि सकै छिऐ?”

आब तँ नूनूबाबूक बोलती बन्न भऽ गेलैन। ओ गुम्म भऽ गेला। सत् पुछू तँ ओ अकबकाए लगला। सपनोमे नहि सोचने रहैथ जे लालबाबू हमरा एहेन प्रश्न पुछि देता।

लालबाबू, नूनूबाबूकेँ चुप देख आगाँ बजला-

“एना चुप किए भऽ गेलौं। जाति-बेरादरीक डर होइए किने?”

तैपर नूनू बाबू बजला-

“नै से बात नै छइ।”

लालबाबू-

“तखन?”

ताबेतमे नूनूबाबू अपनाकेँ सम्हारि नेने छला। बजला-

“हमरा एक सप्ताह सोचैक मौका दिअ आ दोसर बात ऐ विषयपर अहाँक बहिन यानी आलोकक माएसँ सेहो विचारए पड़त किने।”

लालबाबू-

“ठीक छै, एक सप्ताह नै दस दिनक समय दइ छी। विचारि लेब जँ विचार भऽ जाए तँ खबर कऽ देब।”

नूनूबाबू-

“बड़ बढ़ियाँ।”

नूनूबाबू जलखै खा कऽ गाम विदा भऽ गेला। रस्तामे सोचए लगला। कहू तँ, एहनो होइ। राह देखा तँ आगू चल। ई कोन बात भेल। हम जे कहलयैन जे कनियाँक दोसर बिआह करि दियौ तँ लालबाबू ई ढोल हमरे गरदैनमे बान्हैले विचार करए लगला। दू-दूटा कुमारि बेटी अछि। जाति-बेरादरीबला तँ जीनाइ हराम कऽ देत आ बेटीक बिआहमे तँ भारी फिरीशानी उठबए पड़त। बाप रे बाप, लालबाबू तँ बड़का फाँसमे हमरा दिअ चाहै छैथ। बुझलिऐ, आलोककेँ पढ़बै-लिखबैमे हुनकर बड़ योगदान छैन एकर माने ई नहि ने जे ओकरा गलामे फाँस लगा दियौ। ई सभ सोचैत गामपर पहुँचला। पत्नी सुलोचना लग एलैन तँ पतिक मुँहक सुरखीसँ बुझि गेली जे किछु ओझरीमे पड़ि गेला हेन। पुछलखिन-

“मर! मन बड़ खसल देखै छी। की भेल?”

तैपर नूनूबाबू बजला-

“आलोकक बदली रामनगर स्कूलसँ करबए पड़त। बदलीमे तँ समय लागत, मुदा ओकर डेरा मामा ओइठामसँ हटा दोसर जगह राखए पड़त। जँ कोनो बेवस्था नै हएत तँ स्कूलेमे डेरा रखि लेत।”

तैपर पत्नी पुछलकैन-

“किएक, मामा ओतए रहैमे कोन दिक्कत भऽ गेलै। लालबाबू भैया अपना बेटा जकाँ मानै छथिन। वएह मैट्रिक धरि अपना घरपर रखि पढ़ेबो केलखिन आ बी.एड. सेहो करैले ढौआ देलखिन।”

नूनूबाबू-

“तँए ने आलोककेँ गरदैनमे फाँस लगबए चाहै छथिन।”

सुलोचना-

“की फाँस? नै बुझलौं कनी फरिछा कऽ बाजू।”

नूनूबाबू-

“लालबाबू चाहै छथिन जे आलोक हुनका पुतोहु अंजलीसँ बिआह कऽ लिअए।”

सुलोचना-

“एहेन अभगलीसँ हम अपना बेटाक बिआह करब! जे बिआह होइते साँएकेँ खाए लेलकै। कहू तँ ई भैयासन केहेन भेलै। जँ पुतोहुकेँ दोसरे बिआह करए चाहै छथिन तँ की दुनियाँमे लड़काक आछन भऽ गेलै हेन जे एहेन करमजरलीहीकेँ हमरा बेटाक कपारमे साटए चाहै छथिन। की भैया अहाँसँ किछु कहलक हेन।”

नूनूबाबू-

“हँ, हमहीं कहलयैन जे कनियाँक दोसर बिआह करि दियौन, तैपर बजला अहाँ आलोकक बिआह अंजलीसँ कऽ सकै छी।”

सुलोचना-

“अहाँ की कहलिऐ?”

नूनूबाबू-

“हम की कहितिऐ। हम कहलिऐ अहाँक बहिनसँ विचारि कऽ समाद पठा देब।”

सुलोचना-

“नहि-नहि, हम अपना बेटाक बिआह एहेन अलक्ष, हराशंखसँ नै करब।”

नूनूबाबू-

“आलोककेँ कहियौ अपन रहैक बेवस्था इस्कूलेपर करि लेत।

लालबाबू ओतए रहब ठीक नइ हेतइ।"

सुलोचना-

"हँ, ठीके कहै छिऐ।"

लालबाबू झंझारपुर गेल रहैथ। साँझमे गामपर एला तँ आलोककेँ दलानपर नै देखलैन। ओ पत्नी चन्द्रकलाकेँ पुछलखिन-

"मर, आलोककेँ नै देखै छिऐ। गाम गेल हेन की?"

तैपर पत्नी चन्द्रकला बजली-

"नहि, गाम नइ गेल हेन। ओ अपन सभ समान लऽ कऽ स्कूलपर गेल हेन। कहलक जे स्कूलेमे डेरा राखब आ ओतै चटिया सभकेँ पढ़ेबो करब आ खाना बना कऽ खेबो करब, रहबो करब।"

लालबाबू-

"हूँ..! तँ ई बात छी। बुझि गेलिऐ।"

चन्द्रकला-

"की बुझि गेलिऐ?"

लालबाबू-

"पाहुनसँ पुछने रहिऐन जे अहाँ आलोकक बिआह कनियाँसँ करि सकै छी।"

चन्द्रकला-

"तँए आलोक अपन डेरा अतए-सँ स्कूलपर लऽ गेल हेन। माए-बाप सोचने हेतै जे मामा-मामी ओइठाम रहत तँ हो-न-हो मामा-मामीक बात मानि बिआह कऽ लिअए। तँए आलोककेँ कहलक हेन, डेरा स्कूलपर लऽ जेबा लेल।"

लालबाबू-

"जाए दियौ। दुनियाँ बड़ीटा छइ।"

एक दिन लालबाबू चौकपर चाह पीबैत रहैथ। तखने मंगल आ जंगल अपनामे गप करैत रहए। जेकरा लालबाबू सुनए लगला।

मंगल-

"हौ जंगल भाय, सुनै छी लालबाबू पुतोहुकेँ दोसर बिआह करए चाहैए।"

जंगल-

"हँ हौ भाय। हमहूँ सुनलिऐ हेन। हे भाय, बेचारीक दोसर बिआह भऽ जेतै तँ बुझहक ओकर जीवन सुफल भऽ जेतइ। कहह, पहाड़ सन जिनगी केना काटत।"

मंगल-

"हौ भाय, कहलहक हेन तँ ठीके मुदा हमरा तँ होइए जे लालबाबू पुतोहुक दोसर बिआह करि अपना धन-सम्पैतक सुरक्षा चाहै छैथ।"

जंगल-

"की सुरक्षा, नै बुझलियह।"

मंगल-

"देखह जाबे धरि कनियाँ रहत ताबे धरि लालबाबूकेँ जते भी धन-सम्पैत छै सभकेँ वारिस वएह छी। लालबाबू चाहैए जे कनियाँक दोसर बिआह कऽ सभटा धन-सम्पैत भागिनकेँ लिख दी आ बुढ़िया (लालबाबूक पत्नी) चाहैए जे किछु जमीन अपना भातीजकेँ दी... ।"

ई सभ बात सुनि लालबाबू छगुन्तामे पड़ि गेला। पानो नै खेलैन आ सोझहे अँगना एला आ पत्नी आओर पुतोहुकेँ तैयार होइले कहलखिन।

चन्द्रकला पुछलखिन-

"की बात छिऐ। हम आ कनियाँ तैयार भऽ कऽ केतए जाएब?"

लालबाबू बजला-

“झंझारपुर रजष्ट्री ऑफिस चलब। जेतेक जमीन-जत्था अछि सभ कनियाँक नामे लिख देब।”

तैपर अंजली बजली-

“कोन एहेन बात भऽ गेलै हेन जे बाबूजी अपन सभ भार हमरा माथपर दऽ रहल छथिन?”

लालबाबू-

“अहाँ नै बुझबै। अहाँ दुनू गोरे जल्दीसँ तैयार भऽ जाउ, ताबे हम टेम्पूबलाकेँ बजौने अबै छी।”

अंजली-

“बाबूजी, अपने जे हमरा जमीन लिख देब तखन जे कियो हमरासँ बिआह करत ओ धने लोभसँ करत। तँए हम नै चाहै छी जे अपने हमरा नामसँ जमीन लिखी।”

लालबाबू-

“ई बात गोपनीय रहत। खाली हम, अहाँ आ अहाँक सासु ई बात बुझती।”

लालबाबू झंझारपुर जा जेतेक भी चल अथबा अचल सम्पैत छेलैन सभ अंजलीक नामे कऽ देलखिन। आब लालबाबू अंजलीक लेल लड़का खोजैमे लागि गेला। हुनका सासुरसँ सार समाद देलकैन जे एकटा लड़का छइ। ओ सासुर गेला। जखन लड़काक बारेमे पता केलखिन तँ पता चललैन जे लड़का विधुर छैथ। उमेर 45-46 बर्ख। पहिलुकी पत्नीमे एकटा बेटा आ दूटा बेटी छैन।

लालबाबूकेँ तड़बाक लहैर मगजपर चलि गेलैन। सार जे समाद देने रहैन तिनका बड़ गंजन केलखिन आ बिनु खेनाइ खेने सासुरसँ चल

एला।

लालबाबू बड़ चिन्तित रहए लगला। हुनका मनमे रहैन जे कोनो योग्य लड़कासँ अंजलीक बिआह करी। तैसंग अंजलीक शर्त्त सेहो मन रहैन। अही तारतममे छला कि एक दिन हुनकर ममियौत भाए- श्यामजी एला। कुशल-क्षेम भेल। लालबाबू कहलखिन जे आइ रूकि जाउ। रातिमे किछु गप्प करबाक अछि। श्यामजी रूकि गेला।

रातिमे लालबाबू श्यामजीकेँ अंजलीक वियाहक चर्च केलखिन। संगे अंजलीक शर्त्त सेहो कहलखिन। लालबाबू श्यामजीकेँ कहलखिन-

“जँ अहाँक नजैरमे कोनो लड़का अछि तँ कहू। लड़का योग्य आ सुशील हेबाक चाही। धन-सम्पैत नहियोँ होइ तैयो कोनो बात नहि।”

श्यामजी कहलकैन-

“हमरा गाममे एकटा लड़का छै। नाओं छिऐ विकास, मुदा अछि बड़ गरीब। माए मसोमात छथिन। ओना, लड़का एम.ए. पास कऽ शिक्षा मित्र छैथ। लड़का बड़ सज्जन आ सुशील छैथ।”

लालबाबू-

“हुनकर माइक केहेन सोभाव छइ। की ओ कनियाँसँ अपन बेटाक बिआह करैले तैयार हेती?”

श्यामजी-

“भऽ जेबाक चाही।”

लालबाबू-

“ठीक छै, अहाँ जाउ। अहाँ लड़काक माएसँ गप करब। जखन ओ तैयार भऽ जेती तँ समाद देब।”

श्यामजी-

“ठीक छइ।”

श्यामजी विहान भने गाम गेला। गाममे विकासक माएकेँ सभ गप कहलखिन। विकासक माए स्वयं अनुभवी छथिए जे एकटा विधबाक की जिनगी आ केहेन दशा होइत अछि...। विकासक बिआह अंजलीसँ करैले तैयार भऽ गेली। विकाससँ बात केलैन तँ ओ बजला-

"जे माए हमरा बोइन-बुत्ता करि एम.ए. पास करौलक ओ जे कहत से करब।"

विकासक माए सुभद्रा तीसे बर्खक उमेरमे विधबा भऽ गेल छेली। अखन हुनक उमेर पच्चास-एकावन बर्ख हेतैन। विधबा नारीकेँ कोन-कोन वेदना सहए पड़ै छै से अनुभव छैन्हे। तँए ओ अपना बेटाक बिआह विधबा अंजलीसँ करैले सहर्ष तैयार भऽ गेली।

अगहन मास, बिआह-पंचमीक दिन सरखड़ा मन्दिरमे भगवतीकेँ साक्षी रखि विकास आ अंजलीक विआह भऽ गेल। बिआहक बाद जखन विकास आ अंजली लालबाबूकेँ पैरपर गोड़ लगलकैन तँ लालबाबू बजला-

"अहाँ दुनू गोरे हमरा माथपर सँ बड़का भार उतारि देलौं। अंजलीक आँखिसँ दहो-बहो नोर जाए लगल।"

❑

शब्द संख्या : 42017

कैंसर

रामनगर ऊँच्च विद्यालयक दसम वर्गमे जखन वर्ग शिक्षक उपस्थिति पंजी लऽ कऽ एला तँ विद्यार्थी सभ शान्त भऽ गेल। शिक्षककेँ क्लासमे अबिते छात्र सभ ठाढ़ भेल। वर्ग शिक्षक कुर्सीपर बैसैत छात्र सभकेँ बैसबाक लेल कहलखिन। शिक्षक सभ छात्रकेँ उपस्थिति लेलखिन। जखन उपस्थिति लेल भऽ गेलैन तँ राम कुमार ठाढ़ भेल। शिक्षक राम कुमारसँ पुछलखिन-

“क्यों खड़ा हुआ है?”

तैपर राम कुमार बाजल-

“सरजी, बेचन बीड़ी पीबैए।”

शिक्षक बेचनकेँ डाँटैत पुछलखिन-

“क्यों रे बेचन, बीड़ी पीता है?”

बेचन बाजल-

“नै सरजी, राम कुमार फुसि बजैए। हम बीड़ी नै पीबै छी।”

राम कुमार बाजल-

“हम झूठ बजै छी की? तों कह तँ काल्हि चौकपर पानक दोकानपर ठाढ़ भऽ बीड़ी नै पीबैत रही।”

बेचन बाजल-

“देख बौआ, गलती बात जुनि बाज नहि तँ हमरासँ बेजाए कोइ नै हेतौ!”

तैपर राम कुमार बाजल-

“तोँ विद्या छुबि कऽ कहबीही जे काल्हि साँझखिन चौकपर लूटनाक पानक दोकानपर बीड़ी नै पीबैत रही?”

“हँ कहबै।” – बेचन बाजल।

“अच्छा कही तँ।” –राम कुमार कहलक।

“हे विद्याक देवी सरस्वती माता, जँ हम काल्हि चौकपर बीड़ी पीने हएब तँ हमर सातो विद्या नाश कऽ दिहह।” –बेचन किताब छुबि कऽ बाजल।

शिक्षक राम कुमारकेँ डपटैत कहलखिन-

“क्यों रे राम कुमरा, झूठ-फूस का शिकायत करता है।”

“नै सरजी, हम झूठ-फुसिक शिकायत नै करै छी। हम अपना आँखिसँ देखलिऐ, बेचनक मुहसँ धुइयाँ निकलैत रहइ।” –राम कुमार अपना बातपर जोर दैत बाजल।

“क्यों रे बेचना जब तू बीड़ी नै पी रहा था तब तोरा मुँह से धुआँ क्यों निकल रहा था?” –शिक्षक बेचनसँ पुछलखिन।

तैपर बेचन जवाब देलकैन-

“सरजी, हम सत कहै छी, पानक दोकानदारोसँ कहा देब, हम बीड़ी नै पीबैत रही। हम सिगरेट पीबैत रही।”

बेचनक बात सुनि पूरा क्लासक विद्यार्थी भभा कऽ हँसए लागल। शिक्षक सभ विद्यार्थीकेँ शान्त करैत बजलखिन-

“कल हम क्लासमे बताये थे न कि धूम्रपान करने से कैंसर जैसे जानलेबा रोग होता है।”

बेचन बाजल-

“सर, निर्मलीमे एकटा डॉक्टर छथिन ए.पी. बाबू, हुनका देखै छिऐ जे दसे मिनटपर सिगरेट पीबै छथिन। हमर पितोजी ओही डॉक्टरक कम्पाउन्डर छथिन। चौबीस घन्टामे ओहो एक डिब्बा सिगरेट पी लइ छथिन।”

एक मासक बाद बेचन स्कूल आएल आ अपना वर्ग शिक्षककेँ संग कऽ प्रधानाध्यापक लग गेल। प्रधानाध्यापकसँ कहलक-

“सर, हॉलमे नवाँ आ दसमाक विद्यार्थीक बैठक कराउ, हम किछु अपन अनुभवक बात कहबै आ एकटा संदेश सेहो देबइ।”

टिफीनक बाद पूरा स्कूलक विद्यार्थी आ शिक्षक हाँलमे बैसला। बेचन बिना भूमिकाकेँ कहए लगल-

“पूज्यनीय गुरु लोकैन आ प्रिय छात्रलोकैन, धूम्रपानसँ कैंसर सन जानलेबा बेमारी होइ छै, जेकर इलाज असंभव छइ। हमर पिताजी सिगरेट पीबै छेलखिन। हुनका कैंसर भऽ गेलैन। मुंबइक जसलोक अस्पतालमे हुनकर इलाज भेलैन मुदा बीमारी नै छुटल आ हमर पिताजी कालक गालमे चल गेला। तँए, हम अपने सभसँ कहब जे कोनो तरहक धूम्रपान नै करै जाउ।”

बेचनक बातकेँ सभ शिक्षक आ छात्रगण एकसंग थोपड़ी बजा कऽ समर्थन केलैन।

❑

शब्द संख्या : 455

कथनी किछु आ करनी किछु

मनोजजी अपना डेरामे बैस कऽ टेलीविजनपर समाचार देख रहल छला कि हुनकर पिताजीक फोटो टेलीविजनपर देखाए पड़लैन। हुनकर पिताजी गिरधारी बाबू कहैत रहथिन-

“दहेज लेब आ देब पाप छी। हम युवा पीढ़ीसँ आग्रह करबैन जे बिना दहेजक बिआह करैथ।”

ओ आगाँ बजला-

“भगवान हमरा सन्तानक नाओंपर एकटा बेटा देने छैथ। हमर बेटा इलाहाबाद बैंक मीठापुर शाखा पटनामे पी.ओ. पदपर कार्यरत अछि। बरतुहारक लाइन लागल अछि। पच्चीस लाख टका दहेजमे लोक देबए-ले तैयार छैथ मुदा हम प्रतिज्ञा करै छी जे बेटाक बिआह बिनु दहेजक करब।”

मनोजजीकेँ अपन पिताजीपर गर्व भेलैन। ओ मनमे ठानि लेला जे हम बिनु दहेजक बिआह करब।

मनोजजी आधुनिक विचारक युवक छैथ। दहेज-लेब देबकेँ अधला वृत्ति बुझैबला लोक। संगे जाति-पातिकेँ सेहो रूढ़िवादी कार्य मानै छैथ। हिनकर कहब छैन जे प्रगतिशील मनुखकेँ जाति-पातिसँ ऊपर उठि कऽ काज करबाक चाही।

मनोजजीक पिताजी, जिनकर नाओं गिरधारी लाल छिऐन। लोक

हुनका नेताजी कहै छैन। ओ अपनाकेँ लोहियावादी मानितो छैथ आ बजितो छैथ। राजनीतिमे सक्रियता सेहो छैन्हे।

पैछला अप्रिलसँ बिहार सरकार बाल-विवाह आ दहेज प्रथा बन्द करबाक लेल अभियान चलौलखिन अछि। ओही अभियानक क्रममे वाट्सन विद्यालय मनुबनीक प्रांगनममे एकटा भव्य सेमीनारक आयोजन मधुबनी युवा क्लव द्वारा कएल गेल। सेमीनारमे मुख्य अतिथि बिहार सरकारक ऊर्जामंत्री छला। जिलाक सभ विधायक, पार्षद, सांसद विशिष्ठ अतिथिक रूपमे मंचासीन छला। ओही मंचसँ गिरधारी लालजी अपना वकतव्यमे घोषणा केलखिन जे हम बिनु दहेजक अपन बेटाक बिआह करब जेकरा एलेक्ट्रॉनिक मिडिया अपना-अपना चैनलपर प्रमुखतासँ देखौलकैन। प्रिन्टो मिडियापर गिरधारी बाबूक कथनकेँ प्रमुखतासँ छापल गेल।

इलाहाबाद बैंकक जइ शाखामे मनोजजी कार्यरत छैथ ओही शाखामे विभा नामक एकटा लड़की बैंक मित्र पदपर कार्यरत छेली। ओइ लड़कीक योग्यता एम.ए. छल। मुदा ओ बड़ गरीब घरक छेली। हुनकर पिताजी एकटा खाद-बीजक दोकानमे जोख-तौलक काज करै छला।

विभा देखबा-सुनबामे सुन्नैर आ सुशील छेली। मनोजजी मने-मन विचार केलैन जे हम अही लड़कीसँ अपन बिआह करब।

रबि दिन मनोजजी अपना डेरामे चाह पीब रहल छला तखने हुनकर माए-बाबूजी पहुँचलखिन। मनोजजी माए-बाबूक पैरपर गोड़ लगलकैन आ गैसपर चाह बना दुनू गोरेकेँ दैत पुछलखिन-

“जलो पीबै जेबइ?”

तैपर दुनू गोरे एक्केबेर बजला-

“नहि जल नहि पीब।”

मनोजजी बाबूजी दिस तकैत पुछलखिन-

“फोनो-फान नै केलिऐ आ एकाएक आबि गेलिऐ। की कोनो खास बात अछि?”

तैपर हुनकर पिताजी कहलखिन-

“हँ, खासे बात बुझहक। तों जल्दीसँ नहा कऽ तैयार भऽ जा।”

मनोजजी पुछलखिन-

“की केतौ जेबाक कार्यक्रम अछि की? खाना तँ डेरेमे ने खाए लेब आकि होटलमे?”

तैपर गिरधारी लालजी बजला-

“हौ, कल्पना होटल चलबाक अछि। हम सभ स्नान आ पनिपियाइ केने छी। रहल खेनाइक बात तँ खेनाइ कल्पने रेस्टोरेन्टमे हएत।”

मनोजजी छगुन्तामे पड़ि गेला। ओ बजला-

“कल्पना होटलमे कोन काज अछि। आ जखन डेरापर खेनाइक सभ बेवस्था ऐछे तखन होटलमे किए खाएब।”

बेटाक बात सुनि गिरधारी लाल पत्नी दिस तकैत बजला-

“अहाँ किए मौनी बाबा बनल छी की बजबै।”

तैपर मनोजजीक माए बजली-

“बौआ, कल्पना होटलमे हम सभ कनियाँ देखए चलब।”

मनोजजी अकचकाइत पुछलखिन-

“कनियाँ, कोन कनियाँ, हमरा तँ तोहर गप्पक कोन अर्थे ने लगैए।”

ई गप होइते रहए कि गिरधारी लालक मोबाइलक घन्टी बजल। गिरधारी लाल मोबाइलक हरियरका बटन टीपैत बजला-

“हेल्लो, हँ-हँ एक घन्टामे हम सभ पहुँच रहल छी।”

ओम्हरसँ अबाज आएल-

"हम सभ होटल पहुँच चुकल छी। अपने सबहक प्रतीक्षा कऽ रहल छी।"

गिरधारी लाल बजला-

"ठीक छै, ठीक छै। हमहूँ सभ बौआक डेरापर पहुँच गेल छी। बौआ स्नान कए कऽ तैयार हेता आ हमसभ विदा भऽ जाएब।"

ई कहैत ओ फोन काटि देलखिन आ बजला-

"बौआ, परिहारपुरक विनोद बाबू झारखंडमे इंजीनियर छथिन। पाइ कमा कऽ टाल लगा देने छथिन। दस लाख टका नगद, एकटा स्कारपिओ गाड़ी, कनियाँक सभ जेबर आ कपड़ा लत्ता देबए लेल तैयार छथिन। लड़की धनवादमे बी.ए. फाइनलक छात्रा छी। ओ लड़की लऽ कऽ सभ परिवार अपने स्कॉरपिओ गाड़ीसँ पटना पहुँचला हेन। कल्पना होटलमे चारिटा एसीबला कोठरी बूक केने छथिन। खाली तों लड़की देख कऽ 'हँ' कहि दहक। ओना, सभ बात फाइनले अछि।"

अपन बाबूजी गिरधारी लालक बात सुनि मनोजजी छगुन्तामे पड़ि गेला। हुनका टेलीविजनमे देखल अपन पिताजीक देल भाषण, जे कि दहेजक विरोधमे छल आ ओ प्रतिज्ञा मोन पड़लैन। पिताक प्रति घृणा होमए लगलैन। ओ सोचए लगलाह- हमरा पिताजीक करनी आ कथनीमे केतेक अन्तर छैन। एक तरफ युवा वर्गसँ बिना दहेजक बिआह करए-लेल आग्रह करै छथिन आ अपना बेटाक बिआहमे 25 लाखक दहेज चाहै छैथ। वाह रे लोहियावादी नेताजी! यएह सभ समाजक नव निर्माण करथिन।

बेटाकेँ चुप आ अनमनस्क देख गिरधारी लाल बजला-

"मर्र! किए ने स्नान करै छहक। जल्दी नहा कऽ तैयार भऽ चलह ने। बारह बजेसँ पहिने लड़की देखबाक अछि।"

तैपर मनोजजी बजला-

“वाट्सन हाइ स्कूलक फील्डमे जे सेमीनार भेल छल तइमे भाषण अहीं देने रहिऐ ने। हम अपनेक भाषण टी.भी.मे देखलौं-सुनलौं आ दैनिक जागरणमे पढ़बो केलौं। हमरा अहाँक बेटा भेलापर गर्व महसूस भेल आ हम मनमे ठानि लेलौं जे बिनु दहेजक बिआह करब। जइसँ समाजक बीच अहाँक प्रतिष्ठामे चारि चान लगत। मुदा आब हमरा अहाँक बेटा कहाबैमे लाज होइए। सद्यः अहाँक कथनी आ करनीमे फर्क भऽ रहल अछि।”

बेटाक बात सुनि गिरधारी लाल सन्न रहि गेला। काटू तँ खून नहि। ओ करवनो बेटाकेँ देखैथ तँ करवनो पत्नीकेँ।

❑

शब्द संख्या : 808

हमर गहुमकटनी

माए गै नन्दु गिरहत गहुम काटैले कहह आएल छेलौ- बुधनी अपन माए न्योरवालीकेँ कहलक। जखन न्योरवाली साँझमे हटियासँ आएल। ऐ रौदमे गहुम काटैले जाइ छी। केदैन पुछै छै गहुम। दू टके किलो सरकार कोटामे गहुम दइए से तँ खाइये ने सकै छी आ रौदमे जाइ छी मरैले। -न्योरवाली बाजल।

ई गप-सप्प होइते रहए कि मझौरावाली आ बेलहावाली हुक्का पीबए न्योरवाली ऐठाम एली। मझौरावाली पुछलखिन-

"कथी गहुमक चर्चा करै छेलखिन दाइ।"

न्योरवाली बाजल-

"नन्दु गिरहत गहुम कटैले कहए आएल छल। तैपर मझौरावाली बाजल- एहेन लोककेँ खेतमे भूलोसँ गहुम आकि धान काटैले नै जाथु। बोनियाहा बोझ देख कऽ ओकर कलेजा फाटए लगै छै। ऐ रौदमे जे गहुम काटब आ दू मुट्ठी बेसी कऽ बोनियाहा बोझ नै बान्हब तँ रौदमे मरब किए। काटि लिअ अपने।"

"से तँ ठीके कहै छहक।" –न्योरवाली बजली।

मझौरावाली कहलक-

"की कहबैन। पौरुकाँ सालक गप छिऐ। केतेक खुशामद केलक तँ हम ओकरा खेतमे गहुम काटए गेलिऐ। अठारहटा बोझ भेल। एकटा

बोझ आ दू पज्जीकेँ बोनियाहा बोझ बान्हलिऐ। ओ जे देखलक तँ एक्के पैरपर नाचए लगल। कहलक जे एक बोझ कऽ दू बोझ लऽ ले मुदा बोनियाहा बोझ नै देबउ। तैपर हम कहलिऐ- सभटा यएह लऽ जाउथ। हम बोइन नै लेबैन। मंगनीमे काटि देलिऐन। ओ हमरा डेढ़ बोझक बदला तीनटा बोझ दइले तैयार भेल मुदा हमहूँ जिद्दपर अड़ि गेलिऐ। हम कहलिऐ बोइन लेबैन तँ जे बन्हने छिऐ से लेबैन नै तँ नै लेबैन। अन्तमे नाक रग्गैर कऽ बोनियाहा बोझ देबए पड़लैन। दोसर दिनसँ केतबो कहलक मुदा नै गेलिऐ।"

न्योरवाली पुछलक-

"अँइ हइ, डेढ़टा बोनियाहा बोझक बदला तीनटा दइ छेलह तरखन किए ने लेलहक?"

मझौरावाली जवाब देलक-

"ओ जे बोनियाहा बोझ रहए ओइमे पूरा खेतक नीकहा गहुम बिछ-बिछ कऽ देने रहिऐ। डेढ़ेटा बोझमे तीस किलो गहुम झड़ल। जखन कि सरही तीनू बोझमे 18 सँ 20 किलो झड़ैत।"

तैपर बेलहावाली बजली-

"हइ गहुमक खेतीमे लगतो बड़ लगै छइ। टेक्टरक जोताइ, खाद, पानि, बीआ गिरहत क तँ बुझहक खून-चूसा जाइ छइ। ओहो बेचारा की करत। कोनो साल तँ कोनो खेतमे गहुम भौरे चलि जाइत अछि।"

मझौरावाली बजली-

"तइसँ बोनिहारकेँ कोन मतलब। जानए गिरहत। बोनिहार जँ रौदमे गहुम काटत तँ बेसी कऽ बोनियाहा बोझ बन्हबे करत। मंजूर होइ तँ जनसँ कटाबह नै तँ अपने काटि लिअ।"

भोरमे हम अपना पत्नीकेँ कहलयैन-

"न्योरवालीक गहुम काटैले कहि आएल रहिऐ साँझमे। से जा कऽ

कनी देखियौ काटैले खेत पहुँचल की नहि। नै गेल हएत तँ जाइले कहबै।"

हमर पत्नी कहलक-

"ठीक छै जाइ छिऐ।"

कनीकालक बाद हमर पत्नी आबि कऽ बजली-

"नै जाएत। कहलक रौदमे जाइ छी तँ मन घुमए लगैए। हमरा बुत्ते गहुम काटल नहि हएत।"

हम कहलयैन-

"जे ने करए सरकार। जखन दू टके किलो कोटामे गहुम भेटते छै तँ किए कियो रौदमे फिरीशान हएत।"

हमर पत्नी बजली-

"से तँ ठीके कहै छिऐ। जहियासँ सरकार दू टके किलो गहुम आ तीन टके किलो चाउर दिअ लगल हेन तहियेसँ जन-मजदूर महग भऽ गेल।"

हम फेर कहलयैन-

"दू बिगहामे गहुम केने छी। एत्ते लागत लगल अछि। जँ समयपर नै कटत आ जँ बरखा भऽ गेल तँ सभटा गहुमक छिजानैत हएत।"

"से तँ हेबे करत।" –हमर पत्नी बजली।

हम बजलौं-

"कनेक रूपौलीवाली लग जाउ ने। ओ चारि समांग अछि। दू परानी अपने आ दूटा बेटा-पुतोहु। जँ ओ गछि लेलक तँ पाँचे दिनमे सभ गहुम कटि जाएत।"

"ठीक छै। जाइ छी। देखै छिऐ की कहैए।"

हमर पत्नी बजैत विदा भेली।

थोड़ेकालक पछाइत पत्नी आबि बजली-

“ओ सभ मुखियाजीक गहुम कटै छइ। कहलक दू दिन रूकौथ। दू दिनक बाद हिनको काज सम्हारि देबैन।”

हम बजलौं-

“कोन काज सम्हारि देत। गहुमे काटत किने।”

तैपर पत्नी बजली-

“हँ, गहुमे काटत। गहुमे काटबकैं बाजल काज सम्हारि देब। आब की गरीबहा कोनो आजी-गुजी लोक रहल। ओकर कहबाक मतलब ई जे गहुम काटि देब। माने अहाँपर उपकार करब।”

पत्नीसँ हम पुछलयैन-

“ई कोन उपकार भेल? हमरामे गहुम काटत। एककैं दू बोइन लेत।”

हमर पत्नी फेर बजली-

“हँ एकटा बात रूपौलीवाली आर बाजल।”

पुछलयैन-

“की?”

पत्नी-

“कहै छेलए जे बुढ़बा बोइन दइमे बड़ तितम्भा करै छैन। जँ से करतैन तँ हम सभ गहुम नै काटबैन।”

पत्नी आगाँ बजली-

“आ हमहूँ कहि दइ छी। अहाँ बोइन दइमे हल्ला-गुल्ला नै करबै। नै तँ अपने काटब सभ गहुम। हम तँ जाएब नहि। से अखने कहि दइ छी।”

हम कहलयैन-

"ठीक छइ। अहीं जा कऽ बोइन फरियाएब।"

बजली-

"हँ-हँ, हमहीं बोइन फरियाएब।"

दू दिनक बदलामे पाँच दिनक बाद रूपौलीवाली चारू समांगे गहुम काटए हमरा खेत पहुँचल। ऐ बीच हम केकरा-केकरा ने गहुम कटैले खुशामद केलौं। मुदा कियो ने गेल। ढोरबासँ कहलौं तँ ओ कहलक-भुस्सीपर काटए देबै तँ काटि देब। हम सोचलौं गहुमसँ जरूरी तँ भुस्सी अछि। गहुम तँ केतौसँ एक-दू क्विंटल कीनियो कऽ आनि लेब मुदा भुस्सी नै रहत तँ बरद-भैंस की खाएत। केतएसँ आनब। अपना कवि सम्मेलन आ कथा गोष्ठीसँ छुट्टी नै भेटैए। हम ढोरबाकेँ मना कऽ देलिऐ।

जलखै खा कऽ हम गहुमक खेत गेलौं। रूपौलीवाली चारू समांगे सात-आठ कट्ठा गहुम कटने। रूपौलीवाली आ ओकर पुतोहु गहुम पँजियबैत रहए आ ओकर घरबला आ बेटा बोझ बन्हैत रहए। हम खड़ा भऽ कऽ देखए लगलौं। केतौ-केतौ खेतमे चारि पाँजाकेँ एक्के पाँजा रहए। छोटका-छोटका पाँजाकेँ तैंतीसटा बोझ बन्हलक। बड़का-बड़का पाँजाकेँ तीन बोझ तीनटा कोणमे बान्हलक। हम जे देखलौं तँ हमरा बुझबमे कोनो भांगठ नै रहि गेल जे ई तीनू बोझ बोनियाहा बोझ छी। सरही बोझसँ ठामै चारिबड़ बोनियाहा बोझ छल। तामसे हमर टीक ठाढ़ भऽ गेल।

हम बजलौं-

"रूपौलीवाली बोनियाहा बोझ बड़ छोट बान्हलऽ हेन।"

तैपर ओ बाजल-

"बड़ नमहर छइ।"

हम कहलिऐ-

"नै छोट छह। एकटा काज करह तीनटा बोनियाहा बोझक

बदलामे छहटा बोझ लऽ लएह।"

ओ बाजल-

"नओटा देथिन तँ नै लेबैन। लेबैन तँ जे बोझ बान्हलिऐन हेन से लेबैन। नै तँ सभटा बोझ खरिहाँन लगा दैत छिऐन। बोइन नै लेबैन।"

रूपौलीवालीक गप सुनि कऽ आर बेसी तामस लहैर गेल। हम एकटा बोनियाहा बोझक जुन्ना पकैड़ कहलिऐ-

"अँइ! कहह तँ अहिना बोनियाहा बोझ बन्है छह।"

संजोगसँ ओइ बोझक जुन्ना टुटि गेल। सभटा गहुमक पाँज छिड़ियाए गेल। आब तँ भेल पहपैट। रूपौलीवालीक पुतोहु- धबौलीवाली एक्के टाँगपर नाचए लगली। नचैत जोर-जोरसँ अपना सासुकेँ कहह लगली- हम बेर-बेर ऐ भइडाहीकेँ मना करै छिऐ जे एकरा खेतमे धान-गहुम काटए नै आबौथ मुदा ई भइखौकी हमर गप मानबे ने करैए। ई नै देखै छै जे बोनियाहा बोझ देख कऽ ऐ गिरहतक करेजा कटए लगै छइ।

तैपर रूपौलीवाली बाजल-

"जे भेलै से भऽ गेलै। अपना बेटाकेँ खाइ जे आइ दिनसँ एकरा खेत आबी।"

ताबेमे हमर पत्नी खेत पहुँचली। रूपौलीवाली आ ओकरा पुतोहुकेँ एक्के टांगपर नचैत देख पुछलखिन-

"की भेल?"

हमरा बजैसँ पहिनहि रूपौलीवाली बाजल-

"हिनका घरबलाकेँ बोनियाहा बोझ देख कऽ ब्लडपेसर बढ़ि जाइ छैन। हम सभ जाइ छिऐन बोनियोहो बोझ यैहे रखि लौथ।"

हमर पत्नी हमरा कहलैन-

"अहाँ खेतसँ जाउ। हम बोइन फरियेने अबै छी।"

हम पोखैरपर आबि कऽ बैस रहलौं। कनीकालक बाद हमर पत्नी हमरा लग आबि कऽ बजली-

“आब काटब गहुम अपनेसँ। ओ दुनू सासु-पुतोहु बेटा लगा कऽ किरिया खा बाजल जे हिनका खेतमे आब कहियो ने पएर देबैन। अपन असगरे गहुम काटैत रहब। जँ बरखा भऽ गेल तँ हाथो तरक जाएत आ लातो तरक जाएत।”

हम कहलिऐ-

“काल्हिसँ नै काटैले आएत तँ बोनियाहा बोझ किए देलिऐ।”

तैपर हमर पत्नी कहलक-

“बोनियाहा बोझ नै दैतिऐ तँ ओकरासँ मुँह लगाबितौं।”

ई कहैत ओ विदा भऽ गेल। हम सोचमे पड़ि गेलौं।

स्नान कऽ खाना खाइले अँगना अबैत रही तँ डेढ़ियेपर सँ सुनलौं, हमर पत्नी बजै छेली-

“कटतै सरधुआ अपने गहुम। हम तँ किन्नहुँ नइ जेबइ।”

बेटीकेँ कहैत रहए-

“तोहूँ नइ जइहेँ। केतेक खुशामदसँ रूपौलीवाली गहुम काटए गेल छलए, ओकरोसँ टंठा कऽ लेलक।”

हम कहलिऐ-

“अहाँक किए माथ दुखाइत अछि। हम अपने काटब नै हएत तेँ खेतेमे रहत।”

चारि बजे नरहिया बजार जा हँसुआमे धार करा अनलौं। दोसर दिन चारिये बजे भोरमे हँसुआ लऽ गहुम काटए विदा भेलौं। आठ बजे भिनसर धरि गहुम काटलौं। आठ बजेमे बेटी बोतलमे पानि आ चाह नेने आएल। ओना, पत्नी आ बेटी गहुम काटए नै आएल। तँए हमर मन धोर-

धोर रहए। हम बजलौं-

"हम चाह नै पीबौ लऽ जो माएकेँ दीहैन।"

बेटी केतेक कहलक तब हम पानि पीब कऽ चाह पीलौं। चारि बजे बेरमे गहुमक बोझ बान्हि खम्हार आनलौं। रातिमे हबा-बिहाड़ि आएल। हल्का-फुल्का पानि पड़ल। भरि राति नीन नै भेल। सोची चालीसटा गहुमक बोझ अछि। जँ भीज जाएत तँ ओकरा सुखबैमे बापसँ भेँट भऽ जाएत। भरि राति भगवान-भगवान करैत समय बितेलौं।

रातिमे जे हल्का पानि पड़ल रहए तइसँ गहुमक शीश भीजल रहए। हम भोरे निर्मली जा एक हजार टकामे एकटा प्लास्टिकक तिरपाल कीनि अनलौं। सभ बोझकेँ रौद लगा सेरिया कऽ तिरपालसँ झाँपि देलौं। रातिमे बड़का झाँट-बिहाड़ि आएल। बरखो खूब भेल। हमर पत्नी रहि-रहि कऽ अन्ट-सन्ट बजै छेली। मुदा हम चुप्पे रहलौं। भोरमे गहुम देखए गेलौं तँ देखलौं सभ गहुमक गाछ ओछाइन जकाँ पड़ल अछि। देखि कऽ माथ घुमि गेल। मुदा अपन हारल आ बहुक मारल की बजितौं। तेतेक बरखा भेल रहए जे खेतमे केतौ-केतौ पानि लागल रहए। अपना सनक मुँह लऽ कऽ गामपर एलौं। सोचलौं चारि-पाँच दिन रौद केलाक बाद खेतक माटि सक्कत भऽ जाएत तँ गहुम काटब। मगर हाय रे हमर भाग्य। रातिमे फेर एक अछार पानि पड़ल। दिनमे रौद हुअए आ रातिमे बरखा। ई क्रम लगातार चारि-पाँच दिन तक चलैत रहल।

दस दिनक बाद खेतक माटि सक्कत भेल आ गहुम काटै-जोकर भेल। मुदा गहुमक खेतमे घास ऊपर भऽ गेल आ गहुमक गाछ तर पड़ि गेल।

एगारहम दिन हँसुआ लऽ कऽ फेर गहुम काटए गेलौं। मुदा हँसुआसँ गहुम काटले ने होइत रहए, हँसुआसँ जे गहुम काटी तँ सभ गहुम उखैर जाइत रहए। अन्तमे, हाथेसँ गहुम उखाड़ि-उखाड़ि राखए

लगलौं।

ऐगला दिन बेटी गेल। ओ गहुम काटलक। तइकेँ ऐगला दिन पत्नियो गेली ओहो गहुम काटए लगली।

काल्हि सभ गहुम काटब सम्पन्न भेल। आइ थ्रेसरबलाकेँ अलगसँ एक साए टका आ एकटा पोलिथीन गछि रम्भा थ्रेसरसँ सभटा गहुम दौनी करा दाना घर केलौं। साँझमे भूतहा हटिया जा एक किलो रहु माछ आनि पत्नीकेँ कहलयैन-

“नीकसँ रान्हू।”

माछ देख हमर बेटी कहलक-

“पापा, बड़ नीक माछ अनलौं हेन।”

तैपर हमर पत्नी बजली-

“एतेक जे गहुम काटि कऽ घर कऽ देलिऐ तँ एतबो नहि। तोरा बाबूजीकेँ तँ खस्सीक मासु आनक चाही।”

तैपर हम हँसैत बजलौं-

“भुस्सी घर भऽ जाएत तँ ओहो हेतै।

हमर पत्नी बजली-

“गहुम काटि कऽ दौनी भऽ गेल से भेल आ भुस्सी किए ने घर हएत।”

हम हँसए लगलौं।

❑

शब्द संख्या : 1653

जीन्स पैन्ट

साँझखिन बाघ दिससँ घुमि कऽ गामपर एलौं तँ पत्नीकेँ चाहक आढ़ैत देलिऐन। पत्नी चाह बना कऽ नेने एली। हम आ पत्नी चाह पीबए लगलौं। एकटा दिल्लीसँ आएल छौड़ा सड़कसँ जाइत रहए। मोबाइलमे गीत बजबैत रहए- 'जीन्स ढीला करू... ।'

हमर पत्नी बजली-

"जा... । हम तँ बिसैरिये गेल छेलौं। यौ कंचनाक बाबूजी नन्दनीकेँ जीन्स पैन्ट आ टी शर्ट कीनि कऽ आनि दियौ।"

चाहक चुस्की लैत हम पुछलयैन-

"एतेक छोट बच्चाकेँ जीन्स पैन्ट। कीनलाक साले भरि पछाइत छोट भऽ जेतइ।"

पत्नी बजली-

"से तँ ठीके। नन्दनी तेहेन ने बढ़नुक अछि जे साले भरिमे सभ कपड़ा आ जूत्ता-चप्पल ओछ भऽ जाइ छइ।"

हम पुछलयैन-

"तखन?"

पत्नी बजली-

“कनी नमहरे कीनब। जीन्स पैन्ट तँ छौड़ा सभकेँ देखै छिऐ जे नीचासँ मोड़ने रहै छइ।”

तैपर हम पुछलिऐ-

“अमरेलाकट फ्रॉक आ चुस्त सलवार आनि देबै से नै नीक हएत की? लड़की सभकेँ तँ अखन यएह ड्रेसमे देखै छिऐ। लड़कीक लेल तँ अखन यएह ड्रेसक चलती अछि।”

पत्नी बजली-

“जीतू, बौआ-ले जीन्स पैन्ट आ टी शर्ट कीनि कऽ आनलक हेन। जखनसँ नन्दनी देखलक हेन तखनसँ ओहो जिद्द केने अछि जे हमहूँ जीन्स पैन्ट आ टीशर्ट लेब।”

हम कहलयैन-

“अच्छा ओकरो-ले आनि देबइ।”

नन्दनी हमर नातिन। जेठकी बेटी कंचनाक जेठ सन्तान। उमेर पाँच बरख। हमरे सभ लग रहैत अछि। जीतू हमर भातीज। ओकरा एकटा बेटा, नाओं प्रकाश। सभ कियो ओकरा ‘बौआ’ कहैत अछि। ओकर उमेर सात बरख अछि।

दुर्गापूजाक समय। आइ पंचमी तिथि छी। सभ कियो धिया-पुता-ले नव-नव कपड़ा कीनि-कीनि अनैत। हमरो भातीज जीतू सेहो अपन धिया-पुता-ले कपड़ा कीनि कऽ आनलक। हमर परिवार आ हमर जेठ भैयाक परिवार एके अँगनामे अछि। एक्के अँगनामे रहने नन्दनी जीतूक बेटाक जीन्स पैन्ट आ टीशर्ट देखलक, ओहो नानीसँ कहए लगल- नानी हमहूँ जीन्स –पैन्ट आ टीशट लेब।’

चाह पीला पछाइत हम भैंस दुहि अँगना अबैत रही, तेतबेमे हमर छोटकी बेटी वीणाक संगे दुर्गास्थानसँ साँझ दऽ नन्दनी आएल। हमरा

देखते बाजल-

"नाना जीन्स पैन्ट आ टीशट आनि दियऽ।"

हम कहलिऐ-

"काल्हि आनि देब।"

हाथ-पैर धो, कुर्रा-आचमन कऽ हम गोसाँइकेँ धूप दऽ भगवती माएकेँ फोटो लऽ धूप-आरती देखा कनेक काल दुर्गा पाठ केलौं।

खाना खेला पछाइत जखन ओछाइनपर सुतल रही मुदा रही जगले। तँ किछु पिछुलका बात सभ मोन पड़ि गेल। सिनेमा जकाँ एक-एकटा दृश्य हमरा सामने आबए लगल।

एम.ए. केला पछाइत केतेको बेर नौकरीक लेल परियास केलौं मुदा नौकरी नै भेटल। भेटबो केना करैत। कहावत छै ऐ जुगमे भगवान भेटब असान अछि मुदा नौकरी भेटब मोसकिल। तहूमे सरकारी नौकरी तँ आरो मोसकिल अछि। जेना-तेना खेती-गृहस्ती कऽ अपन परिवारक गाड़ी खींचए लगलौं।

नेपालमे प्रजातंत्रक उदय भेल। प्रतिनिधि सभाक चुनावक घोषना भेल। हमरो ससुर महराज सक्रिय राजनीतिमे छैथ। सभ कियो हुनका नेताजी कहिते छैन। हुनको पार्टी टिकट दऽ उम्मेदवार बनौलकैन। हमरा पता चलल तँ हमहूँ हुनका चुनावमे मदत करए गेलिऐन। आर्थिक मदत तँ नहि केलिऐन मुदा अपना शरीरसँ एक मास धरि खटल रही। खाएर जे किछु...।

हमर ससुर महराज चुनाव जीतला। जीतला पछाइत काठमांडो गेला। संसदक सत्र समाप्त भेला पछाइत दुर्गापूजामे गाम एला तँ हमरो पिताजीसँ भेँट करए हमरा गाम एला। हमरा कहलैन, आऊ राजविराज। ओतए कोनो बिजनेस-बेपारक बेवस्था कऽ देब। मुदा हम जाइले तैयार नहि छेलौं। पत्नी बेर-बेर चरियाबए लगली। बेर-बेर कहैथ- जखन

बाबूजी कहि गेलखिन हेन तँ कोनो-ने-कोनो बिजनेस-बेपारक बेवस्था कइये देता। तैयो हमर मन जाइले तैयार नहि भेल।

एक दिन हमर लंगोटिया मीत मदनजी एला। ओ निर्मली महाविद्यालयमे किरानी छैथ। हमर पत्नी हुनका सभ गप कहलकैन। मदनजी हमरा कहला-

“जखन सांसदजी तोरा राजविराज अबैले कहलखुन हेन तँ तों किए ने जाइ छी। कोनो बिजनेस-बेपार करमे तँ परिवारक आर्थिक हालत सुधैर जेतौ। खेती-गृहस्तीसँ पेटो चलब मोसकिल छौ।”

तैपर हम कहलिऐ-

“रौ मीता, से तँ ठीके कहै छीही। मुदा सासुरमे रहएबलाकेँ कोन-कोन अपमान सहए पड़ै छै से तूँ कोनो नै बुझै छीही।”

मदन बाजल-

“हम सभ बुझै छिऐ। मुदा समय-समयक बात छइ। अखन तोहर दिन कुदिन छौ तँए तों ऐ गप-सप्पपर विचार नै करहीन। जखन दूटा पाइ कमाइ लीहेँ तँ ऐ गप-सप्पपर विचार करिहेँ। रौ अपन काज रहै छै तँ लोक गदहोकेँ बाप कहै छै आ सांसदजी तँ तोहर ससुर छथुन जे एकमानेमे बापे भेलखुन।”

खाएर हम राजविराज गेलौं।

नेताजीक एकटा डेरा काठमांडोमे आ दोसर राजविराजमे। जखन संसदक सत्र चलैत छल तँ ओ काठमांडोमे रहै छला नहि तँ राजेविराजमे। नेताजी राजेविराज संसदीय निर्वाचन क्षेत्रसँ जीतल छला। दोसर गप ई जे राजविराज सप्तरी जिल्लाक सदर मुकाम सेहो छी। नेताजी जिल्ला मुख्यालयमे रहि जिलाक राजनीति आ प्रशासनक गतिविधिपर सेहो नजैर रखैत छला। खाएर जे किछु...।

हम नेताजीक डेरापर रहए लगलौं। डेराक काज सेहो करए

लगलौं। जेना- बजारसँ जारैन, तरकारी, किराना समान सभ हमहीं कीनि आनी। डेराक आरो काज सभ करी। नेताजी बिजनेस-बेपारक कोनो गप्प नै करैथ। ऐ तरहें छह मास बित गेल।

एक दिन हम अपन ससुर महराजसँ कहलयैन-

“बाबूजी छह मास बीति गेल मुदा एखन तक हमरा बिजनेस-बेपारक कोनो जोगार नै भेल?”

तैपर ओ बजला-

“एना धड़फरेलासँ काज हएत! हम बेवस्थामे लागल छी किने। अहाँ असथिरसँ रहू।”

एक मासक बाद एक दिन हम फेर हुनका टोकलिऐन-

“बाबूजी, जँ बिसनेस-बेपारक बेवस्था नै हएत तँ ऐठाम कथी-ले समय बेरबाद करब।”

तैपर ओ बजला-

“दिल्ली-पंजाब जाएब की?”

हम कहलयैन-

“दिल्लियो पंजाब तँ लोके जाइत अछि किने, की कोनो जानवर जाइत अछि।”

ओ हमरा दिस ताकए लगला। कनीकालक बाद बजला-

“जँए सात-आठ मास रूकलौं तँए दू-तीन मास और रूकि जाउ। हम कोनो बेवस्था कऽ देब।”

तही बीच हमर सारहु एला, तँ ओ हमरा पुछलैन जे की भेल कोनो बेवस्था अहाँक बिजनेस-बेपारक?

हम कहलयैन-

“अखन धरि कहाँ कोनो बेवस्था भेल हेन। कनेक अहूँ बाबूजीसँ

पुछियौन ने।”

तैपर ओ बाबूजीसँ (ससुरसँ) बात केलैन आ हमरा कहलाह-

“हिनका (ससुरक) फेरमे नै रहू। ई अहाँकेँ ठकै छैथ।”

तैपर हम कहलयैन-

“दू-तीन मासक नाओं कहने छैथ। तँए तीन मास धरि आओर प्रतीक्षा करब।”

सारहु कहलैन-

“जँ तीन मासक बाद बाबूजी बिजनेसक लेल ढौआक बेवस्था नै कऽ देता तँ अपन डेली-खोनी लेब आ वापस इण्डिया चल जाएब। हम मने-मन सोचलौं कहै तँ छैथ बिलकुल ठीक।”

आ हम तीन मास आओर रूकि गेलौं।

राजविराजमे लोक सभकेँ जीन्स पैन्ट पहिरने देखिऐ। ओतुक्का बेसी लोक फुलपैन्टे-शर्ट पहिरैत अछि। अपना ऐठाम बिहारमे तँ लोक धोती-कुरता, पैजामा-कुरता आ फुलपैन्ट-शर्ट पहिरैत अछि मुदा नेपालमे धोती-कुरताक चलैन बुढ़-बुढ़ानुस मात्रमे अछि। ओहो भारतीय मूलक बुढ़-बुढ़ानुसमे। हमरो दुनू सार आ सारहु सभ जीन्स पैन्ट पहिरैत अछि। ओ सभ नेताजीक डेरापर जीन्स-पैन्ट पहिर कऽ अबैत रहैथ। हमरो मोनमे भेल जे हमहूँ जीन्स पैन्ट पहिरतौं।

भादव मासक समय रहइ। नेताजी सपरिवार काठमांडोमे छला। संसदक सत्र चलैत रहइ। भोला भायजी नेताजीक मुहलगुआ छथिन। ओ काठमांडो जाइबला रहथिन। एक दिन हुनका कहलयैन- भायजी, हमरो मन होइए जे हमहूँ जीन्स पैन्ट पहिरतौं। तैपर ओ बजला- मन होइए तँ चलु अखने कीनि दइ छी। हम कहलयैन- अखन टका कहाँ अछि। ओ बजला- अहाँ टकाक चिन्ता जुनि करू। अहाँ नेताजी कक्काक जमाए छिऐन, हमरो बहनोइए भेलौं। हम अहाँसँ जेठ छी। नीक जीन्स

पैन्ट सात-आठ साए टकामे हएत। सएह ने। कोनो दस-बीस हजार लागत।

हम कहलयैन-

"भायजी, बहुत-बहुत धैनवाद।"

ओ पुछलैथ-

"तँ हमरा पाइक जीन्स नै लेब?"

हम कहलयैन-

"नै भायजी, से गप नै छइ। जँ लोक बुझत तँ कहत- नेताजीक जमाए लोकसँ कपड़ा खरीदाबैत अछि। आ जँ हमर सार सभ बुझता तँ ओ सभ आर कुटिचौल करता।"

भोला भायजी बजला-

"कियो नहि बुझत।"

हम कहलयैन-

"भायजी, एकटा उपाय अछि। हम दर्जीसँ लम्बाइ आ कमर नपबा लिखि कऽ अहाँकेँ दऽ दइ छी। अहाँ आइ काठमांडो जाइए रहल छी, नेताजीसँ कहबैन खरीद देता।"

ओ बजला-

"बड़ सुन्नर। चलु अखने मिथिला टेलर्समे नपबा कऽ लिखि लइ छी।"

सएह केलौं। दुनू गोरे मिथिला टेलर्समे जा लम्बाइ आ मोटाइ नपबा कागजपर नोट कऽ भोला भायजीकेँ दऽ देलिऐन। साँझमे मोरंग एक्सप्रेस बसपर चढ़ि ओ काठमांडो चलि गेला।

एक सप्ताहक बाद भोला भायजी काठमांडोसँ घुरला। हमरा डेरापर एला। हमरा भेल जे शायद जीन्स पैन्ट देबए एला हेन।

कुशल-समाचारक बाद ओ बजला-

नेताजी काका, अहाँक नाप रखि लेलैथ, दुर्गापूजामे गाम औता तँ नेने औता।

हम कहलयैन-

"भायजी, हम जीन्स पैन्ट पहिर लेलौं।"

तैपर ओ बजला-

"किए, अहाँकेँ होइए जे नेताजी काका जीन्स नै नेने औता?"

हम कहलयैन-

"से देखबे करब।"

कलशस्थापनसँ तीन दिन पहिनहि नेताजी सपरिवार काठमांडोसँ राजविराज पहुँचला। दोसर दिन राजेविराजमे सभ परिवार लऽ कपड़ा कीनलैथ। कपड़ा कीनलाबाद डेरापर एलैथ तँ हम कहलयैन- पूजामे हमहूँ गाम जाएब। तैपर ओ बजला- ठीक छै, काल्हि भोरे चल जाएब। कनीकाल रहि फेर बजला- अहाँ भेला दिया जीन्स पेन्टक नाप भेजने रहिऐ। से तँ राजविराजोमे भेटै छइ।

हम किछु नै बजलौं। हमर मन खसि पड़ल। भोरे हम बस पकैड़ गाम आबि गेलौं। मुँहक उदासी देख पत्नी पुछलैन-

"लगल कोनो जोगार बिजनेस-बेपारक?"

हम कहलयैन-

"जे एकटा हजार-पान साए टकाक जीन्स नै खरीद कऽ दऽ सकै छैथ ओ बिजनेस-बेपार करैले पच्चीस-पचास हजार टकाक बेवस्था केना कऽ सकता।"

पत्नी पुछलैन-

"से की, से की?"

हम सभ गप कहि कऽ सुना देलिऐन। ओ सुनि कऽ दुखी भेली। जखन पत्नीकेँ सभ गप कहैत रहिऐन तँ हमर माए सभ गप सुनि गेली। दोसर दिन भोरे माए पुछलक-

"केतेकमे जीन्स पेन्ट होइ छइ?"

हम कहलिऐ-

"सात-आठ साए टकामे।"

माए पुछलक-

"निर्मलीमे भेट जेतौ किने?"

हम जवाब देलिऐ-

"भेट जेबाक चाही।"

माए हमरा एक हजार टका देलक आ कहलक-

"जलखै खा कऽ निर्मली जो आ जीन्स पेन्ट कीनि-ले।"

हम कहलिऐ-

"तों रूपैआ केकरासँ आनलीही?"

तैपर माए बजली-

"आम खाइसँ मतलब राख ने गाछ किए गिनै छँह।"

आगाँ बजली-

"पाँच मास पहिने एकटा छागर एक हजार टकामे बेचने रही। ओ टका पीपरावाली लऽ गेल रहए। काल्हि वएह टाका दऽ गेल हेन।"

हम कहलिऐ-

"गइ माए, ई टका तों राख। हम अखन जीन्स पैन्ट नै लेब। तोरा हाथमे टका रहतौ तँ बेर-बेगरतामे काज देत।"

तैपर माए बजली-

"अँइ रौ, तोहर मन जीन्स पैन्ट पहिरै कऽ भेलौ आ ससुरसँ मांगलीहीन तँ नै देलखुन जखन कि अपन सभ परिवार-ले कपड़ा कीनलखिन। जो अखने निर्मली आ कीनि आन ग जीन्स पैन्ट आ पहिर कऽ ससुरकेँ देखा दहीन ग।"

जखन माए संग ई गप-सप्प होइत रहए तखने बाबूजी चाह पीबऽ अँगना एला तँ माएसँ पुछलखिन-

"कथीक घोल-फचक्का भऽ रहल छल।"

माए बाबूजीकेँ सभ गप कहलखिन।

बाबूजी बजला-

"नन्दुकेँ तँ फुलपेन्ट छेबे करइ।"

तैपर माए बजली-

"जीन्स पैन्ट लेत।"

बाबूजी पुछलखिन-

"जीनस पेन्ट केकरा कहै छइ?"

माए बजली-

"काल्हि धीरू बौआ जे नीलरंगक फुलपेन्ट पहिरने रहए, वएह जीन्स पेन्ट छी। ससुरकेँ काठमांडो नाप पठौने रहइ मुदा ओ नै कीनि देलखिन। जखन कि अपन बेटा-पुतोहु, पोता-पोती सभ-ले कपड़ा कीनलखिन। हमरा लग एक हजार टका छल वएह देलिऐ हेन।"

तैपर बाबूजी पुछलखिन-

"आ बिजनेस-बेपारक की भेलइ?"

हम कहलयैन-

"कम्मे उम्मीद अछि।"

हमर बाबूजी हमरा कहलैन-

"हमर बात मानवें तँ ससुरक आशा छोड़। अखन जीनसो पेन्ट नै कीनि। एक हजार टका माए लग छौ आ हमहूँ काल्हि दू हजारक भूसी बेचलौं हेन। दुनू मिला कऽ तीन हजार भेलौ। दू हजार टकाक इन्तजाम आओर कऽ ले। पाँच हजार टका पूजी लगा कऽ कोबीक खेती कर, कपारो बुड़ि जेतौ तँ 70-80 हजार टका आमदनी हेबे करतौ।"

बाबूजीक विचार हमरा नीक लगल। दस कट्ठा ऊँचरस खेत, जइमे सैठी धान रहए, खाली भऽ चुकल छल। ओही खेतमे बाड़ीमे राखल सड़लाहा गोबर गिरा देलिऐ। संयोग ई रहए जे खेत सड़के कातमे अछि। सभटा सड़लाहा गोबर टायरसँ उघि कऽ खेतमे देलिऐ। मधुबनी जा हरगोविन्द बीज भण्डारसँ हाइब्रीडबला कोबीक बीआ लऽ अनलौं। दरबज्जेपर दस छिट्टा माटि दऽ कोबीक बीआ पाड़लौं। उचित देखभाल करैत रहलौं। एम्हर खेतक तैयारीमे सेहो जुटि गेलौं। बीससँ पच्चीस दिनमे कोबीक बीआ रोपै जोग भऽ गेल। खेतेमे दसटा कियारी बना कऽ सभटा कोबी गाछक थाला लगा देलौं। दस-बारह दिनपर कियारीमे सँ थाला काटि-काटि सभटा कोबीक पौधाकेँ उखारि-उखारि खेतमे रोपलौं। समय-समयपर कमठान, कीटनाशक दबाइक प्रयोग आ सिंचाइ करैत रहलौं। कोबी नीक सुतरल। एक-एकटा फूल कमतीमे दू किलोक भेल। ओना, तीन किलोसँ साढ़े तीन किलोक फूल सेहो भेल। अगता खेती रहए तँए भाव सेहो नीक पकड़ाएल। पैकारे सभ पनरह साए रूपैये क्विंटल खेतेपर सँ लऽ गेल। सभ खर्चा काटि कऽ दू लाख पच्चीस हजार टाकाक आमदनी भेल। बाबूजी कहलैन जे निर्मली जा कऽ दूटा जीनस पेन्ट आ दूटा टीशट कीनि आ।

हम जलखै खा निर्मली गेलौं। ओतए हनुमान रेडिमेडमे एकटा नीलरंगक आ एकटा मटमैला रंगक जीन्स पैन्ट कीनलौं। तेनाहिये एकटा कारी रंगपर उज्जर-उज्जर धारी आ एकटा हरियर रंगपर उज्जर-उज्जर धारीबला टीशर्ट कीनलौं।

सासुरमे पितिऔत सारिक बिआह रहए। हमरो दुनू परानीकेँ कार्ड भेज कऽ मंगौने रहए। तहूमे हमरा अलगसँ कार्ड भेजने रहए। तखन केना ने जइतौं। माए सेहो कहलक जे जो जीन्स पेन्ट पहिरकऽ ससुरकेँ देखा दही ग।

हम सासुर गेलौं। बिआहक दिन चारि बजे दिनमे लड़की आ महिला (सारि-सरहोजि) सभकेँ देखलिऐ मेकप कऽ रंग-बिरंगक कपड़ा पहिरैत। कियो बनारसी साड़ी पहिरैत तँ कियो जार्जेट।

विवाहितो आ अविवाहितो लड़की सभ रंग-बिरंगक सलवार-सूट पहिरलक। तेनाहिये हमर सार सभ आ सारहु सभ सेहो किछु गोरे जीन्स पैन्ट-टीशर्ट आ किछु गोरे पायजामा-कुरता पहिर-पहिर दरबज्जापर एला। तखन हम धोतीए-कुर्ता पहिरने रही। हमर पत्नी हमरा एकटा कोठरीमे बजा कहलैन- जीन्स पेन्ट आ टीशर्ट जे अनने छी से कोन दिन ले।

हम नील रंगक जीन्स पैन्ट आ हरियरका टीशर्ट पहिरलौं। पहिर कऽ जखन कोठरीसँ निकललौं तँ हमर सासु-ससुर ओसारपर राखल एकटा चौकीपर बैसल छला। हमरा पाछाँ हमर पत्नी सेहो छेली। हमरा जीन्स पैन्ट आ टीशर्टमे देख हमर सासु हमरा पत्नीकेँ कहलखिन-

“देखही तँ पाहुनक देहमे जीन्स पेन्ट केतेक नीक लगै छैन। कतेकमे कीनलखुन हेन।”

तैपर हमर पत्नी जवाब देलखिन- “जा...। अखने बिसैर गेलही। दुर्गापूजामे जे काठमांडौसँ कीनि कऽ अनने रही सएह ने जीन्स पेन्ट छिऐ।”

हमर सासु हमरा ससुर दिस ताकए लगली आ हमर ससुर एकबेर हमरा पत्नी दिस देख मुड़ी निच्चाँ मुहेँ गोंइत लेलैन।

❑

शब्द संख्या : 1648

भरदुतिया

आइ भरदुतिया छी। भगवंती दाय भोरे उठि अँगना-घर नीप पीठार सेहो पीसली आ ओइसँ बीच अँगनामे अरिपन बनौली। अरिपन बना पान, मखान, सुपारी आ कुमहरक फूल आनि कऽ रखली। अपना दलान तँ नहि छैन तखन एकटा सोकबा जरूर छैन। सोकबामे एकटा दू-जनियाँ चौकी छैन कोनो आएल-गेल पर-पाहुन अबै छथिन तँ ओही सोकबामे सुतै-बैसै छथिन। भगवंती दाय ओइ सोकबाकेँ झाड़ि-बहारि गोबरसँ नीपलैन आ चौकीकेँ सेहो कपड़ा भिजा पोछि देलखिन। चौकीपर तोसक-तकिया आ नवका जाजीम ओछौने रहथिन। गामेमे एकटा टेन्ट हाउस छै जेतए-सँ दूटा कुर्सी सेहो आनि कऽ रखने छेली। हिनका पूरा बिसवास छेलैन जे डॉक्टर विनीत बौआ भरदुतियाक नौत पुरए जरूर आओत। बिसवासो केना ने होइतैन बौआ की कोनो दूरमे थोड़े छथिन ओ तँ निर्मलीए अस्पतालमे नौकरी करै छथिन। तीनियेँ मास पहिने मोतीहारी अस्पतालसँ बदली भऽ निर्मली अस्पताल एला हेन। निर्मलीसँ बेंगा गामक दूरीए केते अछि। एन.एच.सँ औत तँ लगघक पनरह किलोमीटर नहि जँ महुआ गाम दऽ कऽ औत तँ दस-बारह किलोमीटर।

काल्हिये साँझमे भगवंती दाय रेलबे पुलक निच्चाँ जे हाट लगैत अछि ओतए जा रेबा माछ कीनि कऽ अनलखिन आ रातिमे कर लगा कऽ रखि लेलखिन। डॉक्टर विनीतकेँ रेवा माछ बड़ पसिन छैन। पहिने जखन

पढ़िते रहैथ आ कहियो-काल छुट्टीमे जे घर आबैथ तँ भगवंती दाय ओतए बेंगा जरूर अबै छला। कोसी मेहक रेबा माछक तरूआ आ चूराक भूजा खाइ छला। भगवंती दाइक दुल्हा जँ बड़का माछ बुआरी आकि भून्ना कीनए चाहैथ तँ विनीत मना कऽ दैत रहैन। ओ कहैत रहैन जे पाहुन बड़का माछमे बेसी पाइ किएक फँसाएब से नै तँ रेबे माछ कीनि लिअ। खाइयोमे स्वादिष्ट आ पाइयो कम खर्च हएत।

भगवंती दाय सभ ओरियान कऽ स्नान करए विदा भेली। बाड़ियेमे चापाकल। ओ सोचलैन जे पहिने स्नान कऽ लइ छी। बौआ औता तँ नतक बाद पहिने चाह-बिस्कुट देबैन। जाबेत डॉक्टर बौआ चाह पीता ताबेतमे गैसपर भात आ माछक तीमन बना लेब। गैसपर खेनाइ बनबइमे की बेसी समय लगैत अछि। ओइपर तँ जल्दीए खेनाइ बनि जाइत अछि। अखन जे खेनाइ बना लेब आ जँ बौआकेँ कोनो बेरामी आबि जानि तँ हुनका एतए ऐबामे देरी भऽ जेतैन तँ खेनाइ ठंढा भऽ जाएत। ठंढा खेनाइमे कोनो स्वाद थोड़े रहैत अछि। अहुना बौआ गरमे खेनाइ खाइत अछि।

ओ स्नान कऽ कपड़ा बदैल आँगन आबि गेली। एक मन होइन जे खेनाइ बना ली, फेर सोचैथ नहि-नहि अखन दसो ने बजल हेन, अखन खेनाइ नइ बनाबए।

भगवंती दाय रहि-रहि कऽ खने डेढ़ियापर अबैथ तँ खने सड़क दिस ताकैथ जे डॉक्टर बौआ अबैत अछि कि नहि। भगवंती दाय अखन तक निराहारे छेली। सोचैथ निराहारे रहि बौआक नौत लेब।

ओ डेढ़ियापर आबि बोरा ओछा कऽ डॉक्टर विनीतक प्रतीक्षा करए लगली। हुनका एकाएक पहिनुका बीतलाहा बात सभ मोन पड़ि गेलैन। माए-बापक केतेक दुलारू रही जे बाप हमर नाओं भगवंती रखलैथ। लदनियाँ गामक नामी-गामी परिवारमे हमर जनम भेल रहए। दूटा बेटापर सँ हमर आ विनीतक जनम एक संगे भेल। यानी हमरा

माएकेँ जौंआँ बच्चा भेल रहए। माए कहै छेली जे पहिने बेटीए जनम लेलक तेकर बाद बेटा जनम लेलक। हमरा संगे जे एकटा बेटाक जनम भेल तँए बाबू हमरा भगवंती कहए। बादमे हमर नाओं भगवंती रहि गेल। हमरा संगे जे बौआ जनम लेलक तेकर नाओं विनीत रखलखिन। हमरासँ जेठ दू भाँइ आओर छैथ। बाबू आ माएकेँ इच्छा रहैन जे दूटा बेटा तँ भगवान देलैन से नहि तँ आब जँ भगवान एकटा बेटी दइतए तँ नीक होइत। भगवानो सुनलकैन आ जोड़ा लगा एकटा बेटा आ एकटा बेटी जौंए सन्तान देलकैन। माए कहैत रहए जे तोरा जन्मपर बाबू सत्यनारायण भगवानक पूजा आ एगारह मूरती साधुक भण्डारा आ तैसंग गामक बारहो-बरणकेँ भोज खुओलखिन। हम आ विनीत संगे-संग गामक स्कूलमे पढ़ैत रही। मिडिल स्कूल धरि गामेमे पढ़लौं। मुदा हाइ स्कूल अपना गाममे नै रहए। हाइ स्कूल बरूआरमे रहए जे लदनियाँ गामसँ दूर अछि। तइ दिनमे दर-देहातमे लड़की साइकिल पर नै चढ़ैत रहइ। तँए हमर पढ़ाइ मिडिले स्कूल धरि रहि गेल। हमरासँ जेठ दुनू भाँइ मैट्रिक पास कऽ निर्मली कौलेजमे पढ़ैत। एक भाँइ- पवन तँ बी.ए. धरि पढ़ला मुदा सभसँ जेठ भाय ललनक बिआह भऽ गेलाक कारणे ओ परिवारेमे ओझराए गेला। पछाइत खेती-गृहस्तीमे बाबूजीकेँ संग पुरए लगला। माझिल भाय पवन बी.ए. पास केला पछाइत तीन-चारि साल धरि नौकरीक लेल परियास केलैन मुदा जखन नौकरी नै भेलैन तँ ओ दिल्ली चल गेला। मुदा कपार संग देलकैन। दिल्लीमे नीक काज भेट गेलैन। अखन ओ अपन परिवारक संग दिल्लीए-मे बसि खुशीसँ रहि रहल छैथ। दिल्लीमे अपन घर-दुआर छैन।

विनीत बरूआर हाइ स्कूलमे अपना वर्गमे प्रथम स्थान अनैत। मैट्रिको परीक्षा 75 प्रतिशत अंकसँ उत्तीर्ण भेला। परिवारक लोकक मनोबल बढ़ल। सी.एम. साइंस कौलेज दरभंगामे नाओं लिखौलक। ओतए-सँ इन्टर केला पछाइत मेडिकलक तैयारीक लेल पटना चल गेला।

मेडिकल कौलेजमे एडमीशनक लेल आयोजित परीक्षामे बैसल आ पहिलुके बेर सफलता भेटलै। पी.एम.सी.एच.मे एडमीशन भेलइ।

जखन हमर उमेर पनरहे-सोलहे बर्ख भेल रहए तखने बाबूजीकेँ हमर बिआहक चिन्ता हुअ लगलैन। सत्तरह बर्ख पूरैत-पूरैत हमर बिआह बेंगा गामक एकटा सुभ्यस्त गृहस्थ परिवारमे भऽ गेल। हमरा ससुरकेँ तइ दिनमे अस्सी बिगहा खेत रहैन। कोसीक पलाड़ी, खूब उपजा-बारी होइत रहैन। बड़का-बड़का सखुआक खाम्हपर बड़का-बड़का घर रहैन। सातटा महींस, चारिटा गाए आ आठटा बरद रहैन। अदहासँ बेसी खेत बँटाइ लगल रहैन। हमर दुल्हा मैट्रिक पास करि दुधपेरा मशीन चलबै छला। मशीनसँ ओइ समयमे दस हजार टका महिनामे बँचि जाइ छेलैन। अठारह बर्ख पुरैत-पुरैत हमर गौना भऽ गेल आ हम सासुर आबि गेलौं। हमरा दूटा दीअर आ एकटा ननैद रहए। ननदिक बिआह-दुरागमन भऽ गेल रहए जे सासुर बसै छेली। दुनू दीअर निर्मली कौलेजमे पढ़ै छला। हमरा सासुर एलाक पाँचम बर्खक बात छी। एकाएक कोसी महरानी कटनियाँ करए लगलखिन। एक्के रातिमे बाध काटि गामोकेँ काटि घार बना लेलखिन। घरमे जे अनाज आ सर-समान, लत्ता-कपड़ा रहए कोहुना कऽ लोक बँचौलक। मुदा घर सभ कोसीमे भँसि गेल। मात्र एकटा घरक सांगह (खाम्ह-खम्हनी) बँचि सकल। बादमे खेतो सभ धारे भऽ गेल। उपजा-बाड़ीक दिक्कत हुअ लगल। बूतातो-जोकर अन्न नै उपजइ। तीन भाँइक भैयारी भेने परिवारो नमहर भऽ गेल रहए। पहिने दुनू दिअर पढ़ाइ छोड़ि दिल्ली कमाइले गेला। ओइ समयमे जखन कोसीक उपद्रव नै भेल रहए तँ विनीत जे पटनामे डॉक्टरी पढ़ैत रहए, छुट्टीमे अबै छल। ओकरा रेबा माछक तरल आ चूरा भूजा बड़ पसिन छेलइ। मुदा जहियासँ विनीत सरकारी नौकरी करए लगल तहियासँ बेंगा नै आएल हेन।

साइकिलक खड़खड़ेनाइसँ भगवंती दाइक धियान भंग भेलइ। देखलक तँ बड़का भैया छेलखिन। तुरंते भैयाकेँ पैरपर गोड़ लगलकैन आ

आँगन जा एक डोल पानि आ लोटा आनि कऽ हाथ-पैर धोइले कहलकैन। जाबे जेठ भाय ललनजी हाथ-पैर धोला ताबेमे बहिन चाह बना कऽ नेने एली आ पुछली-

"भैया जलो पीब?"

ललन कहलखिन-

"हँ, जलो पीब।"

तुरन्ते भगवंती दाय लोटा आ गिलास माजि पानि आनि कऽ देलकैन।

ललनजी जल पीब चाह पीबए लगला। बहिन पुछलकैन-

"भैया स्नान करबै की केने छिऐ?"

तैपर ललन कहलकैन-

"नहि, स्नान नै केने छिऐ। चाह पीब कऽ पहिने स्नान करब पछाइत नौत पुरब।"

बहिन-

"बड़बढ़ियाँ।"

'बड़बढ़ियाँ' कहि भगवंती दाय बाल्टीन आ लोटा लऽ कलपर जा पानि भरए लगली। एक बाल्टीन पानि भरि कपड़ाबला साबुन आ देहबला साबुन सेहो कलपर रखि गेली आ भैया लग आबि बजली-

"भैया, अहाँ जाबे नहाएब ताबे हम खेनाइ बना लइ छी। गैसपर जल्दीए खेनाइ बनि जाएत।"

ललन बजला-

"अच्छा ठीक छइ। हम नहा लइ छी, बड़ गरदा पड़ल अछि।"

भगवंती दाय-

"दुनू साबुन कलेपर अछि।"

ललन-

"ठीक छइ।"

जाबे ललनजी स्नान केलैथ ताबेमे खेनाइयो बनि गेल। स्नान केलाक बाद बहिन भगवंती दाय भैया ललनकेँ अरिपन जेतए बनेने छेली तइ अरिपन लग पीढ़ीयापर बैसा भैयाक हाथमे पीठार आ सेनूर लगौली। पीठार आ सेनूरक टीका भैयाक माथमे सेहो केली। पछाइत पान, मखान, सुपारी, फूल आ चानीक चेन हाथपर रखली। फेर पानिसँ हाथ धोइ देली। ई क्रिया भगवंती दाय तीन बेर केली। पछाइत भैयाकेँ हाथ पकैड़ उठौली। ऐ तरहेँ भरदुतियाक विधि पूरा केली।

ललनजी बजला-

"जँ खेनाइ बनि गेलौ तँ खेनाइ खुआ दे पछाइत गपो-सप्प करब आ अरामो करब।"

भगवंती दाय ओसारापर एकटा बोरा तइ ऊपरमे एकटा जाजीम चपूत कऽ आसन लगौली। एक लोटा जल आ एकटा गिलास रखि भैयासँ खेनाइ खाइले बैसए कहली। ललन आसनपर बैसला तँ बहिन थारीमे भात आ कटोरीमे रेबा माछक तीमन आगाँमे देली। माछक तीमन देख ललन पुछलकैन-

"माछक तीमन देखै छियौ!"

तैपर बहिन कहलकैन-

"काल्हिये रेलबे पूल लगक हाटपर कीनलौं। सोचलौं जे बड़का भैया तँ एबे करता आ डॉक्टर बौआ निर्मलीमे छैथ तँ ओहो औता। विनीतकेँ रेबा माछ बड़ पसिन छइ।"

ललन बजला-

"डॉक्टर तँ धमौरा चल गेलौ। हम फोन केने रहिऐ तँ कहने रहए जे हम धमौरा चल जाएब। पाहुन आ बहिन सुनीता पटनासँ गाम एला

हेन।"

तैपर भगवंती दाय बजली-

"हँ यौ भैया। छुच्छाकेँ के पुच्छा। सुनीताक बर इंजीनियर छथिन तँ डॉक्टर बौआ भरदुतियामे नौत पुरए धमौरा गेलखिन, मुदा हम गरीब छी तँए एतेक लगमे रहलाक बादो हमरा ओतए नै एला!"

ई कहि भगवंती दाय हबोडकार भऽ कानए लगली।

ललन बजला-

"जुनि कान बहिन। हम एलियौ ने, आ हम जाबे धरि जीब आ थेहगर रहब, जरूर अबैत-जाइत रहबौ।"

भगवंती दाय-

"नै यौ भैया। हम बड़ जतनसँ विनीत-ले खेनाइक ओरियान कऽ कऽ रखने रही। देखै छिऐ कुर्सी, अपन कुर्सी टुटि गेल अछि तँए टेन्टबलासँ दुनू कुर्सी आनि कऽ रखने रही जे डाक्टर बौआ आउत तँ बैसत।"

ललन-

"अच्छा जो पहिने खेनाइ खा ले ग।"

भगवंती दाय-

"अखन मन नै अछि खाइक, पछाइत खा लेब।"

ललन-

"तों बेकार डाक्टर बौआ ले चिन्ता करै छें। हम कहै छियौ जो पहिने खा ले ग। पछाइत दुनू भाए-बहिन गप-सप्प करब।"

भगवंती दाय-

"ठीक छै भैया, हम खा कऽ अबै छी। ताबे अहाँ लोट-पोट करू तब दुनू भाए-बहिन गप करब।"

ललन-

“गै बहिन, एकटा बात तँ पुछबे ने केलियौ।”

भगवंती दाय-

“कोन बात भैया?”

ललन-

“हम अपन भागिन- विवेककेँ नै देखै छियौ। पटनासँ नै एलौं हेन की?”

भगवंती दाय-

“हँ हौ भैया, विवेक दियेबती दिन आएल। आइ ओ भरदुतियाक नौत पुरए वसन्तपुर रीता ओतए गेल हेन। काल्हि आपस आओत।”

ललन-

“की हाल-चाल छौ रीताक? ओकर बेटा-बेटी नीके छै किने?”

भगवंती दाय-

“हँ, तोरा सबहक पैरे-घरमे सभ ठीक अछि। रीताक दुल्होक बहाली हाइ स्कूलमे भऽ गेल हेन।”

ललन-

“बड़ सुन्दर। बड़का खुश खबरी सुनेलँए। अच्छा पाहुनक दिल्लीमे की हाल-चाल छैन। ढौआ-कौड़ी भेजलखुन हेन किने।”

भगवंती दाय-

“हँ जेतेक हमरा आवश्यकता रहैत अछि ओतेक तँ भेजीए दइ छथिन। विवेकक पढ़ाइमे दस हजार टका देमए पड़ै छइ।”

ललन-

“हँ गइ बहिन, पढ़ाइ की आब आजी-गुजीक खेल रहल। पटनामे

सभ पढ़ा लेत। निर्मलीमे तँ लोक पढ़ाइये ने सकैत अछि आ पटना तँ पटना छी, राजधानी। बौआ विवेक तँ मेडिकलक तैयारी करै छौ ने?”

भगवंती दाय-

“हँ भैया। देखहक भगवान की करै छथिन।”

ललन-

“नीक्के करथिन भगवान। तों केकरो अधला केलहीन जे भगवान तोहर अधला करथुन। अच्छा जो पहिने खा आ ग। गप-सप्प पछाइतो हेतइ।”

भगवंती दाय खाइले चल गेली। ललनजी सोचए लगला, भगवानोक लीला अजीव छैन। की दिन रहै भगवंती दाइयक। जली-भदइ आ मकैक ढेरी लगल रहै छेलइ। दू-दू साए मन मकइ आ डेढ़-साए सबा साए मन भदइ आ तैपर सँ पचासो मन मरूआ होइ छेलइ। दू-दू लाख टकाक पटुआ बेचै छला भगवंती दायक ससुर। मुदा कोसीक मारल आइ हमर बहनोइ तीनू भाँइ दिल्ली ओगरने छैथ। केतेक बड़का दलान छेलैन रायजीकेँ। भगवंती दाइक ससुरकेँ परोपट्टाक लोक राजजी कहै छेलैन। आइ दलानक जगह सोकबामे पर-पाहुन सुतै-बैसै छैन। भगवंती दाइक दूटा दीअर नेपालमे अमरबा गाममे बसि गेल छथिन। बेचारे सभ की करितए। कोसी कातक घराड़ीक कोनो ठीक रहै छइ! भगवंती दाइक ई चारिम घराड़ी छी। मुदा आब ठीक छइ। एन.एच. 57 आ रेलबेक पुल भेलासँ आब कोसीक खतरा नै रहलै। कहुना कऽ विवेक (भागीन) पढ़ि-लिख लेत आ दूटा पाइ कमाबए लगत तँ निर्मलीए-मे जमीन कीनि ओतइ घर बना लेत...।

फेर ललनजीक धियान छोट भाए- डॉ. विनीतपर गेलैन। कहू तँ एहनो होइ! सहोदर बहिनकेँ छोड़ि पिसीयौत बहिन ओतए भरदुतियाक नौत पुरए गेल हेन। जेबो किएक ने करत, सुनीताक दुल्हा जे इंजीनियर

छथिन आ पटनोमे घर बनौने छथिन, खूब पाइ कमाबै छथिन। मुदा विनीत बिसैर गेल जे पटनामे जखन डाक्टरी पढ़ैत रहए तखन जे भगवंती दाय ओतए बेंगा आबए तँ भगवंती दाय हजार-पाँच साए टका दइ छेलइ। पाहुनो दू-चारि साए भीने दइ छेलखिन। ई सोचैत-सोचैत ललनजीकेँ नीन आबि गेलैन ओ सुति रहला।

लकधक चारि बजे बहिन आबि कहलकैन-

"भैया, उठह ने। हाथ-मुँह धो लाए ताबे हम चाह बनौने अबै छी। पानि नेने अबै छियह उठह।"

ई कहि भगवंती दाय एक बाल्टीन पानि आ एकटा लोटा रखि कऽ चाह बनबए चलि गेली।

ललनजी उठि कऽ हाथ-मुँह-कान धो कऽ भरि छाँक जल पीलैन। ताबेमे बहिन चाहो नेने एली। दुनू सहोदर चाहो पीबए आ गपो करए। ललनजी बजला-

"गइ बहिन, डॉ. विनीतक आदत खराप भऽ गेलौ हेन।"

भगवंती दाय बजली-

"से की भैया? नै बुझलियअ कनी फरिछा कऽ कहह ने।"

ललनजी-

"सुनै छिऐ डॉ. विनीत पान-पराग आ रजनीगंधाक बीस-बीस पुड़िया भरि दिनमे खा लइए।"

भगवंती दाय-

"बाप रे! बीस-बीस पुड़िया। सुनै छिऐ शरीरकेँ बड़ हानि पहुँचाबै छइ।"

ललनजी-

"हानि की हानि जकाँ। ई गुटखा बेसी खेलासँ रंग-रंगक बेमारी

होइत अछि। हर्ट आ किडनीक बेमारी तँ होइते अछि जे कैंसर सनक जानलेबा बेमारी सेहो होइत अछि।”

भगवंती दाय-

“कनियाँ नै मना करै छइ?”

ललनजी-

“एहनो केतौ मना नै करैत होइ।”

भगवंती दाय-

“अच्छा रूकऽ छठिक बाद हम निर्मली जा कऽ विनीतसँ बात करब। ओकरा अपना लगा कऽ सप्पत देब। कहुना कऽ ई गुटखा खेनाइ छोड़ाएब।”

ललन-

“ठीक छै, एकबेर परियास करही। भगवान करथुन तोहर बात मानि जाउ।”

छठिक पाँचम दिन भगवंती दाय निर्मली अस्पताल पहुँचली। ओतए एकटा महिला कर्मचारीसँ विनीतक विषयमे पुछलखिन तँ ओ महिला कर्मचारी कहलकैन-

“डॉ. विनीत बाबू बेराम छथिन। पाँच दिनसँ अस्पताल नै अबै छथिन। अपन इलाज कराबए लेल इन्दिरा गाँधी आयुर्विज्ञान संस्थान पटना गेल छला। पता चलल हेँ जे रातिमे पटनासँ एला हेन।”

भगवंती दाय कहलखिन-

“हम डॉ. विनीतक बहिन छिऐ। हमरा डॉ. विनीतक डेरा नै देखल अछि तँए कनी अहाँ हमरा डॉ. विनीतक डेरापर पहुँचा दिअ।”

ओ महिला कर्मचारी भगवंती दायकेँ डॉ. विनीतक डेरापर पहुँचा देलकैन।

जखन भगवंती दाय डॉ. विनीतक डेरापर पहुँचली तँ डॉ. विनीत बेडपर अराम करै छला। हुनकर पत्नी आ सार एकटा कोठरीमे बैस कऽ किछु विचार कए रहल छला। भगवंती दाय पहुँचली तँ विनीतक पत्नी गोड़ लगलकैन। भगवंती दाय असिरवाद दैत पुछलखिन-

“बौआ केतए अछि?”

तैपर विनीतक पत्नी गीता कहलकैन-

“ओ अराम कऽ रहला हेन। डॉक्टर अराम करैले कहलकैन अछि।”

भगवंती दाय बजली-

“हमरा बौआकेँ देखा दिअ। पहिने एक नजैर बौआकेँ देख लेब पछाइत अहाँसँ गप-सप्प करब।”

गीता भगवंती दायकेँ लऽ कऽ विनीतक बेडरूममे पहुँचली। विनीत बेडपर सुतल छला। एकदम दुब्बर-पातर शरीर। चेहरापर पीलापन। आँखि धसल...।

विनीतक हालत देख भगवंती दाय कानए लगली। गीता हिनका दोसर कोठरीमे लऽ गेली। एकटा कुर्सीपर बैसा कऽ गीता बजली-

“बैसू दैया, हम चाह बनौने अबै छी।”

तैपर भगवंती दाय बजली-

“छोड़ू चाह-ताहकेँ, पहिने हमरा लगमे बैसू आ जे पुछै छी तेकर जवाब दिअ।”

गीता दोसर कुर्सीपर बैस गेली आ बजली-

“कहू की कहै छी?”

भगवंती दाय-

“सुनलू हेन बौआक इलाज वास्ते पटना गेल रहिऐ। की कहलक

पटनामे डॉक्टर?”

गीता-

“पटनामे इन्दिरा गाँधी अस्पतालमे सभ जाँच भेल हेन। ओतए डॉक्टर कहलैन जे किडनी फेल भऽ गेल छैन। एक सप्ताहक भीतर दोसर किडनी लगबए कहलकैन हेन। मुदा दोसर किडनी आऊत केतए-सँ। जखन अहाँ डेरापर पहुँचलौं तखन हम आ हमर भैया अही बातक विचार करै छेलौं।”

भगवंती दाय-

“दोसर किडनी अस्पतालमे नै रहै छइ?”

गीता-

“नै अस्पतालमे केतए-सँ दोसर किडनी आऊत। हँ जँ कियो मरै बेरमे अपन किडनी अस्पतालकेँ दान कऽ देलक तखन किडनी रहै छइ। नै तँ नै रहै छइ।”

भगवंती दाय-

“जँ अस्पतालमे किडनी नै भेटत तखन की करबै। कोन उपाय करबै।”

गीता-

“शहीद ट्रेनमे तीनटा टिकट बुक करेलौं हेन। परसू आठ बजे भोरमे दरभंगासँ ट्रेन खुजत। तँए हम सभ काल्हिये साँझमे दरभंगा पहुँचब। ओतए कोनो रेस्ट हाउसमे रूकब आ परसू ट्रेन पकैड़ दिल्ली जाएब। दिल्लीमे एम्समे अहाँ भायकेँ भरती करा किडनीक बेवस्थाक परियास करब। हम तँ अपने किडनी दऽ दइतिऐ मुदा हमरा चीनीक बेमारी अछि, दोसर हमर खूनक ग्रूप अहाँक भाइक खूनक ग्रूपसँ अलग अछि।”

भगवंती दाय-

“अहाँ अपन किडनी दऽ देबै तँ अहाँक शरीरमे कोन किडनी रहत। फेर अहाँ केना जिन्दा रहबै।”

गीता-

“मनुखक शरीरमे दूटा किडनी रहै छइ। एकोटा किडनीपर लोक जिन्दा रहि सकैत अछि।”

भगवंती दाय-

“बौआक दुनू किडनी खराप भऽ गेल हेन?”

गीता-

“हँ, अहाँ भाइक दुनू किडनी फेल भऽ गेल छैन।”

भगवंती दाय-

“हमरो दिल्ली नेने चलू। जँ एकोटा किडनीपर लोक जिन्दा रहि सकैत अछि तँ हम अपन किडनी देबइ।”

गीता-

“अहाँक खूनक जाँच हएत। जँ डाक्टर कहत जे अहाँक किडनी काज करत तखन अहाँक किडनी अहाँक शरीरसँ निकालत आ तुरंते अहाँक भाइक शरीरमे लगाओत। एकरा किडनी प्रत्यारोपन कहै छइ।”

भगवंती दाय-

“की कहै छै से हम नै बुझै छिऐ, आ ने बुझह चाहै छी, हमरा अतबे अछि जे हमर बौआ नीक्के भऽ जाए।”

गीता-

“भगवानक मर्जी।”

भगवंती दाय-

“ठीक छै, हम अखन गाम जाइ छी। गाम परहक सभ गर लगा कािल्ह बारह बजे निर्मली अबै छी फेर संगे दिल्ली जाएब।”

गीता-

“ठीक छै। खेनाइ खा लिअ। भैया अहाँकेँ मोटरसाइकिलसँ बेंगा छोड़ि देत।”

भगवंती दाय-

“हम टेम्पूए-सँ चलि जाएब। भैयाकेँ दोसर काज करैले कहबै।”

गीता-

“हँ से तँ पाइ-कौड़ीक ओरियान करए पड़तै। कमतीमे पाँच लाख टका चाही। अखन तीनियेँ लाख टकाक ओरियान भेलै हेन।”

भगवंती दाय-

“दिल्लीमे तँ मझिला भैया सेहो छथिन। हमरो दुनू दीअर आ विवेकक बाबूजी सेहो छथिन। किछु पाइक कमी रहतै तँ ओहो सभ जोगार कऽ देथिन किने।”

गीता-

“से तँ मैझला भैया कहलखिन हेन जे पाइ-कौड़ीक चिन्ता नै कर। जेतेक जल्दी हइ छौ आबि जो।”

दिल्लीमे भगवंती दाइक खूनक जाँच भेल। डॉक्टर कहलखिन जे हिनकर किडनी उपयुक्त अछि आ प्रत्यारोपन कएल जा सकैत अछि। पहिने तँ भगवंती दाइक दुल्हा अपन पत्नीक किडनी दइसँ रोकलखिन मुदा भगवंती दाइक जिद्दक आगाँ हुनका झूकए पड़लैन।

भगवंती दाइक शरीरसँ किडनी निकालि डॉ. विनीतक शरीरमे पत्यारोपन कएल गेल। एक मास डॉ. विनीत एम्समे भर्ती रहल मुदा ने सुनीता आ ने ओकर दुल्हा इंजीनियरे साहैब कहियो देखए दिल्ली गेला।

खाली फोनेपर सभ गप्प बुझैत रहला। डॉ. विनीतक पत्नी गीता एक दिन फोनपर सुनीताकेँ कहलखिन-

"दैया, किछु पाइ-कौड़ी हुअए तँ पठा दियअ। पचास हजार टका घटि रहल अछि।"

तैपर सुनीता कहलकैन-

"हम पटनामे मकानक ऊपर चारिटा कोठरी बना रहल छी तँए हमरा अखन पाइक अभाव अछि।"

भगवंती दाय अपन माझिल भैया पवनक डेरापर ए मास रहली। ओतए दवाइ आ पथ-पानि केली। दू मासपर गाम एली। डॉ. विनीतो स्वस्थ भऽ गेला। तीन मासक बाद ओ पुन: अस्पतालमे काज करए लगला।

आइ भरदुतिया छी। भगवंती दाय स्नान कऽ आँगन आएले छेली कि मोटर गाड़ीक हॉरनक अवाज सुनि डेढ़ियापर एली। एकटा स्कारपिओ गाड़ी रूकल आ ओइ गाड़ीसँ डॉ. विनीत उतरला। डॉ. विनीत बहिनक पैरपर गोड़ लगलकैन।

भगवंती दाय बजली-

"पहिने जे खबैर केने रहितहक तँ रेबा माछ कीनि कऽ कर लगा रखने रहितिअ ने। तों तँ अखन पुर्णियामे छह जे दूर छइ। हम कियाँने गेलिऐ जे हमर बौआ आइ नौत पुरए हमरा अएत आऊत।"

तैपर डॉ. विनीत बजला-

"बहिन हम माछ-माँस सभ छोड़ि देलियौ। चल जल्दीसँ नौत ले आ जे किछु बनल छौ खुआ। अखन धरि भूखले छी। पेटमे बिलाइ कुदैए।"

भगवंती दाय डॉ. विनीतकेँ नौत लऽ खेनाइ खुऔलखिन। खेनाइक बाद पुछलखिन-

"बौआ, पान केहेन खाइ छहक, मीठा आकि जर्दा?"

तैपर डॉ. विनीत पुछलखिन-

"केतए-सँ पान अनबिहीन?"

भगवंती दाय बजली-

"कनिक्के दूरपर एकटा चाह-पानक दोकान अछि। केकरो पठा कऽ मंगा लेब।"

डॉ. विनीत बजला-

"बहिन, हम पान-सुपारी, गुटखा सभ छोड़ि देलियौ। तोहर देल किडनीपर जिन्दा छियौ। तँए शरीरक लेल जे वस्तु हानि करत तेकर त्याग कऽ देलौं।"

ई सुनि भगवंती दाइक आँखिसँ दहो-बहो नोर जाए लगलैन...।

❑

शब्द संख्या : 3023



नन्द विलास राय

लेखक परिचय-

नाम- नन्द विलास राय
राष्ट्रीयता- भारतीय
जन्म तिथि : 2 जनवरी 1957
माता : स्व. दुर्गा देवी, श्रीमती परमेश्वरी देवी
पिता : स्व. बच्चा राय
पत्नी : श्रीमती उषा देवी

पैत्रिक गाम : भपटियाही (नरहिया) जिला- मधुबनी
मातृक गाम : निर्भापुर (रामपट्टी) जिला- मधुबनी

शैक्षणिक योग्यता : स्नातक(गणित)मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।
शैक्षणिक योग्यता : आई.टी. आई. (टर्नर)
जीविकोपार्जन : कृषि।

वर्त्तमान पता : ग्राम+पोस्ट- भपटियाही, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी, (बिहार), पिन- 847108

कृति : 1. सखारी-पेटारी (लघु कथा संग्रह), 2. छठिक डाला (कविता संग्रह) 3. बहिनपा (एकांकी संचयन), 4. मरजादक भोज (लघु कथा संग्रह), 5. हमर चारू धाम (काव्य संग्रह)

अन्य : मिथिला-मैथिलीक प्रमुख कथा गोष्ठी- 'सगर राति दीप जरय'क 83म आयोजन तथा नियमित सहभागिता।

सम्पर्क : 9931909671

(उपरोक्त पोथी सबहक e-version videha.co.in परसँ डानलॉड कएल जा सकैए।)

₹ 250

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

9789388421836